हिमालय की वेदी पर

उपन्यासकार
यज्ञदत्त शर्मा

१९६३
साहित्य-प्रकाशन
मालीवाड़ा, दिल्ली

मूल्य : तीन रुपया पचास नए पैसे
प्रकाशक : साहित्य प्रकाशन, दिल्ली
मुद्रक : शुक्ला प्रिंटिंग एजेन्सी
द्वारा मैसकॉट क्वालिटी प्रिंटर्स, दिल्ली

उपन्यास से पूर्व

२० सितम्बर सन् १९६२ का दिन भारतीय इतिहास में ऐसा आया न केवल भारतीय जनता, वरन् सम्पूर्ण विश्व का मानव-समाज कभी भुला नहीं सकेगा। वह दिन वह था जब विश्वासघाती चीन ने भारत की सीमा पर आक्रमण करके मित्रता, मानवता और साम्यवाद की भावना को दूषित किया।

इस आक्रमण से विश्व का मानव-समाज स्तब्ध रह गया। विश्व-युद्ध के काले बादल वायुमंडल में मँडराते प्रतीत हुए। शांति और सद्भावना के विचारकों को गहरी ठेस लगी। वह ठेस न केवल भारत और पश्चिमी देशों के विचारकों को ही लगी, वरन् रूस जैसा साम्य-वादी देश भी उसे देखकर चकित रह गया।

इस आक्रमण का भारतीय जन-जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ा। सम्पूर्ण देश का जन-जीवन आत्मसम्मान पर चोट खाकर अपनी सभ्यता और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए कटिबद्ध होगया।

भारत के इस आपत्ति-काल में हमारे देश का लेखक-वर्ग सर्वप्रथम सामने आया और उसने प्रभावशाली साहित्य की रचना कर जन-जीवन में वीरता का प्राण फूंका।

उपन्यासकार श्री यज्ञदत्त शर्मा ने चीनी आक्रमण की समस्या का बहुत गम्भीरतापूर्वक अध्ययन किया और हिन्दी में सर्वप्रथम आपका उपन्यास, 'खून की हर बूंद' प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास का हर पात्र अपने रक्त की हर बूंद, भारत माता की रक्षा के लिए अर्पण करने को उद्यत ही नहीं, चढ़ाता भी है और साहस तथा वीरता के साथ शत्रु का सामना करता है। भारत की रक्षा के समक्ष वह अपने प्राणों का मोह त्याग कर युद्ध की धधकती हुई ज्वाला में कूद पड़ते है। इस उपन्यास का हिन्दी-जगत ने भव्य स्वागत किया।

श्री यज्ञदत्त शर्मा को केवल 'खून की हर बूँद' लिखकर ही शांति नहीं मिली। उनके मस्तिष्क में चीन का विश्वासघात चक्कर लगा रहा था। चीनी नेताओं के काले कारनामों ने उन्हें अशांत कर दिया था। आपने एक दूसरा उपन्यास, 'विश्वासघात' नाम से लिखा, जिसमें चीनी-विश्वासघात की समस्या को एक सुन्दर कहानी के रूप में प्रस्तुत किया। यह उपन्यास बहुत गम्भीर और रहस्योद्घातक है। चीन के विश्वासघात की कहानी इसमें सम्पूर्ण समस्याओं के विश्लेषण के साथ प्रस्तुत की गई है।

इस उपन्यास को लिखकर यज्ञदत्त शर्मा ने उससे आगे की समस्याओं पर विचार किया। ये समस्याएँ विशेष रूप से चीनी आक्रमण, उनके पीछे हटने और उससे बाद की पृष्ठभूमि पर आधारित हैं। जिन रहस्यों का उद्घाटन बहुत बाद में हुआ और कुछ का अभी तक हो भी नहीं पाया है, उनपर उपन्यासकार ने विचार किया और इस नवीन उपन्यास की रचना की।

कला की दृष्टि से यह उपन्यास आपके प्रथम दो उपन्यासों को बहुत पीछे छोड़ गया है। यह उपन्यास अपने ढंग की अनोखी वस्तु है।

श्री शर्मा ने इस समस्या पर तीन उपन्यासों की रचना कर, न केवल हिन्दी वरन् भारत-राष्ट्र की महत्वपूर्ण सेवा की है। जिस प्रकार इस घटना को भारत कभी नहीं भुला सकेगा उसी प्रकार आपकी इन रचनाओं का भी हिन्दी-साहित्य के इतिहास में अमिट स्थान रहेगा।

डा० सरनामसिंह

विश्वविद्यालय, जैपुर राजस्थान

हमारा निजी प्रकाशन

महल और मकान	यज्ञदत्त शर्मा	३·००
बदलती राहें	,,	३·००
मधु	,,	३·००
इंसाफ़	,,	३·००
झूनिया की शादी	,,	३·००
ललिता	,,	३·००
देवयानी	,,	२·५०
सब का साथी	,,	४·००
अपराधिनी	,,	५·००
बाप बेटी	,,	५·००
हिमालय की वेदी पर	,,	३·००
बसंती बुआजी	,,	५·००
परिवार	,,	६·००
चौथा रास्ता	,,	६·००
अंतिम चरण	,,	७·५०
दबदबा	,,	१०·००
रजनी गंधा	,,	२·५०
प्रकाश और छाया	विद्या स्वरूप वर्मा	२·२५
नवेली	हित वल्लभ गौतम	५·००
घरौंदा	डॉ० रांगेय राघव	८·००
कलयुग की महाप्रलय	विजय मेहता	२·००
पाप और प्रकाश	देवी प्रसाद 'धवन	२·५०
धरती के लाल	मिखइल सादोवीनू	२·००
पतिता	सॉमरसेट मॉम	५·००
मन के वन्धन	,,	५·००

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

—१—

अभी चार घंटे पूर्व जहाँ भारी तोपों और मार्टर-गनों से गोले बरसाए गए थे वह हिमालय की पर्वत-शृंखला इस समय नितान्त मौन थी। कहीं कोई शब्द सुनाई नहीं देरहा था।

भारतीय टुकडी के शेष जंवान बूनला चौकी के समक्ष चट्टान पर एकत्रित हो गए थे। चीनियों के इस आक्रमण को विफल करने में उनके दो सौ उनासी जवान खेत रहे थे। इस टुकड़ी में कुल चार सौ जवान थे।

दो घंटे की घमासान लड़ाई के पश्चात् यह शांति स्थापित हुई थी। चौकी के सामने और बगल की घाटियाँ चीनी सैनिकों के शवों से पटी पड़ी थीं। चीनी सेनिक अपने घायल जवानों को भी वहीं पर पड़े-पड़े दम तोड़ने के लिए छोड़कर भाग गए थे।

यह आक्रमण बहुत भयंकर था। चीनी सेना टिड्डी-दल के समान घिर कर आई थी और बूनला चौकी की चोटी पर खड़े होकर जहाँ तक भी दृष्टि जाती थी सेना-ही-सेना दिखाई पड़ती थी। चीनी सेना के पास भारी तोपें और मार्टर-गनें थीं जिन्होंने चौकी पर धुँआ-धार गोलों की वर्षा की थी। चौकी के पास एक छोटी हवाई पटरी थी, जिसपर उतर कर भारतीय हवाई जहाज चौकी-रक्षकों को उनकी आश्यकता का सामान पहुँचाते थे। चीनी तोपों और मार्टर-गनों की गोला-बारी ने इस हवाई पटरी को पूरी तरह से नाकाम कर दिया था।

बूनला चौकी पर अब केवल एक सौ इक्कीस जवान शेष बचे थे। ब्रिग्रेडियर धीरसिंह ने अपने जवानों को तुरन्त बूनला चौकी की पहाड़ी छोड़कर उसके पीछे वाली पर्वत-शृंखला पर चलने का आदेश दिया।

मेजर वीरसिंह अभी-अभी उस पग-डंडी का निरीक्षण करके लौटे थे, जिससे होकर पीछे की पर्वत-शृंखला पर पहुँचा जासकता था। उन्हीं के पीछे-पीछे भारतीय टुकड़ी के जवानों ने प्रस्थान किया।

बूनला-चौकी पर शेष कुछ भी नहीं बचा था। चीनी सेना के इस भयंकर आक्रमण को विफल करने में वहाँ का गोला-बारूद लगभग समाप्त होगया था। जो शेष बचा था उसे जवानों ने अपने साथ लेलिया।

वह पर्वत-शृंखला बहुत लम्बी थी और एक घाटी से होकर उस पर जाने का मार्ग था। वहाँ ठहरकर ब्रिग्रेडियर धीरसिंह ने स्थिति का निरीक्षण किया और अपनी टुकड़ी का मोर्चा जमाने का वही स्थान उन्हें अधिक उपयुक्त दिखाई दिया। उन्होंने अपने जवानों को वहीं ठहर जाने का आदेश दिया।

मेजर वीरसिंह पहले से ही उस स्थान को मोर्चे के लिए चुने गए थे। वह बोले, "सर ! मैंने भी यही स्थान मोर्चा लगाने के लिए चुना था।"

"तो फिर घाटी के दोनों ओर की ऊँची चोटियों पर जवानों को उचित स्थानों पर बिठला दो। मुझे भी यह स्थान उपयुक्त प्रतीत होता है।"

आकाश में चन्द्रमा निकल आया था। चन्द्रिका हिमाच्छादित पर्वत-शृंखला पर बिछगई थी। उस धीमे प्रकाश में उनकी दृष्टि भारतीय टुकड़ी के उन जवानों पर पड़ी जो चिर निद्रा में सोगए थे। फिर उन्होंने उन चीनी हत्यारों की ओर देखा जिनमें अनेकों तड़प-तड़प कर प्राण देरहे थे। उनके होंठ फड़फड़ाए और वह अपने जवानों के शवों की ओर देखकर धीरे से बोले, "तुम धन्य हो, भारत माता के सपूतो ! तुमने अपना कर्त्तव्य पालन करके अपना जीवन सुफल किया। भारतीय-सीमा की सुरक्षार्थ इस महान् यज्ञ में तुमने अपने आपको आहूत कर जो ज्वाला प्रज्वलित की है वह उस समय तक शांत नहीं होगी जब तक

एक-एक चीनी आक्रमणकारी को इसकी लपटों के हवाले नहीं कर दिया जाएगा।"

ब्रिग्रेडियर धीरसिंह के सीने में उभार आगया। उनकी भुजाएँ फड़क उठीं। वह चीनी आक्रमणकारियों पर टूट पड़ने के लिए उतावले होउठे।

वह मौन थे। उनकी दृष्टि आकाश में मुस्कराते हुए चन्द्रमा पर टिकी थी। वे शीतल थीं, परन्तु उनके बदन में ज्वाला प्रज्वलित कर रही थीं।

चन्द्रमा की ओर देखते-देखते उनके नेत्रों के समक्ष उनकी पत्नी शीलकुमारी की वह स्निग्ध आभा उतर आई जिसके उन्होंने अभी कुछ ही सप्ताह पूर्व अपनी विदाई के समय दर्शन किए थे। शीलकुमारी के नेत्र सजल थे। हृदय में विछोह, संकट और भय की भयंकर आँधी उठ रही थी।

ब्रिग्रेडियर धीरसिंह ने थोड़ा आगे बढ़कर शीलकुमारी के दोनों कंधों पर हाथ रखकर उन्हें स्नेह और साहस प्रदान करते हुए कहा था, 'भारत की वीर रमणी शीलकुमारी! तुम उन्हीं भारतीय देवियों की साकार प्रतिमा हो जो अपने पतियों को शत्रुओं से मातृभूमि की रक्षा के लिए शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित करके भेजा करती थीं। ऐसी वीर भारतीय देवियाँ सर्वदा भारतीय वीरों की प्रेरणा-स्रोत रही हैं। इन रमणियों ने भारत के वीरों को आत्म-बल प्रदान किया है।'

इनके ये शब्द सुनकर शीलकुमारी ने अपने आँचल से नेत्र पोंछकर इनका तिलक किया था और मर्मस्पर्शी शब्दों में कहा था, 'जननी जन्म-भूमि! मैं अपनी माँग सिंदूर आपके चरणों का महावर बनाकर अर्पित करती हूँ। अपना सुहाग आपके सम्मान की वेदी पर चढ़ा रही हूँ। मेरी यह अन्यतम भेंट स्वीकार करना माँ!'

ब्रिग्रेडियर धीरसिंह के नेत्र डबडबा आए थे उस समय। उन्होंने एक बार, अंतिम बार, अपनी पत्नी की ओर देखकर स्नेह भरे स्वर में कहा

था, 'शीलकुमारी ! माता ने तुम्हारी भेंट स्वीकार करली। तुम्हारी माँग की रोली निश्चित रूप से माता के चरणों का महावर बनेगी। तुम धन्य हो शीलकुमारी !'

वे शब्द ब्रिग्रेडियर धीरसिंह के मुख से निकले ही थे कि तभी मेजर वीरसिंह उन्हें तीव्र गति से विना कुछ बोले हाथ पकड़कर एक ओर ले गए। उन्हें वहाँ से हटे कठिनाई से दो मिनट व्यतीत हुए होंगे कि ठीक उसी स्थान पर दन-दन करके तोप के गोलों की वर्षा होने लगी। पर्वत-शृंखला का सम्पूर्ण वायु-मण्डल गोलों की गड़गड़ाहट और भयंकर शब्द से भर गया। समस्त वायु-मण्डल चीत्कार करउठा।

भारी तोपों के गोले बरसाती हुई चीन की अथाह सेना उस पर्वत-शृंखला की ओर बढ़ती आरही थी, जिस पर केवल अपने प्राणों को हथेली पर रखे ये भारती जवान खड़े थे।

बचाव का कोई साधन नहीं था। इस भयंकर आक्रमण को विफल करने के लिए युद्ध-सामग्री शेष होचुकी थी। पीछे से सहायता मिलने की कोई सम्भावना नहीं थी। चौकी की हवाई पटरी पहले ही आक्रमण में समाप्त होचुकी थी।

तभी मेजर वीरसिंह ने ब्रिगेडियर धीरसिंह का ध्यान आकाश में उड़ने वाले तीन हेलीकाप्टरों की ओर दिलाते हुए कहा, "हमारे जहाज हैं।"

ब्रिगेडियर धीरसिंह लम्बा निश्वास छोड़कर बोले, "हैं तो हमारे ही, परन्तु उतरें कैसे पायेंगे ? पटरी एकदम नाकारा होचुकी है। अन्य कोई स्थान जहाजों के उतरने के लिए नहीं है।"

तीनों जहाज चार बार नीचे आ-आकर ऊपर उड़ गए।

पाँचवीं बार मेजर वीरसिंह और ब्रिगेडियर धीरसिंह ने देखा कि वे उनके बिलकुल निकट आगए। उन्होंने आठ-दस पेटियाँ नीचे गिराई और वे फिर आकाश में उड़गए।

ब्रिगेडियर धीरसिंह ने मेजर वीरसिंह से कहा, "इनमें युद्ध-

सामग्री हुई तो सम्भव है कि हम चीनियों के इस आक्रमण का भी मुँह-तोड़ उत्तर दे सकें ।"

मेजर वीरसिंह ने अपने जवानों को साथ लेकर आनन-फ़ानन में पेटियों को तुड़वा डाला । उन्हें खोला तो देखा कि उनमें आटोमेटिक रायफ़लें थीं और गोलियों की कोई कमी नहीं थी । इस सेनिक-सहायता ने भारतीय जवानों के हौसलों बहुत बढ़ा दिए । एक सौ इक्कीस के एक स इक्कीस जवानों ने रायफ़लें अपने हाथों में सँभाललीं और गोलियाँ भरकर शत्रु के निकट आने की प्रतिक्षा करने लगे ।

मेजर वीरसिंह ने आटोमेटिक रायफल हाथ में लीं और उससे घाटी के मुहाने पर गोलियाँ दागकर देखीं, तो उसकी चाल देखकर उसकी आत्मा प्रसन्न होगई । वह उत्साहपूर्ण स्वर में बोले, "सर ! आज आप अपने जवानों का जौहर देखना । चीनी सेना के एक-एक सेनिक को हमने हिमालय की घाटियों में घूमने वाले जानवरों का भोजन न बना दिया तो हमारा नाम नहीं ।"

ब्रिगेडियर धीरसिंह का हृदय मेजर वीरसिंह की साहसपूर्ण बात सुनकर उभार खागया । उन्होंने मन-ही-मन अपने वायुयान-चालकों की कुशलता की दाद दी ।

रात्रि के लगभग दो बजे चीनी सेना पर्वत-शृङ्खला की तरैटी में आ पहुँची । चीनी सेना बूनला चौकी की पहाड़ी पर चारों ओर छाकर ज्यों ही पगडंडी से नीचे उतरनी आरम्भ हुई त्यों ही भारतीय जवानों की एक सौ इकतीस रायफ़लें, 'भारत माता की जै' नाद के साथ उन पर बरस पड़ीं । चीनी सेनिकों पर गोलियों की ऐसी धुँआर वर्षा हुई कि उनके आगे बढ़ते हुए कदम रुक गए ।

चीनी सेना-नायक ने भारतीय टुकड़ी पर यह आक्रण बहुत तीव्र गति से किया था । उन्हें स्वप्न में भी यह सम्भावना नहीं थी कि भारतीय जवानों को इस बीच पीछे से कोई सहायता मिल सकेगी । भारतीय

हवाई पटरी का विध्वंस कर वे इस दिशा में निश्चिन्त होचुके थे

ब्रिगेडियर धीरसिंह ने देखा कि चीनी सेना न केवल सामने बूनला चौकी की पहाड़ी पर ही चढ़ी थी, वरन पहाड़ी के दाँई ओर बाँई ओर से भी वह घाटी में घुस आई थी। वह सेना तीव्र गति के साथ घाटी की ओर बढ़ रही थी।

उन्होंने मेजर वीरसिंह के पास जाकर कहा, "मेजर वीरसिंह ! सामने वाली पगडंडी पर गोलियाँ चलाने के लिए केवल बीस जवान को छोड़कर शेष को दो भागों में विभक्त करदो। इनमें से पचास जवान घाटी के दाँई ओर और पचास बाँई ओर गोलियाँ बरसायें। चीनी सेना दोनों ओर बहुत निकट आचुकी है।"

"मैंने देख लिया है सर ! हमारे पचास जवान बाँई ओर की चोटी पर चढ़ चुके हैं और पचास दाँई ओर गए हैं। आप निश्चिन्त रहें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम लोग चीनियों के इस आक्रमण को विफल करने में सफल होंगे।"

देखते-ही-देखते भारतीय जवानों की रायफलें उत्तर, पूर्व और पश्चिम तीनों दिशाओं में गोलियाँ बरसाने लगीं। चीनी सेना के जो जवान घाटी में उतर कर आए थे वे सब वहीं पर बिछ गए। सामने चौकी पर फैली चीनी सेनाओं में भगदड़ मच गई। उनके पैर उखड़ गए।

बूनला चौकी पर चीनी सेना का यह दूसरा भयंकर आक्रमण था। इनसे पूर्व भी उनके पाँच आक्रमण विफल किए जा चुके थे, परन्तु वे इतने भयंकर और विशाल नहीं थे। उनमें तोपखाने और मार्टर-गनों का प्रयोग नहीं किया गया था।

चीनी सेना-नायक ने अपनी सेना के पैर जमाने और उसे उत्साहित करने का लाख प्रयास किया, परन्तु वह उसे रोक न सका। भारतीय जवानों की गोलियों की बौछार ने उनके हौसले पस्त कर दिए। उनका साहस छूट गया। हताश सेना-नायक को वापस लौटना पड़ा।

भारतीय जवानों ने एक बार आगे बढ़कर 'भारत माता की जै' का ज़ोरदार नारा लगाया और भागते हुए चीनियों पर धुँआँधार गोलियों की वर्षा करते हुए वे बूनलां चौकी पर जापहुँचे। 'भारत माता की जै' के नारों से उन्होंने वहाँ के सम्पूर्ण वायुमंडल को गुँजा दिया।

इस भयंकर आक्रमण को विफल करने में एक भी भारतीय जवान काम में नहीं आया। एक सौ इक्कीस जवानों में से एक सौ इक्कीस-के-एक सौ इक्कीस जीवित थे।

आक्रमण को विफल कर भारतीय जवानों ने जहाज़ों से गिराई गई शेष पेटियाँ भी तोड़ डालीं; जिनमें भोजन-सामग्री भरी थी। सब ने फ़िर आनन्द पूर्वक भोजन किया और नए आक्रमण का सामना करने के लिए उद्यत होगए।

शीलकुमारी अपनी छोटी ननद राजरानी के विद्यालय से लौटने की प्रतीक्षा में थीं। आज कुछ विलम्ब होगया था उसे लौटने में, इसीसे वह कुछ चिन्तित-सी होउठी थीं।

विद्यालय की छुट्टी चार बजे होजाती थी और इस समय छः बज चुके थे। वह कोठी के बरांडे में बैठी थीं, परन्तु उनकी दृष्टि सामने सड़क पर थी।

तभी उन्होंने दूर से राजरानी को आते देखा। उन्हें तनिक संतोष हुआ।

राजरानी बरांडे में आई तो वह झूठा क्रोध प्रदर्शित करते हुए बोलीं, "राज! क्या अपने भय्या की अनुपस्थिति में तुम मुझे इतना परेशान करोगी? तनिक देखो तो घड़ी में क्या बजा है?"

राजरानी ने अपनी कलाई पर बँधी घड़ी पर दृष्टि डाली तो सवा छः बजे थे। वह तनिक सकपकाई, तुरन्त ही जैसे उसे कुछ याद आगया। वह जल्दी से कमरे में प्रवेश करती हुई बोली, "भाभीजी तनिक अन्दर तो आइए। आपकी बात का उत्तर भी मैं अभी देती हूँ।" उसने रेडियो खोल दिया।

सवा छः बजे रेडियो पर समाचार प्रसारित हुआ, "कल रात्रि के दो बजे चीनी सेना ने बूनला चौकी पर सातवीं बार आक्रमण किया। चीन ने अपनी तीन डिवीजन सेना इस आक्रमण में झोंक दी। इस सेना के पास भारी तोपखाना और मार्टर-गनें थीं। भारतीय चौकी पर ब्रिग्रेडियर धीरसिंह और मेजर वीरसिंह के नायकत्व में केवल एक सौ इक्कीस जवान थे। ब्रिग्रेडियर धीरसिंह ने चीनी सेना के इस भयंकर

आक्रमण को बहुत बहादुरी के साथ विफल किया। शानदार बात यह रही कि इस भयंकर युद्ध में एक भी भारतीय सैनिक हताहत नहीं हुआ।"

यह समाचार सुनकर राजरानी ने रेडियो बन्द कर दिया और फिर अपनी भाभी के पास सोफे पर बैठकर बोली, "आपको यह समाचार सुनाने के लिए ही मैं इतनी तीव्र गति से लपकी चली आरही थी भाभी जी! आपने देखा नहीं मुझे कितना साँस चढ़ रहा था। अब आपको देरी से लौटने का कारण बताती हूँ।"

शीलकुमारी मुस्कराकर बोलीं, "हाँ, वह भी बताओ। देख रही हूँ इधर तुम बातें मिलाने में बहुत दक्ष होती जारही हो।"

"और काम करने में नहीं? क्यों भाभीजी? आप मेरी बहिनजी से तनिक पूछना कि मैं कितना काम करती हूँ।"

"कौन-सी बहिनजी से?"

"बहिन सुभद्रादेवी से। वही तो मुख्य अध्यापिका हैं हमारे विद्यालय की। उन्होंने अभी-अभी एक 'महिला रक्षा-केन्द्र' की स्थापना की है। उसी के काम में तो मुझे इतनी देर होगई। एक पूरा रजिस्टर भरकर आरही हूँ।"

"'महिला रक्षा-केन्द्र' में क्या होता है राजरानी?" उत्कंठा वश शीलकुमारी ने पूछा।

"उसमें जवानों के लिए जर्सियाँ और मौजे बुने जाते हैं। अभी-अभी आपने रेडियो पर भय्या के साथ जिन मेजर वीरसिंह का नाम सुना, वह हमारी बहिनजी के सुपुत्र हैं।"

यह सुनकर शीलकुमारी के मन में सुभद्रादेवी से भेंट करने की उत्कट इच्छा जाग्रत होउठी। जबसे ब्रिगेडियर धीरसिंह मोर्चे पर गए थे, तबसे शीलकुमारी का मन वैसे ही कुछ खिन्न-सा रहता था और फिर करने के लिए कोई काम न होने से हर समय युद्ध की भयानक स्थिति

पर विचार करते रहने के अतिरिक्त और कोई बात ही नहीं सूझती थी।

उनके मन में भी कई बार कोई ऐसा कार्य करने की बात आई थी कि जिससे वह देश के रक्षा-कार्यों में उपयोगी बन सकें, परन्तु क्या करतीं, यह समझ में न आता था। आज राजरानी से सुभद्रादेवी के 'महिला रक्षा-केन्द्र' की बात सुनकर उन्हें दिशा-दर्शन मिला। वह राजरानी से बोलीं, "राज ! कभी-कभी मैं घण्टों सोचती रहती हूं कि तुम्हारे भय्या भारत माता की रक्षा के लिए शत्रु की गोलियों के समक्षसीना ताने खड़े हैं और मैं राष्ट्र के इस महान् यज्ञ में किसी भी प्रकार की कोई आहुति नहीं दे पा रही।

मुझे तुम्हारी बहिनजी का कार्य बहुत पसन्द आया। आज इस संकट-काल में उन्होंने जिस ठोस कार्य-क्रम की रूप रेखा प्रस्तुत की है वह सचमुच ही बहुत महत्वपूर्ण है।

क्या तुम अपनी बहिनजी से मेरी भेंट करा सकोगी ?"

राजरानी मुस्कराकर बोली, "बहिनजी से मैं आपकी चर्चा कर चुकी हूँ और उन्हें यह भी बता चुकी हूँ कि आप बुनाई-कढ़ाई के कार्यों में कितनी दक्ष हैं।

सचमुच भाभीजी ! यदि 'महिला-रक्षा-केन्द्र' को आपका संरक्षण प्राप्त होजाए तो केन्द्र का कार्य बहुत शीघ्र बहुत उन्नति कर सकता है।"

"तो फिर कब चलोगी सुभद्रादेवी के पास ?"

"आप अभी चलें। केन्द्र का कार्य सात बजे से प्रारम्भ होना है। इस समय बहिनजी केन्द्र में ही होंगी। आपसे भेंट करके बहिनजी को हार्दिक प्रसन्नता होगी। आपका वहां बहुत मन लगेगा। हमारे विद्यालय की वहां बहुत-सी छात्राएँ आती हैं और नगर की भी बहुत-सी स्त्रियाँ आती हैं। यहाँ अकेली रहने का मैं देख रही हूँ आपके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है।"

"यही मैं भी सोचती हूँ राज ! तो चलो अभी चलते हैं। शुभ कार्य के करने में देर क्यों की जाय ?"

शीलकुमारी और राजरानी 'महिला-रक्षा-केन्द्र' में पहुँचीं तो सुभद्रादेवी ने राजरानी की भाभीजी का हार्दिक स्वागत किया। उन्होंने उन्हें केन्द्र का कार्य दिखाया और फिर अन्दर निरीक्षण के लिए अपने साथ लेगईं।

शीलकुमारी ने केन्द्र का सम्पूर्ण कार्यक्रम बड़े ध्यान से देखा। वह कढ़ाई करने वाली स्त्रियों के पास कई स्थलों पर रुकीं और उनकी सलाइयां तथा ऊन अपने हाथ में लेकर उनकी ग़लत बुनाई ठीक की।

सुभद्रादेवी पर शीलकुमारी की इस दक्षता का बहुत प्रभाव पड़ा। उन्होंने अनुभव किया कि यदि शीलकुमारी उस केन्द्र का अध्यक्षा-पद सँभाललें तो वह केन्द्र बहुत उन्नति कर सकता है।

कार्यालय में पहुँचकर सुभद्रादेवी मुस्कराकर राजरानी से बोलीं, "राज ! तुम सोचो कि तुम कितनी दुष्ट हो, जो तुमने अपनी इतनी अच्छी भाभी को आज तक मुझसे छिपाकर ही रखा। तुम्हारे भाई साहब का परिचय भी मुझे उस दिन अचानक ही मिलगया था, जब मैंने तुम्हारे संरक्षक का नाम बोर्ड में तुम्हारे परीक्षा-फार्म पर ब्रिगेडियर धीरसिंह पढ़ा। तभी मैंने तुम्हें, याद होगा, तुम्हारी कक्षा से बुलवाया था।"

राजरानी ने तनिक लजाकर नीचे-ही-नीचे मुस्कराते हुए गर्दन हिलादी।

सुभद्रादेवी सगर्व बोलीं, "शीलकुमारी ! मेरा पुत्र मेजर वीरसिंह भी बूनला की उसी चौकी की रक्षा कर रहा है, जहाँ तुम्हारे स्वनामधन्य पति ब्रिगेडियर धीरसिंह ने कमान सँभाली हुई है।"

शीलकुमारी मुस्कराकर बोलीं, "आपके सुपुत्र मेजर वीरसिंह का परिचय मुझे आज ही राजरानी से मिला। अभी संध्या को रेडियो

समाचार में ब्रिगेडियर साहब के साथ मेजर वीरसिंह का नाम आया, तो राजरानी ने मुझे उनका परिचय दिया।

मेजर वीरसिंह आपके पुत्र हैं, यह जानकर आपसे तुरन्त मिलने की इच्छा हुई और मैं यहाँ राजरानी को साथ लेकर चली आई।

आपने 'महिला-रक्षा-केन्द्र' की स्थापना कर महत्वपूर्ण कार्य किया है। आपकी सूझ-बूझ की मैं हृदय से सराहना करती हूँ। 'महिला-रक्षा केन्द्र' के लिए मेरी जिन सेवाओं की आप आवश्यकता समझें, मुझे सहर्ष देनी स्वीकार होगी।"

सुभद्रादेवी को मुँह माँगी मुराद मिल गई, शीलादेवी के ये सहयोग-पूर्ण शब्द सुनकर। वह गद्-गद् होकर बोलीं, "तुम धन्य हो शीलकुमारी! 'महिला-रक्षा-केन्द्र' को तुम्हारा सक्रिय सहयोग गौरवान्वित करेगा। तुम्हारा जीवन केन्द्र की कार्यकर्ताओं को प्रेरणा प्रदान करेगा।"

सुभद्रादेवी द्वारा प्रदर्शित आदर के बोझ से तनिक दबकर शील-कुमारी बोलीं, "महिला रक्षा-केन्द्र मेरे निरर्थक पड़े जीवन को उपयोगी बनाने में सहयोग देगा।"

शीलकुमारी की चतुराईपूर्ण विनम्र वाणी ने सुभद्रादेवी को बहुत प्रभावित किया। वह सस्नेह शीलकुमारी के कन्धे पर हाथ रखकर खड़ी होती हुई बोलीं, "तो बहिन! तुम आज से केन्द्र का अध्यक्षा-पद संभाल लो। मुझे विश्वास होगया कि यह संस्था तुम्हारे संचालन में कभी डगमगायेगी नहीं।"

"अध्यक्षा-पद!" आश्चर्य के साथ शीलकुमारी के मुख से निकला। इतना बड़ा कार्य सम्भालने के विचार से तो वह कोठी से नहीं निकली थीं। वह तो केवल यह सोचकर निकली थीं कि वहाँ के किसी कार्य में लगकर उनका कुछ समय प्रसन्नता के वातावरण में निकल जाएगा।

'हाँ शीलकुमारी! मैंने यह बड़ा कार्य अपने बूढ़े कन्धों पर उठा तो लिया था, क्योंकि यह समय चूकने का नहीं था, परन्तु उठाया इसी

अभिप्राय से था कि उठाकर तुम सरीखी किसी समझदार और देश-भक्त स्त्री के कन्धों पर रख दूंगी।

सौभाग्य से तुम मिल गईं। सो अब अपना कार्य संभालो बहिन!"

सुभद्रादेवी की मधुर बात सुनकर राजरानी मुस्कराकर बोली, "बहिन जी! भाभीजी का 'महिला रक्षा-केन्द्र' की अध्यक्षा-पद के लिए आपने बहुत सुन्दर चुनाव किया है। भाभी जी का स्वभाव और योग्यता दोनों ही इसके अनुकूल हैं। बुनाई-कढ़ाई में भाभी जी डिप्लोमा-होल्डर हैं।"

यह सुनकर तो सुभद्रादेवी की बाँछें ही खिल गईं। इस संस्था की स्थापना आपने उतने ही कष्ट सहन करके की थी जितना कष्ट एक माता को, सन्तान पैदा करने में होता है।

उन्हें अपने बुढ़ापे की सन्तान का सहारा मिल गया। उन्हें विश्वास होगया कि अब उनकी वह संस्था चल जायेगा।

दूसरे दिन से शीलकुमारी ने 'महिला रक्षा-केन्द्र' का अध्यक्षा-पद सम्भाल लिया और कार्य की गति बढ़ादी। संध्या-समय विद्यालय में कार्य आरम्भ कराकर, अन्य संस्थाओं का सहयोग प्राप्त करने की दिशा में भी कदम बढ़ाया।

चन्द दिनों में ही 'महिला-रक्षा-केन्द्र' के कार्य की सारे जैपुर-नगर में धूम मचगई। उसके कार्य की सराहना सरकारी अधिकारियों और राजनीतिज्ञों के पास तक पहुँची। सभी ने मुक्त कण्ठ से उसकी सराहना की और अपना पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया।

संस्था की स्थिति में सुधार आया। उसके कार्यालय के कार्यकर्त्ताओं की संख्या बढ़गई। केन्द्र का उत्पादन पहले से कई गुना होगया।

—३—

सुभद्रादेवी और शीलकुमारी की जिस दिन भेंट हुई, उसके पश्चात उनका एक दूसरे के प्रति स्नेह तथा आदर-भाव बढ़ता ही गया।

आज सुभद्रादेवी को शीलकुमारी ने भोजन पर निमंत्रित किया था। उन्हीं के आने की प्रतीक्षा में शीलकुमारी और राजरानी बैठी थीं।

वह भी फिटन से उतरकर आगई। सुभद्रादेवी पर यह पुरानी फिटन थी, एक घोड़े की। इस पर बैठकर चलना आपको बहुत रुचिकर प्रतीत होता था। वह फिटन आपने अपने परिश्रम के पैसे से बनवाई थी।

राजरानी और शीलकुमारी ने कोठी के द्वार पर जाकर सुभद्रादेवी का स्वागत किया और आदर-भाव से उन्हें अन्दर लाकर ड्राइंग रूम में बिठाया। राजरानी और शीलकुमारी को सुभद्रादेवी के आने से हार्दिक प्रसन्नता हुई।

अभी बैठे कुछ ही क्षण व्यतीत हुए होंगे चीन के युद्ध को लेकर चर्चा प्रारम्भ होगई। इससे अधिक महत्वपूर्ण विषय अन्य कोई और हो ही नहीं सकता था, जो इन महिलाओं की बातचीत का केन्द्र बनता।

सुभद्रादेवी बोलीं, "बहिन शान्ता! कभी-कभी जब मैं यह सोचती हूँ कि चीन ने व्यर्थ भारत जैसे अनाक्रमक और साथी तथा सहयोगी देश पर आक्रमण क्यों किया, तो मेरी समझ में कुछ नहीं आता। क्या तुम मुझे समझाने का प्रयास करोगी कि आखिर चीन ने यह मूर्खता क्यों की?"

शीलकुमारी मुस्कराकर बोलीं, "बहिन सुभद्रादेवी! मूर्खता चीन ने नहीं, चीन के सिरफिरे नेताओं ने की है। चीनी नेताओं ने खोखले अभिमान में चूर होकर, सम्पूर्ण विश्व में युद्ध की स्थिति पैदा की है। राजनीति के असफल खिलाड़ी ही इस प्रकार की मूर्खता किया करते हैं।"

"तो क्या तुम चीनी नेताओं को असफल खिलाड़ी मानती हो शील-कुमारी ?" सुभद्रादेवी ने पूछा ।

शीलकुमारी मुस्करा कर बोलीं, "बहिन सुभद्रादेवी ! मैं चीनी नेताओं को खिलाड़ी नहीं. अनाड़ी मानती हूँ । ये अभी जुम्मा-जुम्मा सात दिन हुए गृह-युद्ध से मुक्त हुए थे । देश की आर्थिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो चुकी थी । गृह-युद्ध में पिसी चीन जनता इन महोदयों से अपने निर्माण की आशा लगाये बैठी थी । रूस से सहायता मिलने पर चीन की जनता का कुछ उत्साह बढ़ा । भारतीय नेताओं ने मित्रता का हाथ बढ़ाया तो चीन की जनता और आश्वस्थ हुई ।

परन्तु चीनी नेताओं के अनाड़ीपन ने वह सब चौपट कर दिया । चीनी जनता के पेट पर ये पैर रखकर खड़े होगए । उसकी छाती पर इन्होंने लिबरेशन-आरमी को लाद दिया । साम्यवाद की सृष्टि की कल्पना इन लोगों ने युद्ध के विनाश में की, जबकि रूसी नेताओं के कदम इससे ठीक विपरीत दिशा में घूम चुके हैं ।

चीनी नेताओं की हविस की खोपड़ी बहुत मोटी होगई है । वैसी ही इनकी बुद्धि भी बनी । अपनी औकात को भुलाकर इन्होंने साम्यवादी संसार के नेतृत्व का स्वप्न देखा । मियाँ माऊ सोचते थे कि स्टालिन की मृत्यु के पश्चात वही ही संसार के सब साम्यवादी दलों का नेतृत्व कर सकते हैं । अब विश्व की साम्यवादी नीति का संचालन मास्को से न होकर पेकिंग से होना चाहिए ।

परन्तु यह सम्भव न होसका और हो भी न सकता ।"

"क्यों नहीं हो सकता, शीलकुमारी ! आखिर मियाँ माऊ स्टालिन के पश्चात् सबसे पुराने साम्यवादी नेता तो हैं ही ।" सुभद्रादेवी ने पूछा ।

सुभद्रादेवी की बात सुनकर शीलकुमारी हँस पड़ीं । वह बोलीं, "इसीलिए तो मैं कहती हूँ बहिन ! कि चीनी नेता अनाड़ी निकले । इन्हें रूसी नेताओं का विरोध नहीं करना चाहिए था । चीन जैसे अविकसित देश

की प्रगति में रूस का सबसे महत्वपूर्ण योगदान था। विश्व-साम्यवाद की नीति-संचालन की सनक में चीन ने रूस से अपने सम्बन्ध खराबकर लिए। चीन को रूसी सहायता मिलनी बन्द होगई और आपस में तनाव की स्थिति पैदा होगई। चीन की विस्तारवादी नीति ने रूस को सशंकित कर दिया।

साम्यवाद के नाम को चीनी नेताओं ने कलंकित किया है। उसकी अबाध गति से बहती हुई धारा को चीनी नेताओं की हविस ने सीज लिया है। सम्पूर्ण विश्व के मानव को साम्यवाद की ओर से सशंकित और चौकन्ना कर दिया है। चीनी नेताओं को साम्यवाद के हितैषी उनकी इस मूर्खता के लिए निश्चय ही दंडित करेंगे।

पड़ौसी होने के नाते भारत ने सर्व प्रथम चीन की जनवादी सरकार को मान्यता प्रदान की। संयुक्त-राष्ट्र-संघ में चीन के प्रवेश की वकालत की। चीनी नेताओं को भारत बुलाकर सम्मानित किया और 'हिन्दी चीनी भाई-भाई' का नारा लगाकर पंचशील का शिलान्यास किया।"

इतना कहकर शीलकुमारी ने गम्भीर साँस ली और कहा, "परन्तु इन अनाड़ी चीनी नेताओं ने भारत की इस सद्भावना और सहयोग का अपने अनाड़ीपन से कोई मूल्यांकन नहीं किया। उनकी आँखों में तो एक ही चीज चुभती रही और वह थी भारत की औद्योगिक प्रगति जिसमें रूस, अमरीका, ब्रिटेन, जर्मनी तथा संसार के अन्य बहुत से देश अपना आर्थिक तथा तकनीकी सहयोग प्रदान कर रहे थे।

भारतीय नेताओं ने स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् केवल एक ही स्वप्न देखा और वह यह था कि भारत की निर्धन जनता की निर्धनता को दूर करने का। बस इसी कार्य की सिद्धि पर अपनी योजनाओं को लेकर जुट गए। युद्ध का उन्होंने कभी स्वप्न नहीं देखा था और उनका यह पड़ौसी देश चीन भी कभी उनपर आक्रमण करेगा, जिसको उन्होंने आजतक हर प्रकार से सहयोग दिया, इसकी उन्हें स्वप्न में भी सम्भावना नहीं थी।

चीनी नेताओं ने भारत के साथ नीचतापूर्ण विश्वासघात किया है। वे हमारी तटस्थता की नीति तथा औद्योगिक प्रगति को फूटी आँखें भी न देख सके।"

इतना कहकर शीलकुमारी हँस पड़ी। वह कुछ ठहरकर बोलीं ! "भारत और रूस की नीति तथा प्रगति ने चीनी नेताओं के आत्मसम्मान को कहिए या हविस की खोपड़ी को ठेस पहुँचाई। चीनी नेताओं ने इससे झुँझलाकर अपना अजगरी फन उठाया और भारत की खोपड़ी पर देमारा। उन्हें अपना एकमात्र शत्रु भारत ही दिलाई दिया। चीन की सेना ने भारत की उत्तर सीमा पर आक्रमण करदिया। महापंडित चाणक्य की पुण्य-भूमि पर इन्होंने कूट नीति से प्रहार किया। काल-कूट को पीजाने वाले शिव के वदन में इन्होंने अपने विष को प्रविष्ट करने का स्वप्न देखा।

ये चीनी नेता खिलाड़ी नही पूरे अनाड़ी निकले सुभद्रा बहिन ? एक दम अनाड़ी। इन्होंने भारत की सीमा पर इसलिए प्रहार किया है कि भारतीय नेता इस आक्रमण से भयभीत होकर साम्यवाद के विपक्षी गुट में अपनी रक्षा के लिए जाकर मिल जाएँ और तब चीनी नेता रूसी नेताओं की खिल्ली उड़ाकर उनसे कहें, 'ऐ सहयोगी उदार नीति के प्रणेताओ ! यह देखो अपनी नीति का खोखलापन। तुम्हारी नीति असफल सिद्ध हुई। आओ हमारे पीछें। हम बताते हैं तुम्हें विश्व में साम्यवाद का कैसे व्यापक प्रसार किया जा सकता है। साम्य-वादी विचारों का प्रसार शान्ति के मार्ग पर चलकर नहीं युद्ध और मानव-रक्त की धाराएँ प्रवाहित करके होगा।'

चीनी नेताओं का विचार है कि भारत अपनी तटस्थता की नीति का परित्याग कर देगा। भारत और रूस के सम्बन्ध समाप्त हो जाएँगे। भारत की आर्थिक तथा औद्योगिक प्रगति रुक जाएगी और इनका उल्लू-सीधा होजाएगा। इनकी दानव-प्रवृत्तियों के विकास का मार्ग उन्मुक्त होजाएँगा।"

इतना कहकर शीलकुमारी गम्भीरवाणी में बोलीं, "सुभद्रा बहिन ! महापंडित चाणक्य और शिव की पुण्य-भूमि के वायुमंडल में, उन महान् विभूतियों की आत्माएं मँडरा रही हैं। वे चीनी नेताओं की कुटिलता और उनके विष को आप देखिएगा कि कितनी सुगमता से सोख लेंगी। चीनी नेताओं जैसे भुजंगों को हिमालय के रक्षक शिव बड़े प्रेम से अपने गले में पहिन लेंगे। उनके बदन पर उनके विष का कोई प्रभाव नहीं होगा। चीनी नेताओं के स्वप्न बिखर जायेंगे। वे न तो साम्यवादी संसार के नेता बन सकेंगे और भारत की प्रगति में ही किसी प्रकार की बाधा पहुँचा सकेंगे।"

सुभद्रादेवी गद्गद् होकर बोलीं, "बहिन शीलकुमारी ! तुमने चीनी नेताओं की कूटनीति का बहुत सुन्दर विश्लेषण किया। मैं सचमुच इस समस्या को अभी तक समझ ही न पाई थी। तुमने मेरे मस्तिष्क की गुत्थी सुलझादी।"

इसके पश्चात् तीनों ने एक साथ बैठकर प्रेमपूर्वक भोजन किया। भोजन करके बैठक में आए तो सुभद्रादेवी राजरानी से बोलीं, "राज-रानी ! तुम्हारे 'कला-केन्द्र' की क्या स्थिति है ? सुना है इस बार तुम लोगों ने बहुत बड़ा आयोजन करने का निश्चय किया है।"

"किया तो है बहिनजी ! हमारे मुख्य मंत्रीजी ने हमारे समारोह का उद्घाटन करने का भी वचन देदिया है। हमें विश्वास है कि इस समारोह के फलस्वरूप हम लोग रक्षा-कोष के लिए अच्छी धन-राशि एकत्रित कर सकेंगे।" राजरानी ने उत्तर दिया।

फिर बात बदलकर मेजर वीरसिंह पर आगई। सुभद्रादेवी बोलीं, "बहिन शीलकुमारी ! मेरे वीर की भी नृत्य और संगीत में बहुत रुचि रही है।

गत वर्ष जब एक समारोह में राजरानी ने मणिपुर-नृत्य में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया था तो वीर भी उस समारोह को देखने के लिए

गया था। रात्रि को घर लौटा तो उसने राजरानी की प्रशंसा के मेरे सम्मुख पुल बाँध दिए

मैंने उससे कहा, 'अच्छा वीर! कल तुम्हारी राजरानी से भेंट कराऊँगी। वह मेरी बहुत प्रिय छात्रा है। यह पास उसी ने मुझे लाकर दिया था, जिससे तुम यह समारोह देखकर आए हो। मुझसे बहुत आग्रह किया था उसने आने का और कल देखना वह कितनी रुष्ट होगी मुझ पर।'

मैं यह कह ही रही थी तभी कि राजरानी ने मुझ पर बरसते हुए मेरे कमरे में प्रवेश किया। छूटते ही बोली, "आप मेरे इतनी प्रार्थना करने पर भी हमारा समारोह देखने नहीं आईं बहिनजी, यह आपने ठीक नहीं किया। आज का समारोह ऐसा हुआ बहिनजी, कि आज से पूर्व कभी ऐसा समारोह जैपुर में नहीं हुआ होगा।"

राजरानी की बात सुनकर वीर बोला, "सुना माताजी आपने। समारोह सचमुच दर्शनीय था और उस मणिपुर नृत्य की तो मैं प्रशंसा ही नहीं कर सकता।"

वीर के मुख से अपनी प्रशंसा सुनकर राजरानी ने पहले तो चकित-दृष्टि से वीर की ओर देखा और फिर कुछ लजा-सी गई।

मैं हँसकर बोली, "अरे यह तो वीर है। इसे तुमने पहिले कभी देखा नहीं है राजरानी! मेरा बेटा मेजर वीरसिंह।"

उसके पश्चात् दो बार राजरानी से वीर की भेंट हुई राजरानी के नृत्य का उससे बड़ा प्रशंसक शायद ही तुम्हें अन्य कोई मिलेगा शीलकुमारी।"

शीलकुमारी मुस्कराकर बोलीं, "तो इस बार मोर्चे से लौटने पर इन दोनों नाचने वालों का गठबंधन कर दिया जायेगा। कहिए, कैसा रहेगा?"

"इससे अधिक प्रसन्नता की बात अन्य कोई नहीं हो सकती मेरे

जीवन में शीलकुमारी।" सुभद्रादेवी बोलीं।

इनकी ये बातें चलीं तो राजरानी लजाकर कमरे से बाहर चली गई।

"बड़ी शरमीली है हमारी राज!" शीलकुमारी ने कहा।

"शरमीली होना नारी का सबसे बड़ा गुण है। जिस नारी में शर्म नहीं, उसे नारी नहीं मानती मैं।"

विदा होते समय सुभद्रादेवी ने आज के भोजन के लिए धन्यवाद दिया। शीलकुमारी और राजरानी ने आदरपूर्वक उनको फिटन तक पहुँचाया और फिटन चलदी।

४—

ब्रिग्रेडियर धीरसिंह पर्वत-शृंखला पर अपने साथियों के साथ खड़े सतर्कता के साथ भारत की सीमा पर पहरा देरहे थे। ये भारतीय सीमा के सजग प्रहरी थे। चीनियों के नए आक्रमण को विफल करने का उन्होंने दृढ़ निश्चय किया हुआ था।

उसी समयय एक हेलीकाप्टर आकाश में मँडराता दिखाई दिया। चालक ने बहुत सावधानी से एक चट्टान पर हेलीकाप्टर उतारा। ब्रिग्रे-डियर धीरसिंह आगे बढ़कर चालक के पास पहुँचे तो उसने कहा, "सर! बूनला चौकी को तीन ओर से चीनी सेना ने घेर लिया है। वे लोग बहुत शीघ्र यहाँ पर भयंकर आक्रमण करने वाले हैं। मुझे आदेश मिला है कि मैं हेलीकाप्टर में आपको तुरन्त तावांग पहुँचा दूँ। आप यहाँ की सुरक्षा का भार मेजर साहब को सौंपकर मेरे साथ चलें।"

ब्रिग्रेडियर धीरसिंह अभी तक किसी प्रकार चौकी रक्षा कर रहे थे। वह इस रहस्य से अपरिचित नहीं थे कि अब बहुत शीघ्र चौकी पर भारी आक्रमण होने वाला था। वह अपने एक सौ इक्कीस जवानों को मृत्यु के मुँह झोंककर स्वयं हेलीकॉप्टर से तावाँग नहीं जासकते थे।

तावाँग की मोर्चाबन्दी सुदृढ़ करने के लिए उनका वहाँ पहुँचना भी आवश्यक था, परन्तु यहाँ की व्यवस्था इस समय इस प्रकार नहीं छोड़ी जासकती थी।

वहगम्भीरतापूर्वक बोले, "वीर चालक ! तुम तावाँग में जाकर सूचना दो कि मैं बहुत शीघ्र अपने सब जवानों के साथ तावाँग पहुँचूंगा। इन्हें यहाँ निराश्रित छोड़कर मैं नहीं आसकता। मेजर वीर सिंह पीछे की पर्वत-शृंखला से तावाँग की ओर जाने वाली पगडण्डी

और घाटी का निरीक्षण करने गए हैं। उनके लौटने पर ही मैं कोई निश्चय लेसकूँगा।"

चालक अपने हेलीकाप्टर को लेकर आकाश में उड़गया और ब्रिग्रेडियर धीरसिंह अपने जवानों के पास पहुंच गए। वह गम्भीर वाणी में बोले, "बहादुर जवानों! हम लोगों ने आज तक बूनला चौकी पर, जितने भी चीनी आक्रमण हुए, सभी को विफल किया है। परन्तु इस बार जो आक्रमण होगा उसे विफल करना हमारे लिए कठिन है।"

तब तक मेजर वीरसिंह वहाँ आपहुंचे। वह बोले, "सर! मैं चौकी के पीछे वाली पर्वत-शृंखला का पूरी तरह निरीक्षण कर चुका हूँ। यह पर्वत-शृंखला बहुत लम्बी और ऊँची है। हम इस चोटी की दाईं ओर की घाटियों से उस पर्वत-शृंखला पर पहुँच सकते हैं। वहां पहुँचने पर चीनी सेना हम पर केवल सामने से ही आक्रमण कर सकेगी। हमारी शक्ति तीन ओर की रक्षा में नष्ट नहीं होगी।"

ब्रिग्रेडियर धीरसिंह ने मेजर वीरसिंह को तुरन्त अपने जवानों को पगडण्डी से उस पर्वत-शृंखला की ओर प्रस्थान करने का आदेश दिया।

अभी कुछ ही क्षण पूर्व जो बूनला चौकी भारतीय वीरों का सुरक्षा-स्थल थी, भक्क-भक्क करके ज्वाला की लपटों में खोगई। भारतीय जवानों ने उन्मुक्त कंठ से 'भारत माता की जै' का नारा लगाया और धीरे-धीरे बिला तनिक-सा भी शब्द किए पगडंडी से पीछे लौट पड़े।

भारतीय जवान मुस्तैदी के साथ आगे बढ़ रहे थे। एक घंटे में वे उस पर्वत-शृंखला पर पहुँच गए जहाँ उन्हें पहुंचना था और इस बात की प्रतीक्षा किए बिना ही कि कब चीनी सेना उन पर आक्रमण करे, ब्रिग्रेडियर धीरसिंह ने उन्हें तुरन्त चीनी सेना पर गोलियाँ बरसाने का आदेश दिया।

चीनी सेना ने चौकी पर तोपों और मार्टरगनों से गोले बरसाने

आरंभ किए। चौकी पर पहुँचने में उन्हें अधिक समय नहीं लगा। क्यों कि इधर से उनका विरोध नहीं किया गया था, परन्तु ज्यों ही वे चौकी की पहाड़ी पर पहुँचे त्यों ही उन्हें भारतीय वीरों की गोलियों का निशाना बनना पड़ा। जिस तेजी के साथ वे लोग पहाड़ी पर चढ़ आए थे, वह ऊपर आकर काफूर होगई।

चौकी के दाईं और बाईं ओर की चीनी सेना का घाटियों में ठह-रना असम्भव होगया। उन सबने वहाँ से भागकर चौकी के अग्रिम भाग में अपने प्राणों की रक्षा की।

ब्रिग्रेडियर धीरसिंह मेजर वीरसिंह से बोले, "मेजर वीरसिंह ! तुमने आज पुरुस्कार का कार्य किया है। तुम्हारी समझदारी की मैं दाद देता हूँ। यदि हम लोग आज चौकी पर ही बने रहते तो हममें से एक जवान की भी रक्षा सम्भव नहीं थी।"

भारतीय वीर पूरी रफ़तार से गोलियाँ बरसा रहे थे, परन्तु चीनी सेना का टिड्डीदल चौकी पर बराबर छाता चला जारहा था। उसकी संख्या इतनी अधिक थी कि हज़ार पाँच सौ के मरजाने का उस पर कोई प्रभाव दिखाई नहीं देता था।

यह स्थिति देखकर ब्रिगेडियर धीरसिंह मेजर वीरसिंह से बोले, "मेजर वीरसिंह ! चीनी सेना अब चौकी पर पूरी तरह छागई है। रात्रि का अन्धकर छाजाने में अभी दो घण्टे की देरी है। चौकी की जिस पहाड़ी पर यह चीनी सेना एकत्रित है ठीक इसी के नीचे दस डाय-नेमाइट लगे हैं। तुम धीरे से इस समने वाली पहाड़ी के नीचे-नीचे जाकर उन सामने पड़े दो रस्सों में आग लगादो।

परन्तु बहुत समझदारी का काम है यह। यह कार्य बहुत फुर्ती से करने का है।"

मेजर वीरसिंह ज्यों ही पगडंडी से उस ओर बढ़ा त्यों ही ब्रिगेडियर धीरसिंह ने भारतीय जवानों को चौकी पर धुँआधार गोलियाँ बरसाने

का आदेश दिया। भारतीय जवानों ने अपना जौहर दिखा दिया। असंख्य चीनी सैनिकों के मुँह तोड़ दिए। वे अपने प्राणों की रक्षा के लिए उसी चोटी के पीछे जा छिपे जिसे डायनेमाइट से उड़ाने के लिए मेजर वीरसिंह अपने प्राण हथेली पर रखकर आगे बढ़रहा था।

मेजर वीरसिंह ने यह कार्य विद्युत-गति से किया। वह आनन-फानन में उन रस्सों के पास पहुँच गए जिन्हें जलाकर उसे लौटना था।

ब्रिगेडियर धीरसिंह की दृष्टि एकटक मेजर वीरसिंह और उनके चारों ओर लगी थी। उन्होंने देखा कि कुछ चीनी सेनिक, जो घाटी से भागते समय, एक पहाड़ी गुफा में छिप गए थे, उन्होंने मेजर वीरसिंह को देख लिया और वे एक साथ उस पर झपट पड़े।

मेजर वीरसिंह उस समय रस्सों में आग लगाकर लौट रहे थे और बहुत सतर्कता से आगे बढ़ रहे थे परन्तु उनका ध्यान उस ओर नहीं था।

ब्रिगेडियर धीरसिंह विद्युत-गति से एक दम बीस फीट गहरी खंदक में कूद पड़े। अपनी रायफल की सनसनाती हुई गोलियों से उन्होंने मेजर वीरसिंह की ओर लपकते हुए चीनी सेनिकों को भून दिया। वह मेजर वीरसिंह को अपने साथ लेकर फिर पर्वत-शृंखला पर चढ़गए और अपने जवानों को आदेश दिया, "जवानो! यह जो सामने हमारी पर्वत-शृंखला की ओर आने वाली पगडंडी है, इसके निकट तुम गोलियों की वर्षा करो। रात्रि का अन्धकार पूरी तरह छाजाने में अब अधिक बिलम्ब नहीं है। जब तक अन्धकार पूरी तरह छा न जाए तब तक तुम लोग इसी एक स्थान पर गोलियाँ बरसाते रहो, जिससे चीनी सेना इस पगडंडी के निकट न आसकें।"

सूर्य अस्ताचल के निकट पहुँच चुका था। उसकी रक्तिम किरणें बूनला चौकी पर रक्त में लथ-पथ चीनी आक्रमणकारियों के शवों पर पड़कर मुस्करा रही थीं। हिमालय की वेदी पर इन बलिदान के बकरों

को चढ़ाकर भारतीय जवान माता की वन्दना कर रहे थे।

सूर्य देवता से चीना लुटेरों और आततायियों का दु:साहस देखा न गया तो उसने रात्रि के आँचल में अपना मुँह छिपा लिया। रात्रि का अन्धकार चारों ओर छागया।

ब्रिगेडियर धीरसिंह ने अब एक क्षण का भी बिलम्ब करना उचित न समझा। वह समझ चुके थे कि चीनी सेना सम्भव था रात्रि में ही फिर आक्रमण करदे।

उन्होंने मेजर वीरसिंह को बुलाकर कहा, "मेजर वीरसिंह ! हमने बूनला चौकी की सुरक्षा में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी, परन्तु खेद है कि हम उसकी रक्षा न कर सके। अब हम लोगों के पास युद्ध का सामान भी शेष नहीं रहा और हमें तावांग की रक्षा-पंक्ति को भी वहाँ पहुँचकर सुदृढ़ करना है। इसलिए अब तुरन्त पीछे लौटने का प्रबन्ध करो।"

मेजर वीरसिंह बोले, "सर ! तावांग जाने के लिए हमें यहाँ से एक मील दूर पश्चिम में एक पगडंडी मिलेगी। वह सीधी हमें तावांग ले जायेगी। उसके बीच में एक छोटी-सी पहाड़ी है। उसके पार पहुँचकर यदि हम उसे डायनेमाइट से उड़ादेंगे तो चीनी सेना को आगे बढ़ने के लिए दस मील का चक्कर काटना होगा और तब तक हम लोग तावांग पहुँच जायेंगे।"

ब्रिगेडियर ने धीरसिंह की ओर आशा-भरी दृष्टि से देखकर कहा, "मेजर वीरसिंह ! तुम जवानों का दिशा-दर्शन करो और ध्यान रखो कि हमारे प्रस्थान का चीनियों को कानों-कान शब्द न सुन पड़े। चीनी सेना यह भाँप भी न सके कि हम लोग यहाँ से प्रस्थान कर रहे हैं। भारतीय जवानों ने इतना चुपचाप वहाँ से प्रस्थान किया कि बूलना चौकी पर एकत्रित चीनी सैनिक उनका कोई संकेत न पासके। वे रात्रि भर दूसरे दिन प्रातःकाल इस चोटी पर भयंकर आक्रमण करने की तैयारी करते रहे और तब तक भारतीय जवान काफी आगे निकल गए।

भारतीय सैनिक बूनला चौकी से पीछे हटकर भयंकर जंगल, घाटी और पहाड़ियों को पारकर तीसरे दिन रात्रि के चार बजे तावांग की चौकी पर पहुँचे। ब्रिग्रेडियर धीरसिंह की कुशलता और अपने सब जवानों को सुरक्षित लौटा लाने पर उनकी सराहना की गई।

तावांग के मोर्चे को पहले ही चीनी आक्रमण को रोकने के लिए सुदृढ़ कर लिया गया था। ब्रिग्रेडियर धीरसिंह के वहाँ पहुँचने से जवानों के हौंसले और भी बढ गए।

चीनी सेना-नायक ने बूनला चौकी पर अधिकार कर तावांग की ओर कूच किया। उसने अपनी चार डिवीज़न सेना इस मोर्चे पर झोंक दी।

चीनी सेना के सामने भारतीय सेना दाल में नमक के समान कम थी, परन्तु उनकी नसों में भारतीय सुरक्षा और वीरता का रक्त लहरें मार रहा था। वे अपने प्राणों की बाजी लगाने को उद्यत बैठे थे। ब्रिग्रेडियर धीरसिंह ने मेजर वीरसिंह के साथ अपनी सेना के अन्तिम भाग का निरीक्षण करने के लिए प्रस्थान किया।

तावांग चौकी के सामने एक ऊँची पहाड़ी थी और उसके दोनों ओर दो घाटियाँ। चीनी सेना को उन्हीं घाटियों के अन्दर से होकर आना था।

ब्रिग्रेडियर धीरसिंह ने अपनी टुकड़ी को दो भागों में विभक्त कर उन दोनों घाटियों के दोनों ओर के मोर्चे सँभालने का आदेश दिया और शेष सेना को सिमटाकर सामने की पहाड़ी पर दृष्टि रखने को कहा।

दूसरे दिन संध्या को छः बजे चीनी आक्रमण प्रारम्भ हुआ और दोनों ओर से जमकर लड़ाई हुई। भारतीय जवानों ने प्राणों की बाज़ी लगाकर जो वीरता का परिचय दिया उससे चीनियों के दाँत खट्टे हो गए। चार घंटे की जमकर लड़ाई के पश्चात् चीनियों के पैर उखड़ गए और वे मैदान छोड़गए।

इस युद्ध में चीनी सेना को भारी क्षति उठानी पड़ी। उनकी एक डिवीज़न सेना को भारतीय जवानों की गोलियों ने भून दिया। तावांग चौकी के दांई और वांई ओर की घटियाँ चीनी सैनिकों के शवों से पट गईं। उनके हौसले पस्त होगए, परस्त उनकी संख्या इतनी अधिक थी कि उन्हें दूसरा आक्रमण करने में विलम्ब न हुआ।

भारतीय जवान अभी ठीक से अपनी सीमित शक्ति को बटोर भी न पाये थे कि चीनियों का दूसरा भयंकर आक्रमण प्रारम्भ होगया। यह आक्रमण पहले आक्रमण से कहीं अधिक भयंकर था। चीनियों का भारी तोपखाना मार्टरगवों गोले बर्सा रहा था।

इस गोलाबारी ने तावांग की हवाई पटरी को छिन्न-भिन्न कर दिया। हवाई पटरी को चीनी तोपों ने अपना विशेष लक्ष इसलिए बनाया था कि जिससे भारतीय सेना को कुमुक पहुँचने का मार्ग रुक जाय और हुआ भी वास्तव में वही।

भारतीय चालकों के समक्ष कठिन समस्या उत्पन्न होगई। उनका मार्ग अवरुद्ध होगया। अब वे हवाई पटरी का उपयोग नहीं कर सकते थे। वहाँ अन्य कोई स्थान जहाज़ों को सुरक्षित नीचे उतारने योग्य नहीं था।

फिर भी वे हतोत्साहित नहीं हुए और बराबर अपने जवानों को युद्ध-सामग्री पहुँचाते रहे।

भारतीय जवानों ने अपनी-अपनी स्थिति को सँभाला। ब्रिग्रेडियर धीरसिंह ने चौकी के दोनों ओर की टुकड़ियों का निरीक्षण किया और

फिर एक साथ सामने वाली पहाड़ी पर बिछी चीनी सेना पर भारतीय जवानों को गोलियाँ बर्साने का आदेश दिया ।

भारतीय सैनिक चीनी अथाह सेना पर बरस पड़े । दो घंटे की गोला-बारी के पश्चात् चीनी सेना को फिर मैदान छोड़ना पड़ा । भारतीय जवानों ने उल्लासपूर्ण स्वर में "जै-हिन्द" का नारा बुलन्द किया ।

ब्रिग्रेडियर धीरसिंह ने अपने शेष जवानों को फिर एकत्रित किया और इस बार उन्होंने अपना मोर्चा बदलकर एक ओर की घाटी चीनियों

आगे बढ़ने के लिए छोड़ दी । इस घाटी को छोड़ने का मुख्य कारण यह था कि अब भारतीय टुकड़ी की संख्या बहुत कम रह गई थी ।

रात्रि के अन्धकार में ब्रिग्रेडियर धीरसिंह घाटी का निरीक्षण कर रहे थे । उनकी दृष्टि पहाड़ी की तरैटी में भारी संख्या में बिछी चीनी सेना पर पड़ी । वह वहीं छिटककर खड़े होगए और अनुमान लगाया कि अब चौकी की रक्षा नहीं हो सकेगी ।

वह हतोत्साहित नहीं होने वाले नहीं थे । उन्होंने अपने साथियों के साथ अपने आपको चौकी की रक्षार्थ न्यौछावर करने का दृढ़ संकल्प कर लिया था । उन्होंने अपने जवानों के अन्तिम क्षण तक मोर्चे पर जमे रहने का आदेश दिया ।

रात्रि के एक बजे चीनी-सेना की ओर से 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' का स्वर गूंजा ।

ब्रिगेडियर धीरसिंह ने कड़ाकेदार आवाज में कहा, "जवानो ! होशियार ! ये विश्वासघाती चीनी हमारे भाई नहीं, लुटेरे हैं । ये धोखेबाज शत्रु हैं हमारे । हम इन्हें रण-चण्डी की भेंट चढ़ाकर ही दम लेंगे ।"

इसके पश्चात् भारतीय वीरों ने एक स्वर में 'भारत माता की जै' का नारा लगाकर शत्रु-सेना पर गोलियों की बौछार की ।

भारतीय टुकड़ी बड़े वेग के साथ घाटी की ओर बढ़ी और चुन-चुन कर घाटी में प्रवेश करने वाले चीनियों को मौत के घाट उतारा, परन्तु

चीनी सेना की संख्या बराबर बढ़ती ही जा रही थी।

तोपों की गड़गड़ाट और गोलियाँ खाकर मरने वाले सैनिकों की आवाजों से वायु-मण्डल भर उठा था। हिमालय की शान्ति भंग करने वाले आतताइयों के प्रति ब्रिगेडियर धीरसिंह का हृदय घृणा और क्षोभ से भर उठा था। वह खूँखार सिंह के समान गरज-गरजकर अपने जवानों का हौसला बढ़ा रहे थे। उनकी मशीनगन भयंकर वेग से चीनी सेना पर गोलियों की वर्षा कर रही थी। चीनी सैनिकों के शव घाटी में बिछते जा रहे थे। तभी एक सनसनाती हुई गोली उधर आई और ब्रिगेडियर धीरसिंह के दांई जाँघ में लगकर पार हो गई। वह लड़खड़ा कर ज़मीन पर गिर पड़े। उनके गिरते ही मशीनगन बन्द होगई।

मेजर वीरसिंह लपककर उसी स्थान पर शत्रुओं की गोलियों के बीच जा पहुँचे और मशीनगन सम्भाल ली। मेजर वीरसिंह ने एक बार फिर चीनी सेना की बढ़ती हुई प्रगति को रोक दिया, परन्तु यह रोकना स्थायी न रह सका क्योंकि चीनी सेना की कोई थाह नहीं थी।

थोड़ी देर में ब्रिग्रेडियर धीरसिंह भी अपने घाव पर पट्टी बाँधकर मेजर वीरसिंह के पास आगए। उन्होंने मशीनगन को फिर सँभाल लिया और एक बार चीनियों के काल बनकर उन पर बरस पड़े।

लड़ाई कई घण्टे चलती रही। हज़ारों चीनी सैनिक गोलियाँ खा-खाकर खंदकों में सो गए, परन्तु इससे उनकी संख्या पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। एक मरता था तो उसके स्थान पर चार चीनी आगे बढ़ आते थे। चीन की इतनी बड़ी सेना को समाप्त करना गिने चुने भारतीय जवानों के लिए कठिन था।

ब्रिग्रेडियर धीरसिंह ने देखा कि चीनी सेना ने चारों ओर से उन्हें घेर लिया था और अब युद्ध जारी रखना था। उन्होंने फिर भी आत्म-समर्पण नहीं किया।

ब्रिग्रेडियर धीरसिंह ने युद्ध बन्द न करने का आदेश दिया.

चीनी सेना ने भारतीय जवानों को चारों ओर से घेर लिया। चौकी पर चीनियों का अधिकार होगया। भारतीय सैनिकों को बन्दी बना लिया गया।

ब्रिग्रेडियर धीरसिंह का बदन पहले ही गोली के घाव से कितना ही रक्त बह जाने से शिथिल पड़ गया था। वह अचेत होकर ज़मीन पर गिर पड़े। वह इस समय अचेत थे। उन्हें पता नहीं था कि क्या हो रहा था। वह हिमालय की गोद में पड़े थे।

चीनी सारजेन्ट बढ़कर आगे आया और अपने सैनिकों से बोला, "भारत का सब बन्दियों को हमारा छावनी में ले जाना है। जो घायल है उनको गोली मारकर खंदक में फेंक दो। अपना घायलों को भी खत्म करदो और बाकी को साथ लेचलो।"

यह सुनकर मेजर वीरसिंह का दिल हिल गया। वह आगे बढ़कर बोले, "सारजेन्ट! तब क्या आपके यहाँ घायलों को हस्पताल पहुँचाने की कोई व्यवस्था नहीं है?"

"है क्यों नहीं? चीन का पास सब कुछ है। क्या नहीं है? परन्तु यहाँ इन खाड़-खड्डों में एम्बुलेस कैसे आयेगा? हम मानवतावादी आदमी हैं। घायलों को तकलीफ़ न हो इसलिए हमने कहा उन्हें गोली मारदो।" सारजेन्ट बोला।

मेजर वीरसिंह कुछ सोचकर बोला, "हमारे ब्रिग्रेडियर धीरसिंह अचेत पड़े हैं। उन्हें एक गोली लगी थी। यदि आप आज्ञा दें तो मैं उन्हें अपनी पीठ पर आपकी छावनी तक लेचल सकता हूँ।"

चीनी सारजेन्ट ने विशेष दृष्टि से मेजर वीरसिंह की ओर देखा और फिर मुस्कराकर बोला, "तुम लेचल सकता है तो हमारा कोई हानि नहीं है। हमको खुशी होगी। हम चाहता है कि तुम्हारा ब्रिग्रेडियर का जान बच जाय। हम दुनियाँ का हर इन्सान को प्यार करता है।"

"धन्यवाद !" कहकर मेजर वीरसिंह ने आगे बढ़कर ब्रिगेडियर धीरसिंह को सावधानी से अपनी पीठ पर उठा लिया। वह चल दिया अपने अन्य साथियों के साथ चीनी सैनिकों के बीच बन्दी बने, उत्तर दिशा में।

भारत-भूमि पीछे छूट गई। मेजर वीरसिंह ने मन-ही-मन भारत भूमि को नमस्कार किया और कंधा बदलने के बहाने ब्रिगेडियर धीर-सिंह को लिटाकर वहाँ की रजली और फिर ब्रिगेडियर धीरसिंह को पीठ पर लादकर आगे बढ़ गया।

पहाड़ी ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर, भूखा-प्यासा मेजर वीरसिंह तीसरे दिन ब्रिगेडियर धीरसिंह को अपनी पीठ पर लादे चीनी सेना की छावनी में पहुँचा। जब वह वहाँ पहुँचा तो उसके पैर लड़खड़ा रहे थे।

चीनी सारजेन्ट बोला, 'मेजर वीरसिंह ! तुम बहुत हिम्मत वाला आदमी है। हम तुमसे बहुत खुश हैं। हमने डाक्टर को बोल दिया है, वह तुम्हारा ब्रिगेडियर का स्पेशल इलाज करेगा। जब तक तुम्हारा ब्रिगेडियर ठीक नहीं होता है तब तक तुम यहीं उनके पास रहेगा। तुम्हारे सोने के लिए यह पास में छोलदारी लगा है।"

"धन्यवाद !" मेजर वीरसिंह बोला।

"धन्यवाद का जरूरत नहीं है मेजर ! हम चीनी हर आदमी को प्यार करता है। हम हिन्दुस्तानी को अपना भाई मानता है।"

मेजर वीरसिंह ने अपने ऊपरी हाव-भाव से सन्तोष ही प्रकट किया, परन्तु मन-ही-मन कहा, 'पाजी कहीं का। हमारे देश की सीमा पर इतना भीषण आक्रमण करके भी कहता है कि यह भारतवासियों को अपना भाई मानता है। हमारे साथ इतना भीषण विश्वासघात करके भी ये चीनी भारतीयों के भाई बनने का दावा करते हैं। धोखेबाज़ कहीं के।"

चीनी सारजेन्ट चला गया। हास्पिटल के डाक्टर ने ब्रिगेडियर धीरसिंह के घाव को धोकर साफ़ किया। उसकी मरहमपट्टी की और

उन्हें इन्जेक्शन दिया। उनके आराम का हर सम्भव साधन जुटाया गया।

मेजर वीरसिंह को चीनी डाक्टर के इस व्यवहार से सन्तोष हुआ। उसने डाक्टर की ओर कृतज्ञतापूर्वक दृष्टि से देखा।

डाक्टर मुस्कराकर बोला, "आपका आदमी ठीक हो जायगा। चिन्ता का कोई बात नहीं है।"

डाक्टर के ये शब्द सुनकर मेजर वीरसिंह को और भी सन्तोष हुआ। उन्हें लगा कि उनका श्रम वृथा नहीं गया।

तावांग और सेला पर चीनी अधिकार से युद्ध की स्थिति बदल गई। विश्व ने इस स्थिति को गम्भीर दृष्टि से देखा।

भारतीय नेताओं ने मित्र-राष्ट्रों से सहायता की अपील की और वह इतनी तीव्र-गति से प्राप्त हुई कि जिसकी चीन को स्वप्न में भी सम्भावना नहीं थी।

तावांग और सेला में जो हज़ारों की संख्या में भारतीय जवान हताहत हुए अथवा चीनियों द्वारा बन्दी बना लिए गए, उनके परिवारों पर एकदम बिजली-सी गिर पड़ी। उनके सम्बन्धित परिवारों में शोक छागया।

शीलकुमारी और राजरानी ने रेडियो पर समाचार सुना तो वे एक क्षण के लिए तो किंकर्त्तव्यविमूढ़-सी रह गईं। उनके नेत्रों से झल्ल से आँसू बरस पड़े।

राजरानी उठकर कमरे में चली गईं। उसकी कोमल आशाओं की कलिका पर खिलने से पूर्व ही तुषारापात होगया। अभी कल ही उसने अपनी भाभी और सुभद्रादेवी की बातें सुनकर जीवन में जो स्वप्न देखा था उसे विधाता ने एक ही झटके से छिन्न-भिन्नकर दिया। उसके जीवन का उत्साह और आशाएँ निराशा में परिणित होगईं।

शीलकुमारी का हृदय भी बहुत उद्विग्न था। उन्हें यह पता ही न चला कि राजरानी कब उनके कमरे से उठकर चली गई। उन्हें रह-रहकर अपने पति की स्मृति विचलित कर रही थी। उनका हृदय टुकड़े-टुकड़े हुआ जा रहा था। इसी प्रकार बैठे-बैठे रात्रि का अंधकार चारों ओर छागया।

शीलकुमारी की दृष्टि सामने दीवार पर लगे घंटे पर पड़ी तो वह चकित-सी होकर उठ खड़ी हुई। उन्होंने चारों ओर देखा तो राजरानी नहीं थी वहाँ। वह धीरे-धीरे अपने कमरे से बाहर निकलकर बरांडे में आई तो उन्होंने देखा कि राजरानी के कमरे में बत्ती जली थी। उनके कदम धीरे-धीरे उसी ओर को उठ गए। वह राजरानी के कमरे के द्वार पर जाकर खड़ी होगई।

शीलकुमारी ने देखा राजरानी कमरे के फर्श पर पड़ी सुबकियाँ भर रही थी। उन्होंने द्वार खटखटाया। उनका हृदय यह दृश्य देखकर और भी बोझिल होउठा। राजरानी पर उन्होंने अनुभव किया, इस घटना का और भी अधिक गहरा आघात हुआ है। उसके पिता तुल्य बड़े भाई और मेजर वीरसिंह के इस प्रकार तावांग चौकी पर संकट-ग्रस्त होने से उसकी दशा खराब होगई है।

द्वार पर खटखटाहट सुनकर राजरानी चकित-सी होकर खड़ी हुई और फिर उसने द्वार खोला तो देखा भाभीजी समक्ष खड़ी थीं। राज-रानी सुबकती हुई अपनी भाभी से जाकर लिपट गई! उसने भाभी के आँचल में मुंह छिपाकर रोते-रोते कहा, "भाभीजी! यह सब क्या हुआ?"

शीलकुमारी अपने हृदय की पीड़ा को अपने अन्दर ही समेटकर राजरानी को अंक में भरकर बोली, "जो विधाता को मंजूर था वह होगया राज! परन्तु ऐसे वीर भाई की बहिन को क्या इस प्रकार रोना शोभा देता है? तुम्हारे भाई का यह गौरवपूर्ण कृत्य भारतीय इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों से लिखा जायगा। उन्होंने भारत माता के मान और उसकी मर्यादा के लिये अपना बलिदान दिया है। उन्होंने हिमालय की पवित्र पावनवेदी पर अपने आपको अर्पण किया है।

मेजर वीरसिंह के त्याग की भी सराहना नहीं की जा सकती। इस कठिन समय में हम लोगों को बहिन सुभद्रादेवी को धैर्य बँधाना

चाहिए, परन्तु इस समय बारह बज चुके हैं। तुम रोओ नहीं राज ! वरना तुम्हारी भाभी पागल होजाएगी।"

राजरानी धीरे से सँभलकर खड़ी होगई। उसकी दृष्टि अपनी भाभी के चेहरे पर पड़ी तो उसने देखा कि वह एकदम पीली पड़ गई थीं। उनके नेत्र रक्त-वर्ण होगए थे। उनसे पीड़ा बरस रही थी। मानो अभी-अभी कुछ क्षण पूर्व उन्होंने रोना बन्द किया था।

राजरानी ने अपनी भाभीजी के हृदय और वाणी की पीड़ा का अनुभव कर अपनी वेदना को हृदय में ही समेट लिया। वह सरल वाणी में बोली, "भाभीजी ! मैं सचमुच बहुत भयातुर होउठी हूँ। मुझे लग रहा है कि मेरा जीवन एकदम शुष्क होगया। उसका सारा रस, सारा मिठास और सब कुछ किसी ने सोख लिया। मेरा सब साहस समाप्त होगया। मेरा बदन मुझे लग रहा है, गतिहीन होगया। मस्तिष्क ने काम करना बन्द कर दिया। लगता है जैसे मुझमें कुछ रहा ही नहीं। यह शरीर का ढांचा निष्प्राण खड़ा है।

इस बीच मैंने कई बार उठ-उठकर आपके पास तक आने का प्रयास किया, परन्तु दो कदम न चल सकी। में हताश होकर वहीं फर्श पर गिर पड़ी।"

शीलकुमारी ने राजरानी को सस्नेह अपने कमरे में ले जाकर पलँग पर लिटाया और उसके बालों को सहला कर बोलीं, "ऐसे वीर भाई को खोकर किस बहिन का हृदय विदीर्ण न होउठेगा राज तुम्हारा व्याकुल होना स्वाभाविक ही है, परन्तु फिर भी समझदारी से काम लेना चाहिए। मैं जानती हूँ कि ऐसे आपत्तिकाल में समझ खराब हो जाती है, परन्तु यदि तुम इस प्रकार दुखी होगी तो सोचो तुम्हारी भाभी की क्या दशा होगी ? मेरी तो एक मात्र सहारा तुम ही हो इस आपत्ति-काल में।"

राजरानी ने अपनी भाभीजी की ओर देखा तो उसे लगा कि मानो

करुणा की साक्षात् प्रतिभा उसके समक्ष खड़ी थी। राजरानी तनिक संभलकर बोली, "भाभीजी ! यह भी तो सम्भव है कि भय्या अभी जीवित ही हों और वह भी……।" राजरानी ने अपनी चुन्नी में अपना मुँह छिपा लिया और वह एक बार फिर हिड़क-हिड़क रोउठी।

शीलकुमारी राजरानी को सांत्वना देने के स्वर में बोलीं, "सम्भव क्यों नहीं है राज ! सभी कुछ सम्भव है।"

राजरानी ने अपना सिर भाभीजी की गोद में रखकर धीरे-धीरे सुबकना बन्द किया। वह किसी प्रकार अपना मांसिक संतुलन सँभालने का प्रयास कर रही थी, परन्तु भय्या धीरसिंह और मेजर वीरसिंह की स्मृति उसे बार-बार व्याकुल कर देती थी। उसके हृदय में एक टीस-सी उठती थी और चित्त उद्विग्न होउठता था।

शीलकुमारी धीरे-धीरे अपने को सँभाल कर बोलीं, "राज ! हमारे देश पर शत्रु ने आक्रमण किया हुआ है। देश भयंकर संकटकालीन स्थिति से गुजर रहा है। ऐसी दशा में हम पर जो भी आपत्ति आए उससे घबराना नहीं चाहिए। हमारे मनों में इस समय भारत की विजय और शत्रु की पराजय के अतिरिक्त अन्य कोई विचार आना ही नहीं चाहिए।

हमारा देश विजयी हुआ तो हमारे घाव भी धीरे-धीरे भर जायेंगे। हँसते-रोते हम लोग अपनी जिन्दगी के दिनों को काट ही लेंगे। भारत माता के खिलते हुए स्वप्नों को देखकर हमारे होंठ भी मुस्करा उठेंगे।

तुम रोओ नहीं राज ! यह रोने का समय नहीं है।"

राजरानी ने धैर्य धारण कर अपनी भाभीजी की ओर देखा। उसने उनकी आँखों में झाँककर देखा कि किस प्रकार उन्होंने उमड़कर उठने वाले भयंकर बादलों को उनमें समेट रखा था। उसके कान अपनी भाभीजी की गोद में पड़े उनके हृदय की धड़कनों को सुन रहे थे।

उसकी भाभी जी के धैर्य ने उसे बल दिया, साहस प्रदान किया।

वह उठकर बैठी होगई और आँचल से आँखें पोंछ कर बोली, "भाभी जी ! अब कल से आप देखेंगी कि मैं अपना सारा समय 'महिला-रक्षा केन्द्र' का कार्य-भार सम्भालने के लिए दूंगी ।

राजरानी की बात सुनकर शीलकुमारी के होठों पर मुस्कान खिल उठी । वह बोलीं, "नहीं राज ! तुम्हें अपना पूरा समय अपनी परीक्षा के लिए लगाना है । 'महिला रक्षा-केन्द्र' का कार्य-भार सँभालने के लिए तुम्हारी भाभी काफ़ी सशक्त हैं ।

यह युद्ध हमारे राष्ट्र की प्रगति को नहीं रोक सकता, बच्चों की क्षा पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए । वह कार्य अबाध गति से चलना चाहिए । हां, जो समय तुम्हें पढ़ाई के बाद मिलता है उसका उपयोग तुम सहर्ष केन्द्र के लिए कर सकती हो ।"

वह रात इसी प्रकार व्यतीत होगई । शीलकुमारी और राजरानी प्रयास करने पर भी सो नहीं सकीं । शीलकुमारी ने संकल्प किया कि जिन चीनी राक्षसों ने उनके पति को उनसे छीना है उन्हें मिटाने के लिए राष्ट्र के रक्षा-प्रयत्नों में वह अपना सम्पूर्ण जीवन लगा देंगी ।

—७—

दूसरे दिन शीलकुमारी समय से पूर्व ही 'महिला-रक्षा केन्द्र' के कार्यालय में पहुँच गई। आज उन्होंने कार्यालय में पहुँचकर, उसकी सम्पूर्ण व्यवस्था को बदला और उसमें जो-जो अव्यवस्थाएँ थीं, उन्हें व्यवस्था में लाई। आज उनके जीवन में एक नया मोड़ आगया था।

आज के इस कार्यालय की व्यवस्था बतला रही थी कि आज उसे जिसने व्यवस्था दी थी उसने जीवन भर उसी कार्य को करने का दृढ़ संकल्प किया था। उसे अब जीवन में उस कार्य के अतिरिक्त अन्य कोई कार्य नहीं करना था। वह महिला अब अपने जीवन को इस कार्य के लिए समर्पित करके आई थी।

बहिन सुभद्रादेवी पर कल के रेडियो समाचार ने आपत्ति का पर्वत गिरा दिया था। उनका एकमात्र पुत्र मेजर वीरसिंह उनके जीवन की वह निधि थी, जिसके विछोह ने उन्हें व्याकुल बना दिया था। रात्रि भर वह उसी के शोक में सो नहीं सकी थीं, कुछ खा पी भी नहीं सकी थीं। परन्तु फिर भी उन्होंने धैर्य धारण किया, यही सोचकर कि उनके पुत्र ने देश-सेवा में अपने प्राण न्यौछावर किये थे।

सुबह उन्हें ध्यान आया कि सम्भव है आज शीलकुमारी 'महिला रक्षा-केन्द्र' में न आसकें क्योंकि कल के रेडियो-समाचार ने उनका मांसिक सन्तुलन खराब कर दिया होगा। इसलिए वह तुरन्त साड़ी बदल कर कार्यालय के लिए रवाना होगईं।

वह कार्यालय में पहुँचीं तो उन्होंने देखा कि शीलकुमारी उनके पहुँचने से पूर्व वहाँपहुँच चुकी थीं और कार्य में व्यस्त थीं। उन्हें कार्यालय में कार्य-व्यस्त देखकर उनका हृदय खिलउठा। उनके चेहरे पर मुस्कान

खिल उठी। उनके होंठ धीरे से फड़फड़ाए और उनसे अस्फुट शब्द निकले, 'भारतीय देवियों का सुहाग लूटने वाले पिशाच चीनियो! भारतीय सीमा पर आक्रमण करके तुम प्रसन्न हो रहे होगे और अपनी सफलता पर तुम्हें गर्व होगा, परन्तु याद रखो कि भारतीय नारियों के हृदय की धधकती हुई ज्वाला तुम्हारे सर्वनाश का कारण बनेगी। भारत की देवियों के हृदयों में उठने वाला तूफान तुम्हें उठाकर भारत की सीमाओं से बाहर फेंक देगा।' इतना कहकर उनका सिर भारत की इस कर्त्तव्यपरायण नारी के समक्ष आदर-भाव से झुक गया।

सुभद्रादेवी ने कार्यालय में प्रवेश किया तो शीलकुमारी ने खड़ी होकर आदर-भाव से उन्हें नमस्कार किया और फिर विनम्र वाणी में बोलीं, कल रेडियो का हृदय-विदारक समाचार प्राप्त कर मुझे आपके पास आना चाहिए था, परन्तु आ न सकी क्योंकि मेरा अपना ही मांसिक संतुलन खराब होगया था। फिर राजरानी को सम्भालने में मुझे बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ा।

जिस समय आने का विचार हुआ तो घड़ी में बारह बज चुके थे। इस समय कार्यालय का कार्य संचालित करके मैं आपके दर्शन करती, सो आप स्वयं ही आगई।

मेजर वीरसिंह के विषय में इस घातक घटना का समाचार प्राप्त कर हृदय विदीर्ण होगया।"

अब दोनों आमने-सामने कुर्सियों पर बैठ गई थीं। शीलकुमारी के याद दिलाने पर हृदय का घाव फिर हरा होगया। सुभद्रादेवी के नेत्रों के सम्मुख मेजर वीरसिंह की साकार प्रतिमा आकर खड़ी होगई। उनके नेत्र पसीज आए। वह मेजर वीरसिंह की स्मृति में कुछ खो सी गई। उनके हृदय की वेदना उनकी वाणी में उभर आई और उनके होंठ फड़फड़ा उठे। बोलीं, "शीलकुमारी! इस घटना ने सचमुच मुझे आधार विहीन-सा कर दिया। मेरे जीवन का वह प्रेरणा-स्रोत था।

उसके लिए मैं पता नहीं क्या-क्या बातें सोचा करती थी। मेरे जीवन की वह मधुरतम कल्पना थी और अपने पिताजी की पवित्र पावन स्मृति।

वीरसिंह का जन्म उसके पिताजी की मृत्यु के तीन माह पश्चात् हुआ था शीलकुमारी! मेरी आयु केवल बीस वर्ष की थी उस समय जब वीरसिंह के पिता जी की मृत्यु हुई।

वीरसिंह के पिता जी शिक्षित थे, परन्तु मैं एक फूटा अक्षर भी नहीं पढ़ी थी। हमारी आर्थिक स्थिति भी बहुत खराब थी। मैं पास के एक मन्दिर में पूजा के लिए जाया करती थी। उस मन्दिर का पुजारी एक वृद्ध ब्राह्मण था वह बहुत दयालु व्यक्ति था। उसीने मुझे अक्षर-ज्ञान कराया। मैं जीवन में उसके ऋण से कभी उऋण नहीं होसकती।

मैंने यह अध्यापन कार्य शीलकुमारी केवल इसीलिए प्रारम्भ किया कि जिससे मेरे पति की आत्मा मुझे अपने पुत्र को शिक्षित न करने का दोषी न ठहरा सके।

आज वह अभिप्राय भी समाप्त होगया शीलकुमारी। जिसके लिए यह सब कुछ किया वह प्रयोजन ही नष्ट होगया।" कहकर सुभद्रादेवी के हृदय से एक टीस-सी निकल गई। उनके नेत्रों से टपाटप अश्रुओं की झड़ी लगगई। वह विह्वल होकर बोलीं, "शीलकुमारी! आज मैंने अपना अध्यापन कार्य भी छोड़ दिया। मैं अब यह कार्य कर नहीं सकती। मैंने यह कार्य वीरसिंह के लिए ही किया था। जब वह ही नहीं रहा तो······।" कहते-कहते उनका गला रुँध गया।

वह कुछ ठहरकर बोलीं! अब मैं विद्यालय नहीं जा सकती शील-कुमारी! इसीलिए चेयरमैन साहब के पास अपना त्याग-पत्र भेज आई हूँ। अब मैं विद्यालय की ओर मुँह करके खड़ी नहीं होसकती। उधर देखती हूँ तो वीरसिंह की सूरत मेरी आँखों के समक्ष आकर खड़ी हो जाती है।"

शीलकुमारी ने बहिन सुभद्रादेवी की हार्दिक पीड़ा का अनुभव किया। उन्होंने देखा कि सचमुच सुभद्रादेवी के बुढ़ापे की लकड़ी टूट गई थी। जिस स्वप्न को लेकर उन्होंने अपने वैधव्य को सार्थक बनाया था, वह आज पानी का बुलबुला बनकर फूट गया। सुभद्रादेवी के शोक में उनकी आँखें भीग गई। वह विह्वल होकर बोलीं, "बहिन सुभद्रादेवी! आपके सिर पर आपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा। विधाता ने आपका सर्वस्व छीन लिया। आपके सपनों की दुनियाँ उजाड़कर रखदी। मैं माँ नहीं हूँ, परन्तु माँ की ममता को समझने की क्षमता अवश्य है मुझमें। परन्तु अब जो हो चुका उसपर पश्चात्ताप व्यर्थ है। आप उस दिन को याद करिए जिस दिन आपकी दुनियां उजड़ी थी, आपके सुहाग का सिंदूर पुँछा था, आपके हाथों की चूड़ियाँ फूटी थीं। उस समय आपके जीवन पर आपत्ति के काले बादल मँडराए थे, वे कुछ कम भयंकर थे क्या आज से? जीवन में रह क्या गया था उस समय? सभी कुछ तो समाप्त होगया था। परन्तु परमात्मा की फिर मेहर हुई और जीने का सहारा मिल गया।

यह सत्य है कि तावांग और सेला की चौकियों पर चीनियों का अधिकार होगया है और वहाँ के भारतीय जवानों का अभी कोई समाचार प्राप्त नहीं, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि वहाँ हमारे जितने भी जवान थे वे सभी हताहत होगए। हमें अभी इस प्रकार निराश नहीं होना चाहिए।"

शीलकुमारी के इन आशापूर्ण शब्दों ने बहिन सुभद्रादेवी के पुराने बदन में नवीन-जागृति का संचार किया। उन्होंने मन-ही-मन शीलकुमारी के साहस और उनकी समझदारी की सराहना की और आशा-भरी दृष्टि से उनकी ओर देखकर बोलीं, "शीलकुमारी! तुमने मुझे अथाह समुद्र में डूबते-डूबते तिनके का सहारा देदिया। हमें सचमुच अभी इतना निराश नहीं होना चाहिए। पता नहीं भविष्य के गर्त में क्या छिपा है।

उनकी मृत्यु का तो अभी कोई समाचार नहीं मिला।" वह कुछ ठहर कर बोलीं, "सम्भव है तुम्हारे पति भी......।" कहते-कहते उनका गला फिर रुँध गया।

शीलकुमारी सूखी मुस्कराहट होटों पर लाकर बोलीं, "बहिन सुभद्रादेवी! अब इस दिशा में विचार करना बन्द कर हमें अपने महिला रक्षा-केन्द्र' के विषय में सोचना और कार्य करना चाहिए। जो हो चुका उसे हम बदल नहीं सकतीं और जो होगा वह समक्ष आजाएगा।

हमें अब 'महिला-रक्षा-केन्द्र' को केवल इस केन्द्र की चार दीवारी तक ही सीमित नहीं रखना है। हम अब इसकी शाखाएँ जैपुर के हर गली, मुहल्ले में खोलेंगी और घर-घर में इसका कार्य-क्रम प्रारम्भ करेंगी। हमारे नगर का हर घर हमारे जवानों की आवश्यकता-पूर्ति का कारखाना बनेगा। जिस कार्य को हम कर सकते हैं उसके लिए हम किसी अन्य पर निर्भर होकर क्यों रहें?"

सुभद्रादेवी उत्साहपूर्ण स्वर से बोलीं, "शीलकुमारी! मैं तुम्हारे सुझाव का हृदय से स्वागत करती हूँ और विश्वास दिलाती हूँ कि अपने दिन रात के अनथक परिश्रम से मैं जैपुर के हर घर को जवानों के लिए जर्सियाँ और जुर्राबें बुनने का कारखाना बनाकर छोड़ूँगी।"

इतना कहकर वह कुर्सी से उठ खड़ी हुई और बोलीं, "अपने कार्यालय को सँभालो शीलकुमारी! मैं नगर का दौरा करने जारही हूँ। देखती हूँ इन बूढ़ी हड्डियों में अब कितनी जान शेष है।"

शीलकुमारी खड़ी होकर बाहर तक बहिन सुभद्रादेवी के साथ गई और उन्हें उनकी फिटन में बिठला कर बोलीं, "आपने विद्यालय के कार्य से त्याग-पत्र देदिया, यह उचित नहीं किया। आप जैसी अधिष्ठात्री का किसी विद्यालय को प्राप्त होना उस विद्यालय और उसकी छात्राओं के जीवन की आधार-शिला के सामन है।"

ये बातें हो ही रही थीं कि तभी सामने से विद्यालय के चेयरमैन

साहब आगए। उन्होंने सुभद्रादेवी को सादर प्रणाम करके कहा, "माता जी! आपने यह क्या किया? क्या आप उस विद्यालय को बन्द होता देख सकेंगी जिसके लिए आपने गले में झोली डालकर नगर में घर-घर भिक्षा माँगी है। आपके ऊपर जो विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा है उससे मैं अपरिचित नहीं हूँ, परन्तु यह विद्यालय भी तो आपकी ही सन्तान है।"

चेयरमैन साहब की करुण-वाणी सुनकर सुभद्रादेवी द्रवित होउठीं। वह ना न कर सकीं और उनके साथ वहाँ से सीधी पाठशाला चली गईं; परन्तु आज वहाँ वह अधिक न ठहर सकीं। थोड़ी ही देर पश्चात् राजरानी को अपने साथ लेकर घर चली गईं।

सुभद्रादेवी और शीलकुमारी के अनथक प्रयास ने सचमुच जैपुर के घर-घर को जवानों के लिए जर्सियाँ और जुर्राबें बुनने का कारखाना बना दिया। उन्होंने एक सप्ताह में पाँच सौ जर्सियाँ और एक हजार गर्म जुर्राबें तय्यार करके आज जन-समारोह के बीच भारत के रक्षा मंत्री को भेंट कीं।

आज का समारोह बहुत शानदार रहा। उस अवसर पर 'कला-केन्द्र' ने जो प्रदर्शन किया, उसे देखकर दर्शक दंग रहगए। उसमें गाया गया हर गीत हृदय को छूता चला जाता था। उसके नृत्य तांडव-भूमिका प्रस्तुत करने वाले थे।

समारोह जैपुर में पहले भी अनेकों हुए, परन्तु जो ख्याति इस समारोह को प्राप्त हुई, वह अन्य कोई समारोह प्राप्त न कर सका।

राजरानी की भूमिका इस समारोह में सबसे अधिक प्रभावशाली और आकर्षक थी। उसके स्वरों में देश-भक्ति की वह हृदय हिला देने वाली झंकार थी कि सम्पूर्ण वायु मंडल स्तब्ध होउठा। उसके करुण-स्वरों ने पाषाण-हृदयों को भी द्रवित कर दिया था। उसके नूपुरों की झंकार में रायफ़ल की गोलियों का स्वर था। उसकी एड़ियों की आवाज़ में सैनिकों के पर्वत-शिखर पर आगे बढ़ते कदमों का निमंत्रण था।

वह समारोह रक्षा-कोष के लिए किया गया था और उसमें उन्हें आशातीत सफलता मिली। उससे प्राप्त धन-राशि को सुभद्रादेवी ने रक्षा-मन्त्री को भेंट किया।

रक्षा-कोष के लिए वह राशि और 'महिला रक्षा केन्द्र' की भेंट स्वीकार करते हुए उन्होंने कहा, "आज के इस समारोह और इसकी

पृष्ठभूमि में हुए कार्य-क्रम की मैं हृदय से सराहना करता हूँ। ऐसे समारोह देश में उसकी सुरक्षा के प्रति बहुत अनुकूल वातावरण बना सकते हैं।"

समारोह के पश्चात् सुभद्रादेवी शीलकुमारी और राजरानी के साथ उन्हीं की कोठी पर चली गईं। जिस समय कोठी पर पहुँचीं तो रेडियो पर समाचार प्रसारित होने का समय होगया था। राजरानी ने आगे बढ़कर रेडियो खोल दिया।

लद्दाख में चिशूल और पूर्वी सेक्टर में फुट-हिल्स पर भारतीय सेना और चीनी सेना के बीच जमकर युद्ध होरहा था। भारत को अमरीकी और अंग्रेजी हथियारों की सहायता मिल चुकी थी। भारतीय वीर जम कर शत्रु से लोहा लेरहे थे।

शीलकुमारी सोफे पर बैठकर बोली, "बहिन शुभद्रादेवी! जैसा यह युद्ध होरहा है ऐसे युद्ध की संसार के इतिहास में मिसाल मिलनी कठिन है। ऐसा कहीं और कभी आज तक नहीं हुआ जहाँ किसी देश ने अपने ऐसे पड़ौसी देश पर धोखे से आक्रमण किया हो जिसने उसकी ओर मित्रता और सहयोग का हाथ ही नहीं बढ़ाया, वरन् सहयोग प्रदान किया हो, जिसने उसके अस्तित्व को मान्यता प्रदान की हो और संसार की अदालतों में अपने बहुत से मित्र देशों को असंतुष्ट करके उसकी वकालत की हो। नेकी का बदला बदी में देने का इसने बड़ा उदाहरण संसार के देशों को और कहीं प्राप्त नहीं होगा।

चीन ने अपनी युद्ध-नीति से साम्यवाद की भावना और उसके मूल सिद्धान्त को दूषित किया है। भारत की शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की नीति को भारत की दुर्बलता समझने वाले चीनी नेताओं को इतिहास बतलाएगा कि उनसे बड़े बज्र मूर्ख आज तक संसार की राजनीति में कहीं और कभी पैदा नहीं हुए। उन्होंने भारतीय नेताओं जैसे समझदार, शांतिप्रिय और सहयोगी मित्रों के साथ विश्वासघात किया, रूसी नेताओं के मानवीय व्यवहारों को प्रतिक्रियावाद कहकर अपमानित किया, अपने देश के जन-

चीनी नेताओं ने चीनी मानव को पशु बना दिया ।

अपनी भूल को भूल मानना चीन के अनाड़ी नेता नहीं जानते । सच यही है कि चीनी नेताओं ने यह भूल नहीं की । उन्होंने शतरंज की गहरी चाल चली थी, चौपड़ पर एक पासा फेंका था । चाल गलत हो गई, कौड़ियाँ उल्टी पड़ीं ।

चीनी सेना अब फँस गई है । जहाँ तक वह आगे बढ़ आई हैं उससे एक इंच भी आगे बढ़ना अब उनके लिए असम्भव है । भारतीय सेना आधुनिकतम हथियारों से लैस होती जारही है । उसके पास अब परि-वहन साधनों की भी कमी नहीं रहगई है । उसके विपरीत चीनी सेना के समक्ष अब वे कठिनाइयाँ आकर उपस्थित होचुकी हैं जो अभी तक भारतीय सेना के समक्ष थीं । उन्हें दिखाई देने लगा है कि अब यदि और युद्ध जारी रखा तो निश्चय ही उनका एक भी सैनिक वापस नहीं लौट सकेगा ।"

बहिन सुभद्रादेवी शीलकुमारी की बातों को बड़े ध्यान से सुन रही थीं । चीनी युद्ध की गहन समस्या का विश्लेषण उन्हें जितना सुन्दर शीलकुमारी से प्राप्त होता था उतना अन्यत्र नहीं मिलता था । इसीलिए वह जितनी देर भी शीलकुमारी के पास बैठती थीं उनकी इच्छा यही बनी रहती थी कि शीलकुमारी उस समस्या पर प्रकाश डालती रहें ।

शीलकुमारी गम्भीर वाणी में बोलीं, "धूर्त कहीं के । हमारी छाती पर तोपों और मार्टगनों से लैस सेना को चढ़ाकर ये चीनी नेता शांति का स्वर अलापना चाहते हैं । युद्ध में हथियाए हमारे भू-भाग पर अपनी प्रभु-सत्ता जमाने की हथकण्डे बाजी करना चाहते हैं ।

यह कभी सम्भव नहीं होगा । आक्रांता के साथ भारत कभी दबकर सन्धि नहीं करेगा । ये चीनी यदि खैर चाहते हैं तो इन्हें वापस लौट जाना होगा और आगे बढ़ना मृत्यु के मुख में झुकने से अधिक और कुछ नहीं है ।

आज बीस नवम्बर का दिन था। सम्पूर्ण भारत में युद्ध की सनसनी थी। सारे राष्ट्र में बेचैनी थी। भारतीय जवानों ने त्रिशूल और फुट-हिल्स की पहाड़ियों पर अपने सीने टिका दिए थे। यह भारतीय राष्ट्र के जीवन और मरण का प्रश्न था। भारतीय नेता राष्ट्र-बल जागृत करने और युद्ध-सामग्री जुटाने में संलग्न थे। सम्पूर्ण राष्ट्र एक स्वर से चीनी आक्रमण की निंदा कर उससे लोहा लेने को उद्यत था।

शीलकुमारी और राजरानी सुभद्रादेवी को उनके घर तक छोड़कर आईं।

दूसरे दिन चीनी नेताओं के हौसले पस्त होगए। इक्कीस नवम्बर को उन्होंने इकतर्फा युद्ध-विराम की घोषणा की तो सुभद्रादेवी अपने मकान पर बैठी न रहसकीं। उन्होंने अपने साईस को तुरन्त फिटन जोतने की आज्ञा दी और वह उसपर बैठकर शीलकुमारी की कोठी पर आगईं।

सुभद्रादेवी के चेहरे पर प्रसन्नता आच्छादित थी। वह छूटते ही बोलीं, "शीलकुमारी! तुम्हारी भविष्य-वाणी सोलहों आने पूर्ण उतरी। चीनी सेना के हौसले आखिर पस्त हो ही गए। इतनी मूर्खता और रक्त-पात के पश्चात आखिर उन्हें शान्ति और सुलह की बात सूझी।"

शीलकुमारी मुस्कराकर बोलीं, "चीन और शांति! चीनी नेताओं का शांति से क्या सम्बन्ध बहिन सुभद्रादेवी! ये लोग अब अपनी जान बचाकर भाग रहे हैं। अब ये समझ चुके हैं कि भारत इनकी बन्दर-घुड़की के सम्मुख घुटने टेकने वाला नहीं है। चीनी नेता यह आक्रमण करके चौबे से छब्बे बनने चले थे, परन्तु अपनी मूर्खतावश दूबे भी न रहे। भारत की मित्रता से तो हाथ धोने ही पड़े, रूस पर भी इनकी कलई खुलगई।

अब इनका तमाशा देखने का समय आया है। आप देखिए, भारतीय राजनीति के तपे-मंजे नेता अब कैसे इनकी छिछली राजनीति के परखचे उड़ाते हैं। प्याज के बक्कलों की तरह इनका एक-एक पर्त उतारकर न फेंक दिया तो तब कहना।

भारतीय नेता इस समय राजनीति के कठिनतम दौर से सफलतापूर्वक बाहर निकल चुके हैं। भारत की तटस्थता की नीति सफल सिद्ध हुई है। रूस की शंकाएँ भी समाप्त होगईं। उसने अपने भारत के साथ किए समझौतों में थोड़ी-सी ढील डाली थी। वे देखना अब कितनी तीव्र गति के साथ पूरे होते हैं। चीनी मूर्ख नेताओं का भारत की सीमा पर यह आक्रमण भारत के लिए वरदान सिद्ध होगा। इसने भारतीय नेताओं को सजग कर दिया और पूरी तरह समझा दिया कि चाहे हमारे देश की कैसी भी शांतिप्रिय नीति क्यों न रहे परन्तु राष्ट्र की सुरक्षा के लिए हर समय सजग रहने को सैनिक-शक्ति में ढिलाई करना एक भयंकर राजनीतिक भूल होगी।"

सुभद्रादेवी उत्साहपूर्ण स्वर में बोलीं, "तब तो हमें 'महिला-रक्षा-केन्द्र' के कार्यक्रम को अब और भी तीव्र गति के साथ संचालित करना चाहिए।"

"इसमें सन्देह क्या है? मैंने तो जब से यह समाचार सुना है तभी से 'महिला-रक्षा-केन्द्र' को अखिल भारतीय रूप देने का निश्चय करलिया है।" इतना कहकर वह अपना पेड उठालई और उसमें से कुछ मुख्य बातें सुभद्रादेवी के सम्मुख रखकर बोलीं, "मैंने यह संक्षेप में इसकी रूपरेखा तय्यार की है।"

उसे सुनकर सुभद्रादेवी गद-गद होकर बोलीं, "अरे! यह तो तुमने इसका पूरा संविधान ही तय्यार कर डाला। तुम्हारी कल्पना वास्तव में सराहनीय है शीलकुमारी! मेरा विचार हैं कि यदि तुम इसे रक्षा-मंत्रालय के पास भेजो तो निश्चित रूप से तुम्हें रक्षा-मन्त्रालय का सहयोग प्राप्त होगा।"

शीलकुमारी ने मुस्कराकर कर कहा, "निकट भविष्य में ही हमारे रक्षा-मन्त्री जयपुर का दौरा करने वाले हैं। तब तक हम लोग इसके पूरे कागजात तय्यार कर लेंगे और तभी उनसे भेंट करके अपनी योजना उनके समक्ष प्रस्तुत करेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह इस उपयोगी

संस्था को अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।"

ये बातें चल ही रही थीं कि राजरानी की कुछ सहेलियाँ वहाँ आ गईं। शीलकुमारी ने उन्हें बड़े प्यार से ड्राइँगरूम में बिठाकर राजरानी को वहाँ बुला दिया और स्वयं सुभद्रादेवी के साथ 'महिला-रक्षा-केन्द्र' की ओर प्रस्थान किया।

—६—

हास्पिटल में पहुँचने पर ब्रिग्रेडियर धीरसिंह की चिकित्सा की गई। उन्हें उचित औषधियाँ मिलने से उनका घाव भी भरने लगा तथा बदन में भी कुछ हरकत-सी महसूस हुई।

बदन से रक्त बहुत निकल गया था और डाक्टरी सहायता बहुत देर से मिल सकी थी, इसलिए बदन बहुत क्षीण होगया था। दो-तीन दिन तक तो वह अचेत ही पड़े रहे। दूध भी उन्हें नली से पिलाया गया। आज उन्होंने आँखें खोली थीं और धीरे-धीरे कुछ बोलने का भी प्रयास किया था मेजर वीरसिंह से, परन्तु कंठ से स्वर नहीं निकला।

ब्रिग्रेडियर धीरसिंह ने अपनी दृष्टि इधर-उधर फैलाकर कुछ देखना चाहा परन्तु पहचान नहीं सके कुछ और फिर नेत्र बन्द कर लिए।

ब्रिग्रेडियर धीरसिंह के नेत्र खोलने से मेजर वीरसिंह के हर्ष का पारावार न रहा। उन्हें विश्वास होगया कि ब्रिगेडियर धीरसिंह अब बच जाएँगे।

संध्या समय तक फिर ब्रिगेडियर धीरसिंह ने नेत्र नहीं खोले, परन्तु अब उनका बदन कभी-कभी कुछ हरकत कर रहा था। उन्होंने कई बार अपने दोनों हाथ हिलाए और आँखें खोलने का प्रयास किया।

लगभग सात बजे ब्रिगेडियर धीरसिंह ने फिर नेत्र खोले और मेजर वीरसिंह को अपनी बैड के पास खड़े पाया। उन्होंने तनिक अपनी दृष्टि को इधर-उधर फैलाकर धीरे से फुसफुसाया, "मेजर वीरसिंह! हम लोग कहाँ हैं इस समय?"

मेजर वीरसिंह ने उनसे भी धीमे स्वर में उत्तर दिया, "हम लोग चीनियों की कैद में है।" बस इतना ही कहकर वह मौन होगए। इसके

अतिरिक्त उन्होंने एक शब्द भी न कहा।

ब्रिगेडियर धीरसिंह ने वह सुनकर तुरन्त अपने नेत्र बन्द कर लिए। मेजर वीरसिंह ने देखा कि उनके मस्तक पर गम्भीर सिलवटें पड़ गई और चेहरे पर न जाने कहाँ से रक्त झलक आया।

उसी समय चीनी डाक्टर वहाँ आगया। उसने ब्रिगेडियर धीरसिंह को देखकर पूछा, "मेजर साब! आपका ब्रिगेडियर को होश आया।"

"आँखें तो खोली थीं अभी और कुछ फुसफुसाया भी था, परन्तु अस्पष्ट था सब कुछ। कुछ समझ में नहीं आया, क्या कहा?"

"सबल होजाएगा। सब ठीक होजाएगा। हमने बोत बरिया दवा दिया है।" डाक्टर बोला, "आपका ब्रिगेडियर एकदम ठीक होजाएगा।"

"धन्यवाद!" मेजर वीरसिंह ने कहा।

"धन्यवाद का बात नई है मेजर साब! हमारा देश संसार का हर मानव को प्यार करता है। हम साम्यवादी हैं।" डाक्टर बोला, "हम लोग सबका जीना और जिलाना चाहता है।"

मेजर वीरसिंह सचमुच चीनियों के व्यवहार से बहुत प्रभावित हुआ था। वह सोचता था कि वे चाहते तो ब्रिगेडियर धीरसिंह को वहीं गोली मारकर किसी खंदक में फेंक आते। उन्होंने उन्हें उठालाने की अनुमति दी और फिर वहाँ आकर पूरी डाक्ट्री सहायता का प्रबन्ध किया। उन्हें चीनियों से ऐसे सद्व्यवहार की आशा नहीं थी।

एक ओर चीनियों का यह सुन्दर व्यवहार और दूसरी ओर भारत की सीमा पर वह बर्बरतापूर्ण आक्रमण, कुछ समझ में नहीं आया मेजर वीरसिंह की। उसकी विचारधारा रुक गई। वह ब्रिगेडियर धीरसिंह की बेड के पास स्टूल पर बैठ गए और घंटों इसी समस्या पर विचार करते रहे।

ब्रिगेडियर धीरसिंह का हृदय बहुत व्याकुल था इस समय। उन्हें

रह-रहकर अपने से घृणा होती जारही थी। वह कौन-सा मुँह लेकर अब जीवित रह सकेंगे, सोच रहे थे।

ग्लानि से उनका हृदय और मस्तिष्क विचलित होउठे थे।

आज तीन दिन पश्चात् सचेत होकर भी वह अचेत से होगए थे। उनका हृदय आत्मिक पीड़ा से कराह रहा था। उनका श्वाँस बड़ी तीव्र गति से चलने लगा था। उनके चेहरे पर कई प्रकार का परिवर्तन होता मेजर वीरसिंह ने स्पष्ट देखा।

ब्रिगेडियर धीरसिंह को आँखें खोलते कष्ट होता था। शत्रु की कारावास में उनका दम घुट रहा था। उन्हें लग रहा था, जैसे उन्हें श्वाँस लेने में भी कठिनाई होरही थी।

उसी समय चीनी सारजेन्ट हास्पिटल का दौरा करता हुआ वहाँ आया। उसने मेजर वीरसिंह से पूछा, "मेजर साब! अब आपका ब्रिगेडियर का तबियत कैसा है? हमारा डाक्टर ने हमें बताया कि तुम्हारा ब्रिगेडियर ने अभी-अभी आँख खोला था।"

"जी हाँ!" मेजर वीरसिंह ने कहा, "आँखें तो खोली थीं, परन्तु फिर बन्द करलीं। दशा अभी कुछ अधिक ठीक नहीं मालूम देती।"

"सब ठीक होजाएगा मेजर साब! तुम चिन्ता नई करो। हमने तुम्हारा ब्रिगेडियर का बहुत अच्छा इलाज करने की आज्ञा दी है।

आओ, आप हमारा साथ आओ। आप यहाँ इन बीमारों में पड़ा रहकर स्वयं भी बीमार होजाएगा।" चीनी सारजेन्ट बोला। उसके शब्दों में मिठास था। शत्रु के जैसे शब्द नहीं थे उसके।

सारजेन्ट के साथ कहीं जाने की इच्छा न होने पर भी मेजर वीरसिंह मना न कर सके। वह चुपचाप सारजेन्ट के साथ होलिये। सारजेन्ट बोला, "मेजर वीरसिंह! आप लोग हिन्दुस्तानी हम लोगों को भूल से अपना शत्रु समझने लगा है। हम आपको अपना भाई मानता है। हम हिन्दुस्तान का आदमी में और चीन का आदमी में कोई भेद

नई मानता। हम आपको अपना भाई मानता है।

आपने देखा, हमने आपके मुर्दा ब्रिगेडियर को जिन्दा कर दिया। म चाहता तो इन्हें वहीं खंदक में गोली मारकर फेंक आता।

हमारा देश को आपके नेताओं ने बहुत बदनाम किया है। आपका नेता कहता है हमारा देश में भुखमरी है। हमारा देश में सब तरह का मौज है। हम आपका देश में भी ऐसी ही मौज देखना चाहता है। हम चाहता है कि आपका देश का आदमी भी हमारी तरह मौज करे।"

मेजर वीरसिंह चुपचाप सारजेन्ट की बातें सुनता हुआ उसके साथ आगे बढ़ रहा था। वह बड़े ध्यान से उसकी बातें सुन रहा था।

थोड़ी ही देर में वे जिस कैम्प में पहुँचे, वहाँ चीनी सेना के कुछ और अफ़सर बैठे थे। उन सबने सारजेन्ट को खड़े होकर सेल्यूट दिया, और सारजेन्ट ने मुस्कराकर उसे ग्रहण किया।

सारजेन्ट जर वीरसिंह की ओर संकेत करके बोला, "आप मेजर वीरसिंह हैं, हमारा हिन्दी भाई। आज आप सबको हिन्दी भाई का स्वागत करना है। आपको बतलाना है कि हम लोग हिन्दुस्तानी भाई को कितना प्यार करते हैं।"

भोजन का समय होरहा था। सब लोग मिलकर भोजन-गृह में गए। बहुत ही शानदार भोजन मेज़ पर परसा गया, उतना बढ़िया जितन वीरसिंह ने कभी अपने मेस में नहीं खाया था।

बहुत बढ़िया किस्म की शराब पेश की गई।

मेजर वीरसिंह सकुचा रहा था। उसने जीवन में पहले कभी शराब नहीं पी थी। इधर हिमालय की बर्फीली हवा में एक बार शराब पीने का उसका मन होआया था, परन्तु तभी उसकी माता सुभद्रादेवी की आकृति उसके समक्ष आकर खड़ी होगई थी। उसने शराब नहीं पी। वह प्रयास करने पर भी उसे होठों के पास तक न लेजा सका।

आज शराब सामने आने पर उसकी फिर वही दशा हुई। वह कुछ भयभीत-सा होउठा। उसका सारा बदन काँपने लगा।

चीनी सारजेन्ट मेजर वीरसिंह के संकोच को भाँपकर बोला, "मेजर वीरसिंह ! अब आप हिन्दुस्तानी पिछड़ा हुआ देश में नई है। आपको हमारा प्रगति से कुछ सीखना है। शराब आदमी की जिन्दगी में जान डाल देता है। दिमाग का सब फ़ितूर को निकालकर बाहर फेंक देता है। आदमी को सब चिन्ता से मुक्त कर देता है।

आप हमारा कहने से आज शराब पीकर देखो। आपको दूसरी दुनियाँ दिखाई देगा। आप भी पीओ, हम भी पीता है।"

इतना कहकर चीनी सारजेन्ट ने अपने दोनों हाथों में दो गिलास उठाकर कहा, "हिन्दी चीनी भाई-भाई" और एक गिलास अपने होंठों से लगाकर दूसरा मेजर वीरसिंह के होठों से लगा दिया।

मेजर वीरसिंह चीनी सारजेन्ट को नाँ न कर सका। शराब का एक कड़ुवा घूँट ज्योंही उसके हलक से नीचे उतरा, त्योंही आरचेस्ट्रा का मधुर स्वर वहाँ के वायु-मण्डल में गूँज उठा।

मेजर वीरसिंह की दृष्टि उधर गई तो उसने देखा कि आरचेस्ट्रा की बगल का पर्दा हट गया और उसके अन्दर से चार-पाँच युवतियाँ नृत्य करती हुई बाहर निकल आईं। पर्याप्त आकर्षक प्रतीत हुईं वे उसे। नृत्य और संगति का मेजर वीरसिंह बचपन से शौकीन था। वह स्वयं बहुत अच्छा गाना, बजाना और नृत्य करना जानता था। वह प्रारम्भ से ही कला-प्रेमी था।

मेजर वीरसिंह ने जीवन में प्रथम बार शराब का घूँट भरा था, इसलिए थोड़ी ही पीने से वह आत्मविभोर होउठा। फिर उस पर वाद्य-संगीत और नृत्य का सुनहला आवरण चढ़ गया। वह एक नई दुनियाँ में पहुँच गया। एक रंगीन स्वप्न उसकी आँखों में खिल उठा।

चीनी सारजेन्ट मेजर वीरसिंह के कंधे पर हाथ रखकर बोला, "मेजर वीरसिंह ! यह हमारा भुखमरी वाला देश का मजा है। जब हमारा देश में भुखमरी नहीं रहेगा तो जानता है हमारा एक-एक जवान के पास ऐसा दस-दस आर्टिस्ट होगा।

आपको पसंद आया हमारा आर्टिस्ट। हमारा देश में आपको एक-से-एक सुन्दर आर्टिस्ट मिलेगा।"

मेजर वीरसिंह चुपचाप चीनी सारजेन्ट की बातें सुन रहा था। उसे आरचेस्ट्रा की धुन और नर्त्तकियों का नृत्य पसंद आया। शराब के खुमार ने इस धुन और नृत्य को और भी मधुर और आकर्षक बना दिया।

उसके पश्चात् भोजन परसा गया। सबने एक मेज पर बैठकर भोजन किया। चीनी अफ़सरों ने अपने कहकहों में "हिन्दी चीनी भाई-भाई" का स्वर कई बार बड़े नाटकीय ढंग से उच्चारण किया। मेजर वीरसिंह समझने में असमर्थ रहा कि उस पार्टी में इन शब्दों का सम्मान किया जारहा था या उपहास। उसकी आँखों के समक्ष इस समय चीन का एश्वर्यपूर्ण जीवन खड़ा था और कुछ नहीं।

भोजन के पश्चात् चीनी सारजेन्ट मेजर वीरसिंह को अपने कैम्प में लेगया। उसे आदर प्रदान करते हुए, बोला, "बैठिए मेजर साब! इस कैम्प को आप अपना ही कैम्प समझें।"

मेजर वीरसिंह कुर्सी पर बैठ गए।

चीनी सारजेन्ट बोला, "मेजर साब! आपको हम चीनियों के व्यवहार में कहीं शत्रुता की तो बू तो नहीं आई? हम लोग सचमुच हर हिन्दुस्तानी को अपना भाई मानता है। हम अपना पड़ौसी को बहुत प्यार करता है। हम दिल से चाहता है कि आपका देश भी हमारा देश का मानिन्द खुशहाल हो। आपका देश की गरीबी दूर हो और आपका हालत में सुधार हो।"

मेजर वीरसिंह ने बड़ा साहस करके इतनी देर पश्चात् तनिक जबान खोली। वह बोला, "सारजेन्ट साहब! इसमें कोई संदेह नहीं कि आपका व्यवहार हमारे प्रति बहुत सराहनीय रहा। हमें सचमुच स्वप्न में भी आपसे ऐसे सद्भावनापूर्ण व्यवहार की आशा नहीं थी। परन्तु एक बात मेरी समझ में नहीं आरही।"

"मेज़र साब ! आप हर बात हमसे पूछ सकता है। हम आपकी हर बात का जवाब देगा। आप प्रसन्नतापूर्वक पूछ सकता है।" चीनी सारजेन्ट बोला।

मेजर वीरसिंह ने कुछ सकुचाकर कहा, "मैं यह पूछना चाहता हूँ सारजेन्ट साहब ! कि जब आप चीनी लोग हमें सचमुच अपना भाई मानते हैं तो फिर आपको हमारे देश पर आक्रमण करने की क्या आवश्यकता थी ? आपने हमारे देश की सीमा पर यह उत्पात क्यों मचाया ?"

मेजर वीरसिंह की बात सुनकर चीनी सारजेन्ट पहले तो खिलखिला कर हँस दिया, बहुत देर तक हँसता रहा और फिर एकदम शान्त हो गया। उसके मस्तक पर गम्भीर सिलवटें पड़ गईं। वह बोला, "मेजर साब ! बस यही आपकी भूल है। आप लोग समझ रहे हैं कि हमने भारत पर आक्रमण किया। हम साम्यवादी देश कभी किसी देश पर आक्रमण नहीं करते। आपके नेताओं को पूंजीपति देशों ने धोखे में डालकर हमसे लड़वा दिया है। हम युद्ध बन्द कर रहे हैं।"

"सच !" आश्चर्यचकित होकर मेजर वीरसिंह की जबान से निकाला।

"बिलकुल सच मेजर साब ! हमने युद्ध बन्दकर दिया है। हमारी सेना वापस लौट रही है और आपका नेता अब भी युद्ध बन्द नहीं करना चाहता। आप नहीं जानते मेजर साब ! ये अमरीका का पूँजीपति युद्ध बन्द नहीं होने देना चाहता। ये मज़दूरों का खून चूसकर ऐश करने वाले देश भला कब चाहेंगे कि शान्ति हो ? हमारा नेता माऊ और चाऊ शान्ति के देवता हैं। हम सारा विश्व में शान्ति चाहता है।" इतना कहकर सारजेन्ट ने खड़ा होकर रैडियो खोल दिया, जिस पर चीन के प्रशंसात्मक धुँआधार समाचार प्रसारित किए जारहे थे। उन्हीं समाचारों में चीन की इकतर्फ़ा युद्ध-बन्दी का भी समाचार प्रसारित किया गया था।

वह सुनकर मेजर वीरसिंह का सिर चकरा गया। उसकी समझ में कुछ नहीं आया। वह समझ ही न सका कि आखिर वह सब क्या हो रहा था।

चीनी सारजेन्ट मेजर वीरसिंह के चेहरे पर आने-जाने वाले हाव-भावों को पढ़कर मुस्करा रहा था। वह मुस्कराता हुआ बोला, "आप ऐश करें, मेजर साब! हमारा चीन में तुम्हें हर प्रकार का आनन्द मिलेगा। हमारा पास रहकर आप जान जाएगा कि हमारा देश में कितना मौज है। हम चाहता है तुम्हारा भारत में भी ऐसा ही मौज हो।"

मेजर वीरसिंह को फिर चीनी सारजेन्ट ने हास्पिटल में ब्रिगेडियर धीरसिंह के पास पहुँचा दिया और चलते समय कहा, "हम आपको अपना भाई बनाकर रखेगा अपना पास। किसी बात का चिंता न करना मेजर साब! आपका साथी ब्रिगेडियर धीरसिंह बहुत शीघ्र ठीक होजायेंगे। हमने डाक्टर को उनकी विशेष चिकित्सा करने की आज्ञा दी है।"

"मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूँ।" कृतज्ञतापूर्ण स्वर में मेजर वीरसिंह ने कहा और वह हॉस्पिटल की ओर चल दिए।

ब्रिगेडियर धीरसिंह अब सचेत थे। दुर्बलता बहुत अधिक थी, परन्तु इधर-उधर देख सकते थे। उनकी आँखें मेजर वीरसिंह को खोज रही थीं। तभी मेजर वीरसिंह वहाँ पहुँच गए।

ब्रिगेडियर धीरसिंह की दृष्टि में मेजर वीरसिंह को देखकर प्रकाश उतर आया। मेजर वीरसिंह के कदम भी तीव्र गति से आगे बढ़े और वह ब्रिगेडियर की बैड के निकट पहुँचकर बोले, "सर! मैं भोजन करने चला गया था। आपकी तबियत कैसी है अब?"

ब्रिगेडियर धीरसिंह ने कहा, "अब ठीक है कुछ। हमारे अन्य साथी कहाँ है?"

"मुझे कुछ पता नहीं। हम लोग यहाँ कैद में हैं। ये लोग जहाँ हमें रखें, वहीं रहना होगा। मेरी प्रार्थना स्वीकार कर सारजेन्ट ने मुझे आपके पास रहने की आज्ञा देदी थी।" मेजर वीरसिंह बोला।

ब्रिगेडियर धीरसिंह ने फिर और कुछ नहीं पूछा। उन्होंने नेत्र बन्द कर लिए।

मेजर वीरसिंह हर्षित मुद्रा में बोले, "सर आपने सुना, युद्ध बन्द होगया।"

"मैं सुन चुका हूँ। अभी-अभी रेडियो पर यह समाचार प्रसारित हुआ था।" आँखें बन्द किए-किए ही ब्रिगेडियर धीरसिंह ने कहा।

तब तक हॉसपिटल का डॉक्टर वहाँ आगया। वह बोला, "मेजर साब! आपका ब्रिगेडियर को हमने बिल्कुल ठीक कर दिया। हमने अभी इन्हें इन्जेक्शन दिया है। आज हम इन्हें चार इन्जेक्शन और देगा। रात को यह मौज के साथ सोएँगे और कल बैठकर आपसे गप-शप

करेंगे। ठीक है?"

मेजर वीरसिंह कृतज्ञतापूर्ण स्वर में बोले, "मैं आपका हृदय से आभार मानता हूँ, डॉक्टर साब ! आपने हमारे ब्रिगेडियर साहब की प्राण-रक्षा कर हम पर उपकार किया है।"

"हमने अपना कर्त्तव्य निभाया है मेजर साब ! हमने आप पर कोई उपकार नहीं किया। हम चीनी सब को प्यार करता हैं। दुनियाँ का हर इन्सान हमारा भाई है। फिर हिन्दुस्तान तो हमारा पड़ौसी देश है। हिन्दी चीनी सब भाई-भाई हैं।"

मेजर वीरसिंह डॉक्टर के मीठे शब्दों की धारा में वह रहा था, परन्तु ब्रिगेडियर धीरसिंह ने हृदय में विद्वेष की ज्वाला सुलग रही थी। डॉक्टर के उन शब्दों में कितना मीठा विष मिला था, उससे उनकी आत्मा छटपटा रही थी। वह नेत्र बन्द किए लेटे थे।

उन्हें आत्म-ग्लानि से चैन नहीं मिल रही थी। वह सोच रहे थे कि उस जीने से तो मर जाना कहीं उत्तम होता।

डॉक्टर कुछ देर में वहाँ से हटकर अन्य घायलों को देखने चला गया तो ब्रिगेडियर धीरसिंह ने दुबारा नेत्र खोलकर हॉसपिटल-कैम्प में चारों ओर देखा। इतने बड़े कैम्प में कुल चार-पाँच घायल और थे। वह सोचते रहे बहुत देर तक। कुछ समझ में न आया। उन्होंने अपने सैनिक-हॉसपिटल भी देखे थे, जिनमें भारतीय घायल जवानों की कतारें लगी हुई थीं और एक वह हॉसपिटल था कि जिसमें गिनती के दस-पाँच घायल थे।

ब्रिगेडियर धीरसिंह ने हजारों चीनी सैनिकों को अपनी आँखों के सामने मैदान में घायल होते और दम तोड़ते देखा था, परन्तु उनका इलाज करने के लिए मानवता को जागृत होते उन्होंने चीनी डॉक्टरों और सारजेन्टों में कभी नहीं देखा। फिर उनका इलाज इतनी संलग्नता के साथ क्यों किया जारहा था? 'हिन्दी चीनी भाई-भाई' है, क्या इसलिए ?

ब्रिगेडियर धीरसिंह का दिल भारी होउठा। उन्होंने दीर्घ निश्वास लेकर मन-ही-मन कहा, 'धोखेबाज़ चीनियो! अपने विश्वासघाती जंगबाज़ इरादों पर तुम यह छिछली सहानुभूति का आवरण चढ़ाकर हमें मूर्ख बनाना चाहते हो।'

मेज़र वीरसिंह ब्रिगेडियर धीरसिंह की बेड के पास स्टूल पर बैठ गए।

ब्रिगेडियर धीरसिंह ने पूछा, "मेजर वीरसिंह! मैं तो अचेत होकर गिर पड़ा था, फिर मुझे यहाँ तक लाया कैसे गया?"

मेजर वीरसिंह एक क्षण मौन रहकर धीरे से बोला, "इन लोगों के पास [illegible]लों को उठाकर लाने का कोई साधन नहीं था। ये लोग घायलों को [illegible] गोली मारकर छोड़ आना चाहते थे, परन्तु जब मैंने आपको अपनी पीठ पर यहाँ तक लाने को कहा तो सारजेन्ट ने मेरी प्रार्थना [illegible]क करली।

वह सारजेन्ट दिल का बुरा आदमी मालूम नहीं था। भला लगा मुझे।" मेजर वीरसिंह बोला।

ब्रिगेडियर धीरसिंह ने अपने नेत्र फिर बन्द करलिए। वह सोचते रहे बहुत देर तक। मेजर कहता है कि उनके पास घायलों को उठाकर लाने का कोई साधन नहीं था जिनके पास भारी-भारी तोपें और मार्टरगनें हिमालय की चोटियों पर चढ़ा लेजाने के साधन थे।

वह सारजेन्ट भला आदमी दिखाई देरहा है मेजर को। इन चीनी धोखेबाज़ों को समझने में हमारा नौजवान मेजर कितनी बड़ी भूल कर रहा है।

ब्रिगेडियर धीरसिंह अपने मस्तिष्क में उठने वाले विचार को अन्दर ही घोंटकर रहगए। उनके नेत्र डबडबा आए और उन्हीं डबडबाए नेत्रों से उन्होंने मेजर वीरसिंह की ओर देखा।

मेजर वीरसिंह की समझ में ब्रिगेडियर धीरसिंह की आँखों का डबडबाना न आया। उसने चकित दृष्टि से ब्रिगेडियर धीरसिंह की ओर

देखा तो ब्रिगेडियर ने उन्हें उस मांसिक स्थिति में छोड़ना उचित न समझा। उनके मस्तिष्क की दिशा बदलने के लिए वह बोले, "मेजर वीरसिंह ! मेरे प्राण-रक्षक वास्तव में तुम हो। इतने लम्बे दुर्गम पहाड़ी मार्ग पर मुझे अपनी पीठ पर लादकर तुम यहाँ तक न लाते तो यह डाक्टर बेचारा क्या करता ? और उस भले सारजेन्ट ने तो मुझ पर वहीं गोली दाग दी होती।

मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूँ।"

मेजर ने ब्रिगेडियर धीरसिंह के नेत्रों में आत्मग्लानि से उभर आने वाले रक्त-बिन्दुओं को कृतज्ञता के आँसू समझकर आत्मसन्तोष किया, परन्तु ब्रिगेडियर धीरसिंह के हृदय में आत्मग्लानि की ज्वाला उतने ही वेग से धधकती रही। उनकी बेचैनी को समझना मेजर वीरसिंह के लिए सम्भव नहीं था।

भारत-चीन सीमा-युद्ध की स्थिति में जो नया मोड़ आया, उसे जिस रूप में चीनी रेडियो ने प्रसारित किया, उसे सुनकर उसका जो प्रभाव मेजर वीरसिंह पर पड़ा, वैसा मेजर धीरसिंह पर नहीं पड़ा। चीनियों के इकतर्फा युद्ध-विराम में उदारता और मानवता की जो झाँकी मेजर वीरसिंह को दिखाई दी, वह ब्रिगेडियर धीरसिंह की दृष्टि में नितान्त धूमिल ही नहीं काली अन्धियारी रात्रि के समान थी, जिसमें कुछ दीख ही नहीं पड़ता था।

चीन की वह मदांध सेना जो भारत की रक्षा-चौकियों पर अपने चार-चार डिवीजन सैनिक लेकर पूरे तोपखाने और सैनिक तैयारी के साथ टूट पड़ी थी, उसमें कैसे ऐसी मानवता समाविष्ट हो सकी कि वह चुपचाप वापस लौट ली ? उसने अपनी अधिकार की हुई भारतीय चौकियाँ आखिर यकायक कैसे खाली करनी प्रारम्भ कर दीं ? और फिर तब जब कि भारत ने इस युद्ध-विराम को मानने से इंकार कर दिया है।

ब्रिगेडियर धीरसिंह गम्भीरतापूर्वक इस स्थिति पर विचार कर रहे थे। मेजर वीरसिंह ने इस स्थिति पर सन्तोष की श्वाँस ली। उन्होंने

स्थिति की गहराई में जाने का प्रयत्न ही नहीं किया, बल्कि वह कुछ चीन की युद्ध-विराम नीति के प्रति आकर्षित ही हुए।

संध्या-समय ब्रिगेडियर धीरसिंह को इन्जेक्शन लगाकर ऐसी औषधि दी कि जिससे उन्हें नींद आजाए और वह रात्रि भर आराम से सो सकें।

ब्रिगेडियर धीरसिंह को सोये अभी थोड़ी ही देर हुई थी कि चीनी सारजेंट ने हॉस्पिटल में प्रवेश किया। सारजेन्ट ने मेजर वीरसिंह से इस प्रकार आगे वढ़कर हाथ मिलाया कि मानो दोनों में अगाढ़ प्रेम था।

मेजर वीरसिंह ने भी वड़े-तपाक् से हाथ मिलाया।

चीनी सारजेन्ट ने पूछा, "अब कैसी दशा है तुम्हारे ब्रिगेडियर की? डाक्टर ने मुझे बताया कि अब वह बिलकुल ठीक हैं।"

"जी हाँ!" मेजर वीरसिंह बोला।

"तो चलो फिर; आप हमारे साथ क्लब चलो। यहाँ अकेले बैठे-बैठे क्या करेंगे? आज हम आपका अपने कुछ वहुत अच्छे साथियों से परिचय कराएँगे।" चीनी सारजेन्ट बोला।

मेजर वीरसिंह ने इस निमन्त्रण को प्राप्त कर प्रसन्नता का अनुभव किया। वह जब से वहाँ गया था तो एकान्त में वहुत परेशानी का सा अनुभव कर रहा था। हॉस्पिटल के वातावरण से वह कुछ ऊव-सा उठा था। वह तुरन्त सारजेन्ट के साथ चलने को उद्यत होगया।

मेजर वीरसिंह चीनी सारजेन्ट के साथ क्लब में पहुँचे तो 'हिन्दी चीनी भाई-भाई' के मुक्त स्वर ने उसका स्वागत किया। मेजर वीरसिंह की आत्मा प्रफुल्लित होउठी। उनके मुख से भी अनायास ही 'हिन्दी चीनी भाई-भाई' का शब्द मुखरित हुआ तो चीनी सारजेन्ट ने एक विशेष दृष्टि से अपने साथियों की ओर देखा। उन सब के चेहरे मुस्करा रहे थे। उनकी मुस्कराहट में कितनी कड़ुवाहट मिली थी; इसका अनुमान लगाने में मेजर वीरसिंह असमर्थ रहे।

क्लब में आरकेस्ट्रा पर मधुर धुन छेड़ी गई। चीनी कलाकार युवतियाँ नृत्य करती हुई मंच पर उतर आई और मदिरा का दौर चलने लगा।

मेजर वीरसिंह को यह ध्यान ही न रहा कि वह उन्हीं लोगों का बन्दी था, जिनके साथ मिलकर वह आनन्द की मौजों में बह रहा था। वे ही वे लोग थे जिन्होंने उनके देश की सीमा पर आक्रमण कर उनके हजारों भाइयों को मौत के घाट उतारा था।

'हिन्दी चीनी भाई-भाई' का स्वर उन्होंने उन चीनी आक्रमणकारियों के मुख से भी सुना था जो भारतीय चौकियों पर हिंसक पशुओं के समान टूट पड़ते समय उन शब्दों का उच्चारण कर रहे थे। भाई शब्द की आत्मा को कलंकित करने वाला वह चीनी विश्वासघात इस समय मदिरा के खुमार में न जाने कहाँ खोगया था।

चीनी सारजेन्ट ने एक पुराने अभिन्न मित्र की भाँति मेजर वीरसिंह के कन्धे पर हाथ रखकर कहा, "मेजर वीरसिंह ! तुम हमारा चीन में जब तक है, कभी यह न समझना कि तुम हमारी कैद में है। चीन

तुम्हारा अपना देश है। हम संसार का सब आदमी को अपना भाई मानता है। हम सारा संसार में साम्यवाद लाना चाहता है।" इतना कहकर चीनी सारजेन्ट ने नृत्य करने वाली दो युवतियों की ओर संकेत किया और वे दोनों मेजर वीरसिंह के पास आकर बैठ गई।

मेजर वीरसिंह का इस प्रकार किसी युवती से सटकर बैठने का यह प्रथम अवसर था जीवन में। वह आज तक के अपने जीवन में केवल एक ही बार किसी नारी के प्रति आकर्षित हुआ था और वह थी राजरानी। राजरानी का परिचय बहुत क्षणिक था, परन्तु उसका मिठास अभी तक उसके जीवन में भरा हुआ था। राजरानी का भोलापन, उसका रूप, उसकी स्निग्ध आभा और हल्की-हल्की मुस्कराहट इतनी आकर्षक थी कि मेजर वीरसिंह उसे भुला नहीं पाया था। राजरानी का रूप उसके जीवन की स्थायी निधि बनगई थी।

वह जब कभी भी एकान्त में होता था तो उसे राजरानी की याद आती थी। उसका रूप उसकी आँखों की पुतलियों में उतर आता था। उसे लगता था कि मानो वह उसके समक्ष बैठी थी। उसकी माता सुभद्रा देवी ने जब उसका परिचय कराया था तो उसने कितनी सरल दृष्टि से उसकी ओर देखा था। उस समय उसे लगा था कि मानो वह भोली-भाली आभा उसके ऊपर अपनी आत्मा को समर्पित कर रही थी।

इस समय आत्मा नहीं स्थूल यौवन उससे सट कर बैठा था। एक क्षण के लिए वह सकुचा उठा, परन्त तुरन्त ही मदिरा का छल-छलाता हुआ जाम उसके सामने आगया। उन दो युवतियों में से एक ने आँखें तरेर कर उसके होठों से लगा लिया।

मेजर वीरसिंह की दृष्टि उस युवती की तरेरी हुई आंखों पर पड़ी तो उसे लगा कि मानो वे आँखें नहीं, दो गहरी खंदकें थीं, उसे अपने अन्दर समेट लेने के लिए। वह काँप उठा और अपने आपको विस्मृति के गर्भ में धकेल देने के लिए मदिरा के जार को उसने रिक्त कर दिया।

मदिरा का हलक से नीचे उतरना था कि कुछ ही क्षणों में उसकी मादकता सारे बदन में व्याप्त होगई। उसका गुलाब-सा चेहरा दमदमा उठा। उसकी आँखों में रंगीनी छागई। उसे अभी कुछ ही क्षण पूर्व भयामक प्रतीत होने वाला यौवन आकर्षक प्रतीत होने लगा।

चीनी सारजेन्ट मुस्कराकर बोला, "मेजर वीरसिंह ! तुम्हारा देश अभी बहुत पिछड़ा हुआ है। तुम्हारा देश में बहुत अंधविश्वास भरा पड़ा है। आत्मा, परमात्मा और जाने क्या-क्या झमेला बना रखा है मानव की प्रगति को रोकने के लिए। हम यह सब कुछ नई मानता। हम मानव को सब कुछ मानता है और सारा दुनियाँ की चीज को उसकी मौज की सामग्री मानता है। हम जप, तप, लोक, परलोक का पाखण्ड में नई पड़ता।

बढ़िया खाना-पीना, बढ़िया पहनना, बढ़िया मौज करना और बढ़िया काम करना। मजदूर का मौज है हमारा देश में ! हम सब मजदूर हैं। हमारी सरकार हमारी सब मौज पूरी करती है। हमारा देश में कोई भूखा नहीं मरता।"

मेजर वीरसिंह की आँखों के समक्ष एक स्वप्निल संसार उतरता आ रहा था। मदिरा के नशे में वह खोगया था। उसकी विचार-शक्ति उस सीमित दायरे से बाहर नहीं निकल पारही थी जिसके अन्दर वे सब मौजें बिछी हुई थीं। उसे स्मरण नहीं रहा था कि वह चीनी कैद में था और जो कुछ वह देख रहा था वह वास्तविकता से बहुत दूर था। वह नमूना था उस चावलों की बोरी का जिसे कूड़े-करकट से भरकर ऊपर दो चार तशले बढ़िया बाँसमती चावल भर दिए गए थे। वह ऊपरी झोल था उन आभूषणों का जिन्हें पीतल का बनाकर ऊपर सोने का पत्तर चढ़ा दिया गया था।

मेजर वीरसिंह धीरे-धीरे उस ऊपरी आवरण पर रीझकर वास्तविकता से दूर होता जारहा था। संसार का भौतिक आकर्षण उसकी नैतिक तथा दार्शनिक-भावना को कुंठित करने में सफलता प्राप्त कर रहा

था। पतन की राह उसके समक्ष उन्मुक्त थी। मदिरा और यौवन की लहरों में वह बह रहा था। वह मदहोश होकर अपने जीवन की वास्तविकता से दूर हटगया था।

मेजर वीरसिंह आज रात्रि में बहुत देर तक चीनी सारजेन्ट के साथ रहा। फिर वहाँ से उसे हॉसपिटल लेजाया गया। हॉसपिटल में उसने देखा कि ब्रिगेडियर धीरसिंह शांति के साथ सो रहे थे। वह फिर बराबर वाले कैम्प में चला गया, जिसका ठाट आज अन्य दिनों से भिन्न था। बढ़िया पलँग बिछा था। वह उस पर लेट गया और आज मदिरा की खुमारी में तभी सो जाता, परन्तु वह हुआ नहीं। वह नर्तकी, जिसने उसे मदिरा-पान कराया था, उसके पास आकर पलंग पर बैठगई।

मेजर वीरसिंह सकुचाकर उठ बैठा।

नर्त्तकी मुस्करा कर बोली, "पसन्द आया आपको मेरा नृत्य ? मैं एक बार आपके देश में भी गई हुँ। भारत-वासियों ने मेरा नृत्य बहुत पसन्द किया था।"

मेजर वीरसिंह बोला, "मुझे आपका नृत्य सचमुच बहुत अच्छा लगा। मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि आप भारत भी होआई हैं। वहाँ आपने भारतीय नृत्य भी देखा होगा। कैसा लगा वह नृत्य आपको ?"

"बहुत बढ़िया मेजर साब ! बहुत सुन्दर ! हमारी पार्टी जब जैपुर गई थी तो हमने वहाँ बहुत सुन्दर नृत्य देखा था। मणिपुर-नृत्य मुझे बहुत पसन्द आया। एक आर्टिस्ट थी वहाँ राजरानी। हमारा मानिन्द वह प्रोफेशनल नई थी, परन्तु बहुत आकर्षक नृत्य था उसका।

नृत्य के पश्चात् मैंने उससे भेंट की। बहुत भोला-भाला आर्टिस्ट था। उसका याद हम अभी तक भूला नहीं हैं।"

"राजरानी !" हल्के से यह शब्द मेजर वीरसिंह की ज़बान से निकला। उसके मदिराच्छादित मस्तिष्क का आवरण एक झटके से फट गया। पुरानी स्मृति निखर कर सामने आगई। उसके कानों में अपनी

माता जी के वे बोल स्पष्ट सुनाई दिए जब उन्होंने राजरानी का परिचय देते हुए कहा था, "राजरानी बहुत दक्ष कलाकार है। मणिपुर नृत्य में इसने विशेष दक्षता प्राप्त की है। गाती भी बहुत मधुर है और मणिपुर नृत्य करते तो तुमने स्वयं देखा है।"

अपनी इस प्रकार प्रशंसा सुनकर राजरानी छुई-मुई की बेल के समान लजा गई थी। राजरानी का वह लाज-भरा मौन चित्र मेजर वीरसिंह के समक्ष आया तो वह एक क्षण के लिए मंत्र-मुग्ध होगया। वह एक स्वप्निल आभा में खोगया।

"क्या स्वप्न देख रहे हैं आप?" नर्तकी ने मेजर वीरसिंह को स्पर्श करते हुए कहा।

मेजर वीरसिंह की निद्रा भंग हुई। वह सचमुच स्वप्न देख रहा था, परन्तु उसने अपना स्वप्न नर्त्तकी पर प्रदर्शित नहीं किया। वह बात की दिशा बदल कर नर्त्तकी की ओर देखता हुआ बोला, "तुम्हारे रूप ने वास्तव में एक मादक स्वप्न प्रस्तुत कर दिया मेरी आँखों के समक्ष।"

"मैं स्वप्न नहीं हूँ मेजर साब! हमारा चीन में स्वप्न नहीं देखा जाता। मैं साकार यौवन हूँ। हमारा चीन में सब चीज स्पष्ट है। प्रत्येक वस्तु सजीव है। हर चीज प्राप्य है। यहाँ की हर चीज हमारी सरकार की है। मैं भी सरकार की हूँ और आप भी सरकार के हैं। इस लिएआप मेरे हैं और मैं आपकी हूँ।" नर्त्तकी मेजर वीरसिंह से और सठ कर बैठती हुई गम्भीर मुस्कराहट के साथ बोली।

मेजर वीरसिंह ने नारी का इतना स्पष्ट समर्पण आज प्रथम बार जीवन में देखा था। नारी-सुलभ लज्जा और संकोच मानो उस नर्त्तकी को छू तक नहीं गया था। वह मुस्कराकर बोला, "परन्तु मैं तो बन्दी हूँ आपकी सरकार का। मुझे आप अपनी समानता में कैसे रख रही है?"

यह सुनकर नर्त्तकी उछल पड़ी और खिलखिला कर हँसती हुई बोली, "हमारा चीन में सभी सरकार का बन्दी है और सरकार हमारी वन्दिनी

है। इसलिए आप मेरे वन्दी हैं और मैं आपकी वन्दिनी हूँ।" इतना कह-कर उसने मादक दृष्टि से वीरसिंह की ओर देखा।

मेजर वीरसिंह निरुत्तर होगया नर्त्तकी के समक्ष। वह फिर पलंग पर बैठ गई और वीरसिंह की गर्दन में हाथ डालकर बोली, "लो अब मैं आपको पूरी तरह बन्दी बना लेती हूँ। इस बन्दी बनने में आप आनंद का अनुभव करेंगे। आदमी को स्त्री का बन्दी होने में सबसे अधिक आनन्द आता है।"

मेजर वीरसिंह का नशा ढल चुका था। नर्त्तकी ने अपने थैले से एक शराब की बोतल निकाली और पास में छोटी मेज पर रखे गिलास में डालकर उसके होंठों से लगाती हुई बोली, "इसे पीकर आप बन्धन-मुक्त हो जाएँगे। यह मदिरा नहीं, सुरा है मेजर साब! हमारा चीन में सब लोग देवता हैं और देवता सुरा का पान करते हैं।" कहकर वह खिलखिला कर हँस पड़ी।

मेजर वीरसिंह इस वातावरण में गहरी घुटन का अनुभव कर रहा था। उस घुटन से मुक्ति प्राप्त करने के लिए उसने मदिरा पान की। वह देखते-ही-देखते पूरा गिलास पीगया।

थोड़ी देर में मेजर वीरसिंह के बदन पर मदिरा का प्रभाव छा गया। उसकी दृष्टि नर्त्तकी के नग्न यौवन पर पड़ी तो वह उसे सुन्दर प्रतीत हुई।

नर्त्तकी को मेजर वीरसिंह की नजरें पहिचानने में एक क्षण न लगा। वह तनिक दूर हटकर कुर्सी पर जा बैठी और बोली, "अच्छा मेजर साब! अब आप सोजाएँ। कल भेंट होगी आपसे। मैं चली।"

मेजर वीरसिंह आवक्-सा उस नर्त्तकी की ओर देखता रह गया। वह अपना थैला उठाकर डेरे से बाहर निकलकर चल दी। मेजर वीरसिंह ने कहा, "तो जा रही हो तुम नर्त्तकी!"

नर्त्तकी एकदम घूमकर मुस्कराती हुई बोली, "फिर क्या करूँ? पत्थर पर कबतक सिर पटकती रहूँ? मैं अपनी रात काली क्यों करूँ?

अपनी जवानी का एक भी क्षण बरबाद होते देखकर मुझे बुरा लगता है।"

"मेरा स्वभाव तुम्हें भला नहीं लगा नर्त्तकी !" मेजर वीरसिंह बोला।

नर्त्तकी हँस पड़ी और लौटकर फिर मेजर वीरसिंह की बगल में जा बैठी। उसने उसका हाथ अपने मुलायम हाथों में लिया और बोली, "मालूम देता है आपको कुछ व्यर्थ बातें सोचने का रोग है। हमारा चीन में व्यर्थ बातें नहीं सोचा जाता। सोचने-विचारने का उत्तरदायित्व हमने अपने नेताओं को सौंप दिया है। हम लोग मौज करने के लिए हुए हैं और मौज करता है। हमारा नेता चाऊ माऊ बहुत सोचता है।"

उस रात्रि को वह नर्त्तकी मेजर वीरसिंह के कैम्प से कब लौटी, कुछ पता नहीं।

युद्ध-विराम के पश्चात भारत-चीन सीमा-विवाद पर संधि-वार्ता के लिए भारत-सरकार अपने प्रस्ताव पर अडिग रही और चीनी नेताओं ने अपने प्रस्ताव पर आक्रमण द्वारा प्राप्त भारतीय प्रदेश को हथियाये रखने का प्रयास किया।

चीन के भारत पर आक्रमण के फलस्वरूप उपस्थित विश्व-युद्ध के संकट को टालने के विचार से एशिया तथा अफ्रीका के देशों के प्रतिनिधियों ने कोलम्बो में एक सम्मेलन किया और भारत-चीन संधि-वार्ता के लिए उचित वातावरण बनाने के विचार से कुछ प्रस्ताव पास कर सम्मेलन के प्रतिनिधि पेंकिंग गए।

झूठे प्रचार में अग्रणीय चीनी नेताओं ने इस प्रतिनिधि-मण्डल के स्वागत में ठाट बाँध दिए और कोलम्बो सम्मेलन के प्रतिनिधियों को हाथों-हाथ ऊपर उठा लिया। सम्मेलन के प्रतिनिधियों को चीनी नेताओं के इस व्यवहार से हार्दिक प्रसन्नता हुई और आशा बँधी कि उनका प्रयास सम्भवतः सफल सिद्ध होगा।

अपने प्रस्तावों पर चीनी नेताओं की स्वीकृति प्राप्त कर वे भारत आए। भारत-सरकार ने भी उनका स्वागत किया। उनके प्रस्तावों पर विचार किया और उनका स्पष्टीकरण माँगा। कोलम्बो-प्रस्तावों और उनके स्पष्टीकरणों पर विचार करके भारत-सरकार ने उन्हें विश्व-शान्ति के उद्‌देश्य की पूर्ति के लिए सहर्ष स्वीकार कर लिया।

शीलकुमारी अपनी कोठी के लॉन में कुर्सी पर बैठी इसी स्थिति पर विचार कर रही थीं। तभी सुभद्रा देवी की फ़िटन कोठी के समक्ष

सड़क पर आकर रुकी। शीलकुमारी खड़ी होकर कोठी के द्वार पर पहुँचीं और सुभद्रादेवी को सादर अन्दर लेआईं।

दोनों लॉन में कुर्सियों पर बैठ गईं। सुभद्रादेवी ने पूछा, "राजरानी नहीं दिखाई देरही शीलकुमारी !"

शीलकुमारी मुस्करा कर बोलीं, "राजरानी को आजकल बहुत काम लगा है सुभद्रादेवी ! 'कला-केन्द्र' का सब काम उसने सम्भाला हुआ है। आगामी सप्ताह में हमारे रक्षा-मंत्री जैपुर आरहे हैं ना ! उस अवसर पर 'कला-केन्द्र' ने रक्षा-कोष के लिए एक सुन्दर कार्य-क्रम प्रस्तुत करने का निश्चय किया है। उस समारोह में बहुत अच्छे-अच्छे कलाकार भाग लेरहे हैं।"

यह सुनकर सुभद्रा देवी प्रसन्नता के स्वर में बोलीं, "राजरानी बड़ी कर्मठ लड़की है। जिस कार्य में जुट जाती है, रात-दिन एक कर देती है। जब तक वह उस कार्य को पूरा नहीं कर लेती तब तक उसे चैन नहीं आती।"

राजरानी की सुभद्रादेवी के मुख से प्रशंसा सुनकर शीलकुमारी को हार्दिक संतोष और प्रसन्नता हुई।

बातें फिर चीन-भारत संधि-वार्ता की ओर झुक गईं। सुभद्रादेवी बोलीं, "शीलकुमारी ! अब क्या विचार है तुम्हारा ? कोलम्बो-प्रस्तावों को अब तो ज्ञात होता है चीन और भारत दोनों ने ही स्वीकार कर लिया है।"

सुभद्रादेवी की बात सुनकर शीलकुमारी मुस्करा दीं। उनकी मुस्कराहट में इस बात के प्रति शंका और अविश्वास की भावना स्पष्ट झलक रही थी।

सुभद्रादेवी शीलकुमारी के मुस्कराते चेहरे पर आँखें गड़ा कर बोलीं, "क्या अभी भी तुम्हें शंका है कि संधि-वर्ता प्रारम्भ नहीं होगी ? क्या चीनी नेता अपने वचन का पालन नहीं करेंगे ?"

शील कुमारी उसी प्रकार मुस्कराती हुई बोलीं, "बहिन सुभद्रा

देवी ! चीनी नेताओं का कोई विश्वास नहीं। ये महा झूठे, बेईमान और विश्वासघाती हैं। लातों के भूत भला बातों से कैसे मानेंगे ? मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि ये लोग कोलम्बो-प्रस्तावों को उनके पूरे स्पष्टीकरणों के साथ स्वीकार कर लेंगे। ये किसी प्रकार इनसे अपना पल्ला छुड़ाने का प्रयास करेंगे।"

ये बातें चल ही रही थीं कि तभी हाकर दैनिक पत्र लेकर आ गया, जिसमें मोटी हेड लाइन में छपा था, "चीन ने कोलम्बो प्रस्तावों को ठुकरा दिया।"

उसे पढ़कर सुभद्रादेवी दंग रहगई। वह आश्चर्यचकित होकर बोलीं, "अब क्या होगा शीलकुमारी ?"

शीलकुमारी बोलीं, "क्या होगा ? यही होगा कि चीनी दरिन्दों को उठाकर भारत की सीमा से बाहर फेंक दिया जाएगा। आक्रमणकारी का सिर कुचल दिया जाएगा। भारत अब किसी से अशक्त नहीं रहेगा।" ये शब्द उच्चारण करते हुए शीलकुमारी का चेहरा तमतमा उठा। उनकी आँखों के डोरे लाल होगए। वह गम्भीर वाणी में बोलीं, "चीनी नेता भारत को परास्त नहीं कर सकते। भारत सशक्त है और अपने रात-दिन के परिश्रम और त्याग से और सशक्त होगा। सम्पूर्ण विश्व एक स्वर से भारत की सराहना कर रहा है, सहयोग देरहा है और देता रहेगा। चीनी नेता अपनी मूर्खता और हठधर्मी की नीति के द्वारा अपने राष्ट्र की कब्र खोद रहे हैं, अपनी जनता के सर्वनाश का मार्ग उन्मुक्त कर रहे हैं।"

इतना कहकर वह मौन होगई।

उसी समय राजरानी हाथ में दूसरा दैनिक पत्र लिए वहाँ आ गई। उसका चेहरा गुलाब के समान खिला हुआ था। उसकी आकृति से प्रतीत हो रहा था कि वह उस समय बहुत प्रसन्न थी। न मालूम उसे कौन सी अमूल्य निधि प्राप्त होगई थी।

शीलकुमारी राजरानी की प्रसन्न मुख-मुद्रा को देखकर बोली,

"राज ! आज क्या प्राप्त होगया है तुम्हें जो इतनी प्रसन्न हो ? मालूम देता है कि हमारे रक्षा-मंत्री ने तुम्हारे प्रदर्शन का उद्घाटन करने की स्वीकृति भेजदी है।"

राजरानी ने नेत्रों की भाषा में अपनी भाभी जी की इस बात का नकारात्मक उत्तर देकर कहा, "मुझे आज वह वस्तु प्राप्त हुई है भाभी जी ! जिसकी आप अभी कल्पना भी नहीं कर रहीं।" इतना कह कर वह आनंद-विभोर होउठी।"

यह सुन कर सुभद्रादेवी उत्सुकता पूर्ण स्वर में बोलीं, "तनिक हम भी तो सुनें राजरानी ! तुम्हें ऐसी कौनसी वस्तु प्राप्त होगई जिसकी हम लोग अभी कल्पना भी नहीं कर पारहे हैं।"

"बतलाऊँ।" राजरानी बोली और वह अपने हृदय से फूट पड़ने वाले संदेश को एकक्षरण भी और छिपाकर न रख सकी। बोली, "भाभी जी ! मुझे भय्या मिल गए।" और फिर सुभद्रा देवी की ओर मुख करके कहा, "मुझे मेजर वीरसिंह जी भीमिल गए।" यह कहकर वह हर्ष से नाँच उठी।

सुभद्रादेवी और शीलकुमारी राजरानी की बात सुनकर अवाक रह गईं दोनों चकित-सी राजरानी के हर्षित मुख की ओर देखती रहीं। वे यह भी न पूछ सकीं कि राजरानी क्या कह रही थी।

प्रफुल्लित वदना राजरानी बोली, "मैं अभी अपनी सहेली के घर पर चीनी रेडियो द्वारा प्रसारित समाचार सुनकर आरही हूँ। उन्होंने भारतीय युद्ध-बंदियों के नाम घोषित किये हैं। उस घोषरणा में भय्या जी तथा मेजर वीरसिंह, दोनों का नाम था।"

इस समाचार को प्राप्त कर शीलकुमारी और सुभद्रादेवी को हार्दिक संतोष हुआ। सुभद्रा देवी बोलीं, "शीलकुमारी ! तुम्हारी आशा पूर्ण हुई। तुमने जिस बात को कहकर मुझे प्रथम दिन धैर्य बंधाया था, उसे परमात्मा ने पूरा कर दिया।

"परन्तु अब क्या होगा उनका ?"

शीलकुमारी गम्भीरता पूर्वक बोलीं, "युद्ध-बंदियों को उन्हें मुक्त करना होगा, परन्तु कब और किस प्रकार करेंगे इसके विषय में अभी कुछ नहीं कहा जासकता।"

राजरानी ने समय देखकर अपना रेडियो खोला तो वही समाचार दिल्ली आकाशवाणी ने भी प्रसारित किया। उसे सुनकर राजरानी के समाचार की पुष्टी होगई।

राजरानी प्रसन्नतापूर्वक बोली, "भाभीजी भय्या और मेजर वीर-सिंह एक ही स्थान पर हैं। पता नहीं उनके साथ चीनियों का कैसा व्यवहार हो।"

शीलकुमारी बोली, "उनकी व्यवस्था का यहां बैठकर अनुमान लगाना कठिन है, परन्तु फिर भी युद्ध-बंदियों के साथ तो सम्भवत: उचित ही व्यवहार किया जाता होगा। हमारी सरकार ने जिन चीनियों को नजरबन्द किया हुआ है उनके साथ हमारी सरकार का व्यवहार बहुत शिष्ठ है।"

इसी प्रकार बहुत देर तक ब्रिगेडियर धीरसिंह और मेजर वीरसिंह के विषय में बातें चलती रहीं। आज के इस समाचार ने तीनों की आत्मा को शांति प्रदान की। उन्हें संतोष हुआ कि उनके प्रिय सम्बन्धी अभी जीवित थे। राजरानी बाहर लॉन में चली गई। उसके आनन्द का पारा-बार नहीं था। उसे लग रहा था कि मानो विधाता ने उसका खोया हुआ जीवन उसे फिर से लौटा दिया। उसकी आशाओं का कुसुम जो खिलने से पूर्व ही कुम्हला गया था, यकायक पंखुरियाँ खोलकर मुस्कराने लगा। उसे अपने जीवन में नवीन स्फूर्ति दिखाई दी और हृदय में आनंद की लहरें हिलोरें मारने लगीं।

शीलकुमारी सोच रही थी, कि आखिर कैसे उनके वीर पति ने आत्मसमर्पण किया होगा। यों साधारण परिस्थिति में तो वह आत्म-समर्पण करने वाले नहीं थे। जिन्होंने केवल एक सौ आठ जवानों को साथ लेकर चीन की तीन डिवीज़न सेना को पराजित किया, वह आत्म-

समर्पण की बात कैसे सोच सके होंगे। वह निश्चय ही घायल होकर समर-भूमि में अचेत होगए होंगे।

"क्या सोच रही हो शीलकुमारी ?" सुभद्रादेवी ने उनके गम्भीर चेहरे पर दृष्टि डालकर पूछा।

"कुछ नहीं बहिन सुभद्रादेवी !" स्वप्न से से जाग्रत होकर शील-कुमारी ने कहा।

"सोच तो कुछ अवश्य रही हो।" सुभद्रादेवी बोलीं।

"मैं सोच रही हूँ कि आखिर उन्होंने आत्मसमर्पण कैसे किया होगा। आत्मसमर्पण करने वाले तो वह नहीं थे। उन्हें जीवन में आत्म-सम्मान से प्रिय अन्य कोई वस्तु नहीं थी।" शीलकुमारी सरल वाणी में बोलीं।

सुभद्रादेवी ने कहा,"जब शत्रु-सेना ने उन्हें और उनके जवानों को चारों ओर ने घेर लिया होगा तो वह और क्या करते ? अपने जवानों को व्यर्थ मरवाना भी तो कोई बुद्धिमत्ता की बात नहीं थी। जब तक उन्हें विजय की लेशमात्र भी आशा रही होगी, तब तक उन्होंने आम-समर्पण नहीं किया होगा।

तावांग और सेला की चौकियों को चारों ओर से चीनी सेना ने घेर लिया था। ब्रिगेडियर धीरसिंह ने बूनला और तावांग की चौकियों की रक्षा में कुछ कम पराक्रम नहीं दिखाया। जो साहस ब्रिगेडियर धीरसिंह ने इन मोर्चों पर प्रदर्शित किया, वह भारतीय इतिहास की गौरवपूर्ण घटनाएँ हैं। उनकी मिसालें अन्यत्र उपलब्ध नहीं होंगी।

ब्रिगेडियर धीरसिंह यूँ ही किसी साधारण परिस्थिति में आत्म-समर्पण करने वाले नहीं थे।"

सुभद्रादेवी की वात सुनकर शीलकुमारी के उद्विग्न मन को तनिक शान्ति प्राप्त हुई। अपने पति के जीवित होने के समाचार के मिठास ने धीरे-धीरे उनके हृदय में सरस रस की धारा प्रवाहित करदी। उसका आनंद उनकी आँखों की पुतलियों में झलक आया। उनके गालों पर

गुलाबी रंग की आभा दमक उठी और मन-मयूर नृत्य करने लगा।

शीलकुमारी के मुग्ध रूप पर दृष्टि फैलाकर सुभद्रादेवी बोलीं, "शीलकुमारी! परमात्मा बहुत दयालु हैं। उन्हें धन्यवाद दो कि उन्होंने तुम्हारा खोया हुआ सुहाग तुम्हें लौटा दिया। परमात्मा ने तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करदी।"

शीलकुमारी मुग्ध नेत्रों से सुभद्रादेवी की ओर देखकर बोली, "बहिन! आपकी गोद भी भगवान् ने रिक्त नहीं होने दी। आपकी आशाओं का कुसुम खिला है, मुर्झाया नहीं, इससे बड़ी प्रसन्नता की बात हमारे लिए अन्य कोई नहीं होसकती।"

मेजर वीरसिंह की स्मृति में खोकर सुभद्रादेवी सरल वाणी में में बोलीं, "शीलकुमारी! वीर अपने पिता की वह मधुर स्मृति है, जिसे देखकर मैंने कभी जीवन में अपने को विधवा या अभागिन नहीं गिना। जीवन में मुझे जब-जब वीर के पिताजी की स्मृति आई तब-तब मैंने वीर को देखकर उनके दर्शन किए हैं।

जिस दिन मुझे वीर की दुर्घटना का अशुभ समाचार मिला था, तो मैं अचेत होकर गिर पड़ी थी। जब चेतना लौटी तो मेरे मुख से ये शब्द निकले, "भगवान्! तूने यह क्या किया? उन्हें मुझसे छीनकर भी तुझे संतोष न हुआ। जिस प्रतिमा को देखकर मैं उनके दर्शन कर लेती थी, तूने उस प्रतिभा को भी तोड़ डाला।

शीलकुमारी! वीर अपने पिता की साक्षात प्रतिमा है। वही आकार, वही रूप, वही चेहरे की बनावट और वही अंगों का गठन। वीर हूबहूवह बना बनाया अपने पिता का सजीव पुतला है।" कहते-कहते सुभद्रादेवी के वृद्ध चेहरे पर आभा झलक आगई। उनके नेत्रों में माधुर्य छलक आया। उसे देखकर शीलकुमारी ने संतोष की श्वांस ली। वह कुछ कहने ही जारही थी कि तब तक राजरानी गुनगुनाती हुई उनके समक्ष आकर बोल उठीं, "बहिनजी! आपने हमारे नए प्रदर्शन का रिहर्सल नहीं देखा। भाभीजी को भी आपने अपने 'महिला-

रक्षा-केन्द्र' में ऐसा उलझा लिया है कि इन्हें भी वहाँ जाने का अवकाश नहीं मिलता। आज मैं आप दोनों को अपने साथ लेचलूंगी।

देखिए ना आपमें से कोई भी 'नां' न करिएगा वरना मैं रूठ जाऊँगी।"

राजरानी की मधुर बात सुनकर सुभद्रादेवी और शीलकुमारी आनंदविभोर होउठीं। शीलकुमारी ने स्नेह-वश राजरानी को अपनी बाहुओं में भरकर कहा, "नाँ कैसे कर सकते हैं हम लोग राजरानी! आज तो तुमने वह समाचार दिया है जिसने हमारे निष्प्राण जीवनों में फिर से प्राण-वायु संचारित करदी है। हम दोनों आज अवश्य ही तुम्हारा रिहर्सल देखने चलेंगी।"

राजरानी के साथ आज बहिन सुभद्रादेवी और शीलकुमारी 'कला-केन्द्र' द्वारा आयोजित प्रदर्शन का रिहर्सल देखने गईं। आज उनके इस जाने में कर्त्तव्य की प्रेरणा के साथ-साथ हार्दिक उमंग और हर्ष का पारावार लहरें मार रहा था।

ब्रिगेडियर धीरसिंह अब बिलकुल स्वस्थ थे। उनकी जाँघ का घाव भर गया था और बदन की दुर्बलता भी दूर होगई थी।

आज प्रातःकाल से ही हॉस्पिटल के कैम्प में चीनी सेनिक किसी विशेष तैयारी में व्यस्त थे। उनकी बेड के पास कुछ अन्य भारतीय जवानों की बेड्स भी लाकर लगाई गईं थीं। सभी की बेड्स पर आज नई-नई चादरें बिछी थीं और उनके आराम के अन्य सब साधन उपलब्ध थे।

भारतीय घायल सेनिकों की बेड्स के पास मेज़ो पर फलों के ढेर लगा दिए गए थे। भोजन की अन्य सामग्रियाँ भी उनके पास लगी थीं।

आज इन घायलों के पास चीन की सुन्दर-सुन्दर नर्सें, अपने कार्य बहुत व्यस्त-सी घूम रही थीं। वे रोगियों के पास जा-जाकर उनका टेम्परेचर लेरही थीं तथा उनकी विशेष सेवा में संलग्न थीं।

आज भारतीय जवानों को भी वहाँ आने की छूट थी। अपने जिन जवानों को तावांग के मोर्चे के पश्चात् आज तक ब्रिगेडियर धीरसिंह को देखने का अवसर नहीं मिला था, वे भी आज उनके निकठ आगए थे; परन्तु वहुत सहमे-सहमे से प्रतीत होरहे थे वे सभी लोग। उनकी ज़बानें बन्द थीं और कठपुतलियों के समान वहाँ खड़े या घूम रहे थे।

मेजर वीरसिंह ब्रिगेडियर धीरसिंह की वेड के पाल स्टूल पर दैठे थे। उनकी भी समझ में आज का प्रदर्शन नहीं आरहा था। सब लोग मन-ही-मन अपनी-अपनी धारणाएँ बना रहे थे।

इतने में ब्रिगेडियर धीरसिंह ने देखा कि चीनी फोटोग्राफ़रों के एक दल ने कैम्प में प्रवेश किया। उनसे पूर्व चीनी सार्जेन्ट वहाँ आ चुका था। वह सीधा ब्रिगेडियर धीरसिंह की वेड के पास आकर मुस्कराते

हुए बोला, "ब्रिगेडियर धीरसिंह ! अब कैसी तबीयत है आपकी ? हमारा डॉक्टर ने वतलाया है कि अब आप पूरी तरह स्वस्थ हैं।"

ब्रिगेडियर धीरसिंह बोले, "आपके डॉक्टर ने ठीक ही सूचना दी है आपको। मेरा घाव अब भर गया है और दुर्बलता भी जाती रही है।"

चीनी सार्जेन्ठ व्यंगपूर्ण मुसकराहट से बोला, "ब्रिगेडियर धीरसिंह ! देखा आपने चीनियों का अपने साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार ! हम तुमको अपना भाई मानता है। तुम लोगों ने व्यर्थ ही हमारा इतना सेनिक मार डाला। बूनला चौकी पर तुमने हमारा वहुत आदमी मारा। फिर भी हम तुमको प्यार करता है।"

चीनी सार्जेन्ट की बात सुनकर वीरसिंह के हृदय में कृतज्ञता की भावना जाग्रत हुई, परन्तु ब्रिगेडियर धीरसिंह का हृदय अन्दर-ही-अन्दर जल-भुन कर राख होगया। उन्होंने चीनी सार्जेन्ट की अपने हृदय में अग्नि प्रज्वलित करने वाली चेहरे की मुस्कराहट को देखा और घृणा तथा आत्मग्लानि से अपनी गर्दन नीचे झुकाली। वह मन-ही-मन सोच रहे थे कि उस जीने से तो यदि वह मर जाते तो कहीं अच्छा होता। उनके कानों को वे अपमानजनक शब्द तो सुनने न पड़ते।

ब्रिगेडियर धीरसिंह के गर्दन झुकाने को चीनी सार्जेन्ट ने उनकी दीनता समझकर उत्साहपूर्ण स्वर में कहा, "आपका सकार ने आपको बहुत गलत मार्ग सुझाया। हम चीनी लोग भारतवासियों का सच्चा भाई हैं। हम आपका देश में भी अपना चीन जैसा खुशहाली लाना चाहता है। आपका देश में अमीर लोग मौज करता है और बेचारा गरीब पिसता है। हम संसार भरका गरीबों को समृद्ध करना चाहता है। आप लोगों को हम चीनियों के विचार का कद्र करना चाहिए।"

ब्रिगेडियर धीरसिंह ने सार्जेन्ट की वात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह गर्दन झुकाए कुछ देर उसी प्रकार बैठे रहे और फिर चुप-चाप बेड पर लेट गए। उनका चित्त बहुत उद्विग्न होउठा था। उस समय वह चीनियों की कैद में थे इसलिए उन्होंने अपनी ज़बान पर ताला

लगा कर रखा। वह नहीं चाहते थे कि वहाँ उनकी ज़बान से निकला कोई शब्द उनके और अन्य भारतीय जवानों के लिए संकट का कारण बनता। चीनियों की बरबरता और दानव-प्रवृत्ति उनसे छिपी नहीं थी। उन्होंने अपनी ही आँखों से उन्हें चीनी घायल सैनिकों को गोली मारकर खंदकों में फेंकते देखा था। फिर भारत के गरीबों के प्रति उनमें यह दया कैसे जाग्रत होउठी।

चीनी सार्जेन्ट ने पूरे कैम्प का निरीक्षण किया और देखते-ही-देखते हॉस्पिटल का यह कैम्प सिनेमा-शूटिंग का अच्छा खासा स्टूडियो बन गया। केमरामेंनों ने अपने कैमरे सही किए और फोटो खींचने लगे।

ब्रिगेडियर धीरसिंह की पहले तो कुछ समझ में न आया कि आखिर वह नाटक क्यों खेला जारहा था। भारतीय जवानों को वहाँ एकत्रित करके ऐसा प्रदर्शन करने की क्या आवश्यकता थी, परन्तु तुरन्त ही उनका माथा ठनका और उन्हें समझने में देर न लगी कि वे चालबाज चीनी वहाँ के चित्र खींचकर संसार को धोखा देने का प्रयास कर रहे थे। वे उन चित्रों की फिल्म तैयार कर रहे थे, जिसमें प्रदर्शित किया जायगा कि चीनी भारतीय बन्दियों के साथ कैसा अच्छा व्यवहार कररहे हैं।

यह सोचते ही उन्हें चीनियों के इस झूठे प्रचार के प्रति घृणा हो उठी।

चीनी सार्जेन्ट मेजर वीरसिंह के कन्धे पर हाथ रखकर बोला, "मेजर साब ! आप जानते हैं हम आप लोगों पर इतना खर्च क्यों कर रहे हैं? हम आप सब के चित्र खिचवाकर उन्हें आपके सम्बन्धियों के पास पहुँचायेंगे, जिससे उन्हें विश्वास हो जाए कि आप लोग सब जीवित हैं। देखी आपने हमारी आपके और आपके परिवारों के प्रति सहानुभूति।

चीन की कम्युनिस्ट सरकार ऐसे नीच कार्य नहीं करती जैसे आपकी सरकार कर रही है। आपकी सरकार ने हमारे देशवासियों को भूख

और प्यास से जेल में बन्द करके मार डाला। हम भी यदि चाहें तो आप सबको समाप्त कर सकते हैं। यहाँ हमें रोकने वाला कौन है ? परन्तु हम मानवता के सच्चे प्रेमी हैं और आपको अपना भाई मनते हैं।"

चीनी सार्जेन्ट ने यह बात केवल मेजर वीरसिंह से ही नहीं कही वरन् माइक के सम्मुख खड़े होकर इस प्रकार कही जिसे वहाँ उपस्थित हर भारतीय जवान सुनले।

ब्रिगेडियर धीरसिंह वह सुनकर तिलमिला कर रह गए। उनकी दृष्टि अपने जवानों के उन चेहरों पर पड़ी, जिनपर न जाने कितने प्रकार के भावों की रेखाएँ खिच-खिचकर विलीन होरही थीं। उन्होंने अपने जवानों के चेहरों पर गम्भीर दृष्टि से देखा और फिर तकिए पर सिर रखकर लेट गए। उनके हृदय में इस समय असहनीय पीड़ा थी। उसका चित्त व्याकुल होउठा था। उनका सर दर्द से फटा जारहा था। उनकी आँखें रक्त-वर्ण की होगई थीं। उनके भुजदण्ड फड़क उठे थे, परन्तु उन्होंने अपने को वश में रखने का प्रयास किया।

मेजर वीरसिंह उनकी यह दशा देखकर बोले, "सर! आपको अचानक यह क्या होगया ? आपकी आँखें चढ़ रही हैं।" और फिर उनका हाथ छूकर देखा तो उन्हें सचमुच ज्वर होगया था।

ब्रिगेडियर धीरसिंह धीरे से बोले, "कुछ नहीं वीरसिंह ! यूँ ही मन मिचलाने लगा है। अचानक कुछ ज्वर-सा होगया। सब ठीक हो जाएगा।"

तभी चीनी सार्जेन्ट वहाँ आपहुँचा और उसने पूछा, "क्या हुआ ब्रिगेडियर साब आपको!" इतना कहकर उसने तुरन्त तीन-चार, पाँच डाक्टरों को विगेडियर धीरसिंह की बेड के इर्दगिर्द एकत्रित कर लिया और सबने उन्हें देखना प्रारम्भ किया।

चीनी केमरामेन अपना कार्य कर रहे थे। उन्हें बिला सेटिंग किए ही यह अच्छा-खासा सेटिंग शूटिंग के लिए मिल गया।

व्रिगेडियर धीरसिंह को हार्दिक खेद हुआ कि उन्होंने व्यर्थ ही यह

फिल्म खींचने का चीनी केमरामेनों को अवसर दिया।

चीनी केमरामेन अपना कार्य करके विदा हुए। उनके पीछे-ही-पीछे घायलों के पास मेजों पर सजे फल भी वहाँ से हटा दिए गए। फिर उस स्थान पर एकत्रित नर्सों का दल कैम्प से बाहर होगया। कुछ ही क्षण पश्चात् वहाँ लाई गई भारतीय घायल जवानों की बेड्स भी वहाँ से हटा दी गईं और उनके साथ-ही-साथ जो अन्य भारतीय कैदी सैनिक वहाँ लाए गए थे उन्हें भी अन्यत्र भेज दिया गया।

हास्पिटल का यह कैम्प फिर अपनी उसी पुरानी दशा में बदल गया, जिसमें ब्रिगेडियर धीरसिंह उसे आज से पूर्व देखते आए थे। अब उसमें वे ही पाँच-चार बेड्स थीं और वही वहाँ का पुराना डाक्टर, वही एक नर्स थी और वही गंजी खोपड़ी का कम्पाउण्डर।

चीनी सार्जेन्ट ने वहाँ से चलते समय मेजर वीरसिंह का हाथ तपाक से अपने हाथ में लेकर कहा, "आज का कार्य समाप्त होगया अब ये चित्र भारत भेज दिए जाएँगे। कहिए कैसा रहा ?"

मेजर वीरसिंह बोला, "इन चित्रों को प्राप्त कर निश्चय ही भारतीय जवानों के परिवारों को शान्ति मिलेगी। उन्हें विश्वास हो जाएगा कि हम लोग यहाँ सुरक्षित हैं और हमें किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं है। इससे भारतीयों में आपलोगों के प्रति सद्भावना उत्पन्न होगी।"

यह सुनकर चीनी सार्जेन्ट हर्ष से उछल पड़ा। वह खिलखिलाकर हँसते हुए बोला, "यही तो हम चाहते हैं मेजर साब ! हमने यह सब इसीलिए किया है। हम लोग भारत की जनता को बहुत प्यार करते हैं।"

चीनी सार्जेन्ट का खिलखिलाकर हँसना सुनकर वीरसिंह पहले तो तनिक भयभीत-सा होउठा। वह इस सार्जेन्ट की हँसी में कभी-कभी गम्भीर व्यंग का अनुभव कर अन्दर से तिलमिला-सा उठता था। उसे उसमें मिठास का आभास न होकर प्राण-घातक विष का अनुभव होता था, परन्तु उसके तुरन्त पश्चात् ही उसकी बातें सुनकर उसका अनुमान

उन्हें भ्रम-सा प्रतीत होने लगता था और फिर उसका व्यवहार तो विष पर अमृत की-सी बूँदें छिड़क देता था।

चीनी सार्जेन्ट बोला, "मेजर साब! हमने आपका बहुत सुन्दर चित्र खिचवाया है। वह अभी आपको हमारे कैम्प में देखने को मिलेगा। आप जिसे चाहें उसे भेज सकते हैं।"

मेजर वीरसिंह बोले, "आप एक चित्र मेरी माता जी के पास भेज दें। वह मेरे लिए बहुत चिन्तित होंगी और......।" कहते-कहते मेजर वीरसिंह रुकगए।

चीनी सार्जेन्ट मेजर वीरसिंह की ओर देखकर बोला, "हाँ-हाँ मेजर साब! आप कहते-कहते रुक क्यों गए। हम आप चाहें तो आपको आपके हजार चित्र दे सकता है। आपकी कोई प्रेमिका हो तो उसे भी आप वह चित्र भेज सकते हैं।"

इस समय वे दोनों चीनी सार्जेन्ट के कैम्प में आचुके थे, जहाँ वह नर्तकी बैठी इनकी प्रतीक्षा कर रही थी, जिसे विशेष रूप से मेजर वीरसिंह को मोहित करने के लिए चीनी सार्जेन्ट ने छोड़ा हुआ था।

वह मुस्करा कर बोली, "सार्जेन्ट साव! मेजर साब को मुझसे सुन्दर प्रेमिका कहाँ मिलेगी? हमारा मानिन्द आर्टिस्ट यह भारत में नहीं पासकता।"

नर्तकी की बात सुनकर चीनी सार्जेन्ट बोला, "इस बात का निर्णय तुम लोग आपस में करलो। मुझे अभी थोड़ा काम और देखना है। मेजर साब! आप यहीं आराम करें, तब तक मैं अपना काम कर आता हूँ।"

चीनी सार्जेन्ट चला गया और मेजर वीरसिंह नर्तकी के पास अकेले बैठे रहगए। नर्तकी ने आँखें तरेरकर पूछा, "क्यों मेजर साब! क्या आपकी कोई और भी प्रेमिका है?" और इतना कहकर उसने पास में रखी शराब की बोतल से गिलास में शराब उडेलदी। फिर शराब का गिलास मेजर वीरसिंह के होठों से लगाकर बोली, "मुझ

जैसी सुन्दरी भारत नहीं पाओगे मेजर साब ! मैं आपको जाने क्यों इतना शीघ्र इतना प्रेम करने लगी ।"

मेजर वीरसिंह शराब के नशे में चूर होकर अपनी बुद्धि और भावना से विरक्त होगए । उनकी दृष्टि के सम्मुख चीनी सौन्दर्य का छलछलाता हुआ प्याला छलक उठा । कितना लबालब था वह जाम । उसका रूप बिखर पड़ा था । उसका यौवन उभार खारहा था, लज्जा और रूप उसपर समर्पित-सा प्रतीत हुआ मेजर वीरसिंह को ।

—१४—

चीनी सार्जेन्ट मेजर वीरसिंह को अपने कैम्प में नर्त्तकी के पास छोड़कर अपने कार्यालय पहुँचा तो वहाँ उनके फ़ोटोग्राफ़र्स, अरटिस्टि, कथाकार तथा सूचना-विभाग के सलाहकार पहले से ही उसकी प्रतीक्षा कररहे थे। सबने एक साथ खड़े होकर सार्जेन्ट को सेल्यूट दिया और वह सीधा कार्यालय के अन्दर चला गया। अन्दर जाकर उसने उन सबको, जो उसने बाहर थे, अन्दर आने का आदेश दिया। कथाकार ने अपनी पांडुलिपि लेकर कार्यालय में प्रवेश किया और उसके पीछे-पीछे फ़ोटोग्राफ़र तथा अन्य लोग भी अन्दर गए।

"तुम्हारी कहानी तैयार है कथाकार !"

"जी हुज़ूर !"

"अपनी कहानी हमें संक्षेप में सुनाओ।"

कथाकार ने कहानी सुनानी प्रारम्भ की, "अमरीका और पश्चिमी देशों के पिछलगे भारत के अवसरवादी नेताओं ने स्वतंत्र होने के पश्चात् भी अपना साम्राज्यवादी रवैया नहीं बदला।"

"बहुत ठीक।" अपना मोटा सिगार सिलगाकर उसमें लम्बा कश खीचते हुए सार्जेन्ट बोला।

"भारत ने अवसरवादी और पूँजिपतियों के पिछलगे नेताओं का यह रवैया देखकर चीन को अपनी भारत-चीन सीमा की चौकियों को सुदृढ़ करना पड़ा।"

"बहुत सुन्दर ! बहुत सुन्दर !" चीनी सार्जेन्ट सीना तानकर बोला।

"भारत-सरकार ने चीनियों को अपनी रक्षा-चौकियों को सुदृढ़

करते देखकर अपनी सेना सीमा पर भेज दी। भारत की इस सेना ने भारत-चीन-सीमा पर बसे चीनियों पर हमले करने प्रारम्भ कर दिए।

चीन सरकार ने भारत-सरकार को इस विषय में बहुत से विरोध पत्र भेजे, परन्तु भारत-सरकार ने उनकी कोई परवाह नहीं की।

भारत के सैनिकों ने फिर आगे बढ़-बढ़ कर चीन की चौकियों पर भी धावे बोलने प्रारम्भ कर दिए।"

"बहुत बढ़िया। यह खूब लिखा तुमने।" और फिर फ़ोटो-ग्राफ़र की ओर देखकर पूछा, "तुमने सुना कुछ।"

"जी सरकार!"

"तुमने भारत के हमला करने वाले सैनिकों के चित्र खींचे?"

"जी सरकार।"

फिर कुछ सोचकर सार्जेन्ट ने पूछा, "परन्तु तुमने वे चित्र कैसे खींचे? भारत के सैनिकों ने हमारी चौकियों पर आक्रमण तो किये नहीं।"

फ़ोटोग्राफ़र बोला, "किए तो नहीं, परन्तु हमने आया हुआ बना लिया उन्हें।"

"वह कैसे?" सार्जेन्ट ने पूछा।

"सरकार हम भारतीय बन्दियों को बल पूर्वक अपनी चौकियों पर लेगए और उनके हाथों में रायफ़लें दे-देकर उनके चित्र खींच लिए।

और सरकार हम कुछ भारतीय जवानों के शवों को घसीट लाए। उन्हें झाड़ियों के पीछे खड़े करके उनके हाथों में रायफ़लें बाँधकर इस खूबी से चित्र खींचे कि आप उन्हें देखकर दंग रह जायेंगे।" इतना कह कर उसने चित्रों का एक पुलिन्दा उठाकर सार्जेन्ट की मेज़ पर रख दिया।

चीनी सार्जेन्ट ने उन चित्रों को उलटपलट कर देखा तो वह प्रसन्नता से उछल पड़ा। उसने खड़ा होकर फोटोग्राफ़र की पींठ ठोंकी और बोला, "तुमने कमाल कर दिया फोटोग्राफ़र! तुमने कमाल कर

दिया। हम तुमसे बहुत प्रसन्न हुए। तुमने सचमुच पुरस्कार का कार्य किया है। तुमको हमारा माऊ-चाऊ का पुरस्कार मिलेगा। तुमने सारी कहानी में जान डाल दी है। तुम्हारे ये चित्र जब हमारी फिल्ममें आयेंगे तो सारा संसार एक स्वर से कह उठेगा कि हमलावर चीन नहीं भारत है। तुमने हमारी फिल्म को चार चाँद लगा दिए।"

सार्जेन्ट फिर कथाकार की ओर मुँह करके बोला, "अपनी कहानी आगे सुनाओ। तुम्हें पसंद आए ये चित्र ?"

"बहुत सुन्दर बने हैं। हमारी फिल्म इन्हीं चित्रों से प्रारम्भ होगी। हमारी फिल्म की कथा यहीं से प्रारम्भ होती है। हम लोगों ने भारत के अपनी सीमा पर किए गए आक्रमण को रोका भर है। हम साम्यवादी लोग कभी किसी पर आक्रमण नहीं करते।" इतना कहकर कथाकार ने अपनी कहानी आगे बढ़ाई। "भारतीय जवानों के इन हमलों से हमारे बहुत से सैनिक घायल हुए और मारे गए। हमारी शान्ति-प्रिय जनता को बहुत कष्ट उठाना पड़ा। भारतीय सैनिक उनका बहुत-सा माल असबाव और उनके जानवरों को बलपूर्वक उनसे छीनकर ले गए।"

चीनी सार्जेन्ट ने फिर फ़ोटोग्राफर की ओर मुख करके पूछा, "क्या तुमने ऐसे भी चित्र बनाए हैं जिनमें भारतीय सैनिकों ने चीनी जनता पर ऐसे अत्याचार किए हैं ?"

"जी सरकार !" और इतना कहकर उसने एक दूसरे चित्रों का पुलिन्दा उसकी मेज पर रख दिया।

चीनी सार्जेन्ट ने उन्हें भी ध्यानपूर्वक देखा और देखकर वह नाच उठा। उसने हर्षित होकर घंटी बजाई तो एक सैनिक ने अन्दर प्रवेश किया।

सार्जेन्ट बोला, "हमारा मुँह क्या देखता है ? फौरन चार पाँच बोतल शराब अन्दर आने दो। हमारे आरटिस्टों ने कमाल का काम किया है। इन सबको हमारी बढ़िया वाली शराब पिलाओ।"

कुछ देर शराब का दौर चला। सार्जेन्ट और कलाकार झूम उठे।

शराब के नशे में उनकी खोपड़ियाँ टनाटन बोलने लगीं। उनके अन्दर से झंकार आने लगीं।

सार्जेन्ट ने कथाकार की ओर संकेत करके कहा, "सुनाते जाओ अपनी कहानी। तुमने हमारे मतलब को बिल्कुल ठीक-ठीक समझकर अपनी कहानी लिखी है। हम यही चाहते थे।"

कथाकार शराब के नशे में झूम उठा था। उसने कथा कहनी प्रारम्भ की और फ़ोटोग्राफ़र ने चित्रों के पुलिन्दे सार्जेन्ट के सम्मुख प्रस्तुत करने प्रारम्भ किए। वह बोला, "चीन-सरकार भारतवासियों को चीनियों का भाई मानती थी। वह भारत से कोई झगड़ा नहीं मोल लेना चाहती थी। उसने हानि उठाकर भी फिर कई विरोध-पत्र भारत को लिखे, परन्तु उसपर उनका कोई प्रभाव न पड़ा। भारत के सैनिक हमारी सीमा पर उत्पात मचाते ही रहे और उनकी वे कार्यवाहियाँ दिन-प्रति-दिन बढ़ती ही गईं।

अन्त में मजबूर होकर हमें भी अपनी रक्षा-चौकियों को दृढ़ करना पड़ा। हमें भी शक्ति का उत्तर शक्ति से देना पड़ा, परन्तु ऐसा करने पर भी हमने भारतवासियों को कोई कष्ट नहीं दिया।

हमने देखा कि भारत की सीमा के अन्दर की जनता बहुत दुखी थी। भारतीय सैनिक उनपर मनमाने अत्याचार कर रहे थे। उन लोगों ने हमें अपनी सहायता के लिए आमंत्रित किया। हम लोग आगे बढ़े और हमने उन बर्बर भारतीय सैनिकों से उनकी रक्षा की। उन लोगों ने हमारे सैनिकों का स्वागत किया और अपने दुख-दर्द की कहानियाँ सुनाईं।

हमारी सेना अपनी रक्षा के लिए आगे बढ़ी तो भारत के सैनिकों ने आत्मसमर्पण करना प्रारम्भ कर दिया। हमने उनके साथ भी भाई चारे का व्यवहार किया। उनके घायलों का अपने हस्पतालों में लाकर वैसा इलाज किया, जैसा आज तक कभी किसी देश की सरकार ने युद्ध-बन्दियों के साथ नहीं किया।

जब हमने देखा कि भारत की अकड़ निकल गई और उनकी वीरता खाक में मिलगई तो हमने अपनी सेना वापस बुलाली। हमारे हाथ जो सामान लगा था, हमने वह भी उन्हें वापस लौटा दिया।

हमने संसार को दिखा दिया कि चीन कितना सभ्य और शान्तिप्रिय देश है। उसका व्यवहार अपने पड़ौसी देशों के साथ कितना मित्रतापूर्ण है, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि कोई देश अमरीका इत्यादि पूँजीपति देशों का पिछलगा बनकर हमारी सीमा का उलंघन करे, यह हम कभी सहन नहीं करेंगे।''

सार्जेन्ट यह कहानी सुनकर मंत्र-मुग्ध होगया। इस कहानी की पृष्ठ-भूमि में चीनी फोटोग्राफ़र ने जो चित्र तय्यार किए थे उन्हें देखकर वह बहुत संतुष्ट हुआ।

यह सब सुनकर उसने सूचना-विभाग के सलाहकार के अतिरिक्त अन्य सबको बाहर जाने का आदेश दिया। वह गम्भीर वाणी में बोला, "अब इस चित्र को तुरन्त तय्यार कराना चाहिए और इसका व्यापक प्रसार होना चाहिए। हम तुम्हारे कार्य से बहुत प्रसन्न हैं। हमारा रेडियो खूब काम कर रहा है। हमारे सूचना-प्रतिनिधि आज संसार में सबसे अधिक सजग हैं। हमें इस समय केवल भारत से ही नहीं रूस से भी टक्कर लेनी पड़ रही है। रूस धीरे-धीरे कम्युनिज्म का शत्रु होता जारहा है। हमारा प्रचार रूस को सम्पूर्ण कम्युनिस्ट संसार में कम्यु-निज्म सिद्धान्तों का विरोधी और लेनिन तथा मार्क्सवाद का शत्रु घोषित करेगा।''

हमारा प्रचार दोनों दिशाओं में बहुत वेग से चल रहा है। हमारा रूस से सैद्धान्तिक मतभेद उसे विश्व के सब कम्युनिस्ट देशों की दृष्टि में नीचे गिरा देगा। हम रूस के विरुद्ध एक साठ हजार शब्दों का ऐसा सैद्धान्तिक अटम बम तय्यार कर रहे हैं जो रूस के अटमबमों को परास्त कर देगा।

हमने अमरीका की शक्ति को एशिया में कम करने के लिए पाकिस्तान पर हाथ रख दिया है। हम इस समय भारत और पाकिस्तान के आपसी मतभेद का पूरा-पूरा लाभ उठायेंगे। वहाँ के नेता हमारे चंगुल में फँस गए हैं। वे अपने भारत से झगड़े की झोंक में आकर हमारे संकेत पर नाचने लगेंगे। अब हम उन्हें जिस स्वर में भी बुलायेंगे, वे बोलेंगे।"

यह सुनकर चीनी सार्जेन्ट कुर्सी से उछल पड़ा। उसने उठकर सूचना-विभाग के सलाहकार की कौली भरली और गद-गद होकर बोला, "मैं तुम्हारे कार्य से बहुत प्रसन्न हूँ। हमारे नेता चाऊ माऊ भी तुम्हारी बहुत सराहना करते हैं।

अब यह बताओ कि तुमने इन भारत के युद्ध-बन्दियों का क्या किया? हमारे देश में अन्न की वैसे ही बहुत कमी है, फिर इन इतने आदमियों के खर्च को क्यों सिर पर लादकर रखा जाए?

इस बीच जो तुमने इनमें कम्युनिज्म के अपने सिद्धान्तों का प्रचार किया, उनका प्रभाव इनपर कैसा पड़ा? क्या तुम्हारे विचार से इनके कुछ दिमाग बदले? क्या ये जब भारत में लौटकर जाएँगे तो वहाँ हमारे अनुकूल वातावरण बनाने में कुछ उपयोगी सिद्ध होंगे?

मेजर वीरसिंह के विषय में तुम्हारा क्या विचार है? ब्रिगेडियर धीरसिंह तुम्हें कैसा प्रतीत हुआ?"

सूचना-विभाग का सलाहकार बोला, "इस विषय में अभी निश्चित रूप से मैं कुछ नहीं कह सकता। मैंने अपनी पूरी शक्ति इस दिशा में लगाई है और यदि मैं यह समझता कि मेरा प्रयास एकदम व्यर्थ है, तो मैंने अब तक कभी का इन्हें भारत के हवाले कर दिया होता।

मैंने भारतीय रेड-क्रास के लोगों को तो क्या अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षकों तक को इनसे मिलने की अनुमति नहीं दी। ये लोग समझ रहे हैं कि इनके पत्र इनके सम्बन्धियों के पास जारहे हैं, परन्तु सच यह है कि मैंने इनका एक भी पत्र अपने कार्यालय से आगे नहीं बढ़ने दिया और

न भारत से आने वाला इनके सम्बन्धियों का कोई पत्र इन तक पहुँच सका है।

मेजर वीरसिंह कच्चे दिमाग का छोकरा है। उसपर कम्युनिज्म का कुछ रंग भी चढ़ा है, परन्तु पूरी तरह नहीं। ब्रिगेडियर धीरसिंह बहुत गम्भीर व्यक्ति है। बहुत गहरा है वह। उसे समझने में मुझे बहुत कठिनाई होरही है। इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि यदि उस पर अपना रंग एक बार चढ़ गया तो वह बहुत काम का व्यक्ति सिद्ध होगा। परन्तु उस पर रंग चढ़ाने के लिए आपकी नर्त्तकियाँ या शराब का प्रयोग कार्य नहीं करेगा। साधारण आकर्षण भी उसे उसके मार्ग से डिगा नहीं सकते। उसे यदि बहुत ऊँची राजनीति की हवा खिलाई जाए तो सम्भव है उसका दिमाग कुछ बदल जाए।"

सूचना सलाहकार की बात को सार्जेन्ट ने बहुत ध्यानपूर्वक सुना। वह गम्भीरवाणी में बोला, "तुम्हारा अनुमान सही है। ब्रिगेडियर धीरसिंह बहुत काम का आदमी सिद्ध होसकता है। मैं उसको बहुत ऊपर की हवा खिलाने का प्रबन्ध करूँगा। अब तुम जा सकता है और हाँ! यह चित्र बहुत शीघ्र तय्यार होजाना चाहिए। यह हमारे प्रचार का बहुत बड़ा साधन बनेगा।"

"यह कार्य बहुत शीघ्र होगा।" कहकर सूचना अधिकारी चला गया और सार्जेन्ट अपने सिगार में कश लगाता हुआ कार्यालय में घूमने लगा। उसने शराब की बोतल उठाकर थोड़ी पी और फिर ब्रिगेडियर धीरसिंह के विषय में सोचने लगा।

ब्रिगेडियर धीरसिंह उसकी दृष्टि में ऐसा व्यक्ति था जिसका प्रयोग वह किसी बहुत महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि के लिए कर सकता था, परन्तु यह तभी सम्भव था जब चीनी साम्यवाद के सिद्धान्तों पर उसका विश्वास जम जाए।

इसके लिए उसे कुछ करना है, बस यही इस समय उसके मस्तिष्क की समस्या थी और इसीमें उलझा हुआ वह न जाने कितनी रात तक उसी कार्यालय में घूमता रहा।

'महिला-रक्षा-केन्द्र' का गठन अब जैपुर के नागरिक स्तर पर न रहकर अखिल भारतीय रूप धारण कर चुका था। केन्द्र की शाखाएँ अब भारत के विभिन्न प्रान्तों की राजधानियों में खुलकर उनका प्रसार भारत के सभी प्रमुख नगरों तक पहुँच चुका था। भारत के रक्षा-मंत्री द्वारा दिए गए सहयोग और आश्वासनों से प्रेरणा प्राप्त कर केन्द्र के कार्यकर्त्ताओं ने केन्द्र के कार्यक्रमों को बहुत व्यापक बना दिया था।

अब 'महिला-रक्षा-केन्द्र' का कार्य केवल सैनिकों के लिए जर्सी और मौजे तय्यार कराना मात्र न रहकर उन सभी क्षेत्रों में प्रवेश कर चुका था जिनके द्वारा भारत का महिला-समाज देश की वर्तमान संकट-कालीन स्थिति में रक्षा-कार्यों में सहयोग प्रदान कर सकता था।

बहिन सुभद्रादेवी और शीलकुमारी ने अपना शेष जीवन 'महिला-रक्षा-केन्द्र' को अर्पित कर अपना पूरा समय-समय उसीके लिए लगा दिया था।

'महिला-रक्षा-केन्द्र' के अन्तर्गत 'साहित्य-केन्द्र' 'कला-केन्द्र' 'बाल-केन्द्र' 'स्वास्थ्य-केन्द्र' 'उत्पादन तथा प्रसार केन्द्रों' की व्यवस्था की गई थी। इन केन्द्रों का कार्य-क्रम सहकारी व्यवस्था के अन्तर्गत संचालित किया जारहा था। इनके अतिरिक्त 'सैनिक-सहयोग-केन्द्रों' की भी स्थापनाहुई।

इन केन्द्रों के द्वारा देश को रक्षा-प्रयत्नों में भारतीय जन-जीवन का सक्रिय प्रदान करने की राष्ट्रीय भावना का वह उद्वेलन हुआ कि सम्पूर्ण राष्ट्र में एक नई लहर दौड़ गई।

'महिला-रक्षा-केन्द्र' के कार्यों की सभी ने सराहना की और उसकी ख्याति को देखकर भारत के प्रधानमंत्री तथा राष्ट्रपति ने भी अपना वरद हस्त उस पर रखा।

आज से भारत की राजधानी में केन्द्र का पाँच दिवसीय अधिवेशन प्रारम्भ होरहा था। उसमें भाग लेने के लिए देश के विभिन्न नगरों की प्रतिनिधि वहाँ पहुँची थीं।

सुभद्रादेवी, शीलकुमारी और राजरानी उस अधिवेशन की व्यवस्था और कार्य के समुचित संचालन के लिए एक सप्ताह पूर्व ही दिल्ली पहुँच गई थीं।

शीलकुमारी आराम कुर्सी पर बैठी आज का दैनिक-पत्र देखरही थीं। उनकी दृष्टि पत्र की हेड लाइन पर गई तो उन्हें हँसी आगई। सुभद्रादेवी ने शीलकुमारी को हँसते देखकर पूछा, "क्या लिखा है?"

शीलकुमारी मेज पर पत्र रखकर बोली, "हमारे प्रधानमंत्री झूठे को उसकी सीमा तक पहुँचाने में बहुत पटु हैं। चीनी नेता अपने हर झूठ के जाल में स्वयं फँसते जारहे हैं। कोलम्बो प्रतिनिधियों का शानदानदार स्वागत कर चीनी नेताओं ने उनपर यह जता दिया कि वे उन्हें मान गए हैं। उनके इस झूठे प्रदर्शन का भारत के समझदार नेताओं पर कोइ प्रभाव नहीं हुआ और उन्होंने कोलम्बो प्रस्तावों को उनके स्पष्टीकरणों के साथ स्वीकार करलिया। अब बेचारे चीनी नेता फेल हो गए और बौखला उठे। उन्होंने श्रीमती भंडारनायका पर आरोप लगाया है कि उन्होंने कोलम्बो-प्रस्तावों का स्पष्टीकरण भारत और चीन को पृथक-पृथक दिया है। चीनी नेताओं के इसी सुफेद झूठ का आज श्रीमती भंडारनायका ने खंडन किया है।

पारस्परिक बातों की दिशा ? कोलम्बो प्रस्तावों से हटकर भारतीय युद्ध-बन्दियों की ओर मुड़ गई। सुभद्रादेवी ने पूछा, "शीलकुमारी! इन चीनियों ने स्वयं हमारी सीमा पर आक्रमण किया और स्वयं ही

युद्ध बन्द कर अपनी सेना पीछे हटानी प्रारम्भ कर दी।

ये संधि और सुलह की बातें करतेहैं और हमारे युद्ध-बन्दियों को मुक्त नहीं कर रहे। मुक्त करना तो दूर को बात रही, इन्होंने अन्त-राष्ट्रीय रेडक्रास के प्रेक्षकों तक को उनसे मिलने की अनुमति नहीं दी। यह सब कैसा गोल-माल है।

शीलकुमारी मुस्कराकर बोलीं, "केवल इतना ही नहीं सुभद्रादेवी! जब भारत सरकार ने उनके इस रवैये पर उनके पास विरोध-पत्र भेजे तो उन्होंने एक दूसरा राग अलापना प्रारम्भ कर दिया। उन्होने भारत सरकार पर आरोप लगाया कि भारत-सरकार चीनी नज़रबन्दियों के साथ बहुत बड़ा दुर्व्यवहार कररही है।

चीनी नेताओं की इस चाल का भी हमारे प्रधानमंत्री ने देखो कैसा भंडा-फोड़ किया। उन्होंने चीनी सरकार को आज्ञा देदी कि वह अपना जहाज़ भेजकर अपने नजरबन्दों को चीन ले जायें, उन्हें इसमें कोई आपत्ति न होगी।

यह समाचार प्राप्त कर चीन का जहाज़ भारत आया तो बहुत से चीनी नजरबन्दों ने चीन जाने से इंकार करदिया।"

यह सुनकर सुभद्रादेवी के चेहरे पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। वह बोलीं, "इन चीनी नजरबन्दों ने चाऊ माऊ के झूठ बोल-बोलकर फूले गालों पर खूब करारा तमाचा लगाया। उन्होंने संसार के समक्ष स्पष्ट करदिया कि भारत चीनी नज़रबन्दों के साथ कितना सहृदयता-पूर्ण व्यवहार कर रहा है।"

शीलकुमारी गर्वपूर्ण स्वर में बोलीं, "चीनी-नजरबन्दों से अपने देश की दशा छिपी नहीं है। वे जानते हैं कि उन्हें किस प्रकार चीन में जाकर सैनिक-शासन की चक्की में पिसना होगा। उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता एकदम नष्ट होजाएगी। उनकी प्राचीन सांस्कृतिक मान्य-ताओं को कुचल कर उनकी खोपड़ी में भौतिकवाद का अंकुश गाड़ दिया जायेगा। चीन में पहुँचकर उनकी अपनी बुद्धि अपनी नहीं रहेगी।

उनका अपना शरीर अपना नहीं रहेगा, उनकी अपनी कार्य-प्रणाली अपनी नहीं रहेगी। उन्हें चाऊ माऊ की चांऊ-चांऊ में अपनी चांऊ-चांऊ मिलानी होगी, उन्हीं के संकेतों पर दास बनकर नाचना होगा, और जो मानव-स्वतंत्रता को कुचलने और पीसने की मशीन चीन के नेताओं ने गढ़कर तैयार की है, उसके कील-पुर्जे बनना होगा, जीवन भर पिस-पिस कर मर जाना होगा।

वे भारत के मुक्त जीवन का स्वतंत्र वातावरण देख चुके हैं। यह खुली हवा उन्हें चीन की घुटन में कहाँ नसीब होगी ? वहाँ तो उन्हीं लोगों के गले फूट पड़े हैं जिन्होंने साम्यवाद के चमकीले रंगों की चमक-दमक के भुलावे में आकर एक बार भूल से चीनी नेताओं की ओर आशा भरी दृष्टि से देखा और फिर जीवन भरके लिए उसके दास बन गए।"

शीलकुमारी कुछ ठहरकर बोलीं, "चीन के धोखेबाज़ नेता बहुत प्रसन्न थे कि वे हमारे राजनीतिज्ञों को धोखा देकर मूर्ख बनाने में सफल हुए। ऊँगली पकड़ते-पकड़ते उन्होंने भारत के पोंहचे पर हाथ डाल दिया। परन्तु उन्हें ज्ञात नहीं था कि यह पहुँचा वह पहुँचा है जिसने बिना तोप बन्दूकों के विश्व के महानतम साम्राज्यवाद से लोहा लेकर भारत को स्वतंत्र कराया था। चीनी नेता आज के युग में जिस साम्राज्य वाद का स्वप्न देख रहे हैं वह शताब्दियों पुराना पड़ चुका है, उसकी कब्र खुद चुकी है और उसे दफ़ना दिया गया है। चीनी नेता कब्र के दबे मुर्दे को उखाड़ कर उसमें प्राण फूंकना चाहते हैं।" इतना कहकर शीलकुमारी ने शांति और संतोष के साथ मुस्कराकर कहा, "चीनी नेताओं ने हमारे इस विश्व-क्रांति के तपे मंजे सेनानी की सहयोग और सद-भावना की नीति को अपनी नासमझी और दुराशापूर्ण कूट नीति के फलस्वरूप निर्बलता और कायरता समझा। इन्हें हमारे इस तपस्वी की राजनीतिक सूझ-बूझ, दृढ़ तटस्थतावादी नीति का ज्ञान नहीं था। अब देखना सुभद्रादेवी ! कि चीनी नेता जिस करवट भी बैठने का प्रयास

करेंगे इनकी बाल उड़ी चाँद पर उधर ही करारी चपत पड़ेगी। इन्हें अपनी मूर्खतापूर्ण नीति का फल भोगना होगा। इनकी चाँद के बचे-कुचे बाल भी उड़ जायेंगे और वह समय दूर नहीं है जब चीन की जनता को एक दूसरी क्रांति कर, अपने सिर से इन अमानवीय निरंकुश शासकों को उतार फेंकना होगा। चीन की भूख और निर्धनता से पिसती हुई मानवता कराह उठी है। इस सेनिक-शासन की जड़ें खोखली हो चुकी हैं। संसार के समक्ष इसका मुँह काला होचुका है और विश्व के सभी महान् देशों ने इन चीनी नेताओं के घृणित इरादों को अच्छीतरह समझ लिया है। अब इनका धोखे और मक्कारी का झूठा प्रचार नाकाम होचुका है। विश्व की मानवता को विनाश के गर्त की ओर ले जाने वाले इस विषधर का फन कुचलने के लिए हर देश दृढ़प्रतिज्ञ है। चीनी नेताओं के इरादे खुलकर संसार के सामने आचुके हैं।

ये बातें चल ही रही थीं कि तभी राजरानी ने कमरे में प्रवेश कर दोनों को प्रणाम किया। वह अपनी सुडौल कलाई में बँधी घड़ी की ओर देखकर बोली, "मैं चल रही हूँ भाभीजी! मुझे कुछ देर पूर्व ही पहुँचना है।"

शीलकुमारी ने अपनी घड़ी देखकर कहा, "ओह! यह तो नौ बज रहे हैं। अच्छा तुम चलो राजरानी! हम लोग भी एक घंटे तक वहाँ पहुँच रही है।"

राजरानी के अधिवेशन-भवन की ओर प्रस्थान करने पर शील-कुमारी और सुभद्रादेवी ने भी आज के अधिवेशन-सम्बन्धी अपनी तय्यारी करनी प्रारम्भ करदी।

शीलकुमारी ने अपने पोर्टफोलियों में से आवश्यक काग़ज निकाल कर उन्हें एक फाइल में लगा लिया और वह इस समय 'महिला-रक्षा-केन्द्र' के आज तक के कार्य की प्रगति-रिपोर्ट की प्रतीक्षा में थीं। तभी एक महिला ने कमरे में प्रवेश किया और छपी रिपोर्ट शीलकुमारी को

देकर बोली, "देर तो नहीं हुई बहिनजी !

शीलकुमारी ने मुस्कराकर कहा, "महिला-रक्षा-केन्द्र की कार्यकर्त्ता भला कभी देर कर सकती है अपने कार्य में। हमारी संस्था की यही तो एक विशेषता है कि इसका हर कार्य समय से पूर्व होता है।"

शीलकुमारी के मधुर शब्दों ने कार्यकर्त्ता की भावनाओं को छू दिया। वह प्रसन्न होकर बोलीं, "कार्य समय पर होगया, इसकी मुझे हार्दिक प्रसन्नता है, वरना एक बार तो आशा ही नहीं रही थी।"

"क्यों ? ऐसी क्या बात हुई ?" शीलकुमारी ने पूछा।

वह मुस्कराकर बोली, "हुआ क्या बहिनजी ! जब सब कुछ छपने को तय्यार होगया तो बिजली चली गई और छापेखाने की मशीन जाम होगई।"

"तब क्या किया तुमने ?" तनिक घबराहट से शीलकुमारी ने पूछा।

वह मुस्कराकर बोली, "किया क्या बहिनजी ! यह सब कुछ छोटी पैर से चलने वाली मशीन पर छापा गया। इसीलिए इतना विलम्ब हुआ, वरना प्रातःकाल आप सोकर उठतीं तो छपी रिपोर्ट आपको अपनी मेज़ पर रखी मिलती।"

यह सुनकर सुभद्रादेवी बोलीं, "तब तो तुम्हें अपनी पूरी रात प्रेस में ही काली करनी पड़ी होगी। अभी नहाई-धोई भी नहीं हो सम्भवतः। जाओ शीघ्र नित्य-कर्म से निवृत्त होकर नाश्ता करलो, फिर अधिवेशन में चलेंगे।"

कार्यकर्त्ता के चले जाने पर शीलकुमारी बोलीं, "बहिन सुभद्रा-देवी ! मुझे 'महिला-रक्षा-केन्द्र' के कार्यकर्त्ताओं की ओर से बहुत संतोष है। उनकी कार्य-संलग्नता को देखकर मेरा हृदय गद्गद् हो उठता है। हमारे कार्यकर्त्ताओं में अपने कर्त्तव्य को निभाने की बहुत प्रबल आकांक्षा रहती है।

हमारी इस संस्था की यही सबसे बड़ी विशेषता है। मैं इसीको अपनी सबसे बड़ी शक्ति मानती हूँ।"

"इसमें कोई संदेह नहीं शीलकुमारी! परन्तु इन कार्यकर्त्ताओं को कर्त्तव्य के प्रति प्रेरित करने वाला तुम्हारा सरल और सद्भावना पूर्ण व्यवहार है, तुम्हारा त्याग और तुम्हारी तपस्या है। मैंने एक नहीं अनेकों संस्थाओं के अन्दर घुसकर देखा है। ऊपर से सेवा ढोंग रचकर उनके अन्दर कैसी-कैसी गंदगी और घृणित राजनीति चलती है, उसका यदि तुम्हारे सम्मुख बयान करूँ तो तुम्हारा हृदय घृणा और क्षोभ से व्याकुल होउठेगा।"

अधिवेशन का समय होरहा था। शीलकुमारी और सुभद्रादेवी ने भी अधिवेशन-भवन की ओर प्रस्थान किया।

'महिला-रक्षा-केन्द्र' का अधिवेशन समाप्त कर शीलकुमारी सुभद्रा-देवी और राजरानी जैपुर लौट गईं। इस अधिवेशन में जो विशेष कार्यक्रम 'केन्द्र' ने अपना मुख्य लक्ष बनाकर सम्मुख रखा, वह उन भारतीय जवानों के परिवारों की खोज-खबर लेने का था जो चीन के साथ सीमा-युद्ध में काम आचुके थे, चीन में बन्दी थे अथवा अभी तक लापता थे।

इस दिशा में कार्य करने का शीलकुमारी ने एक व्यापक कार्य-क्रम बनाया। भारत के रक्षा-मंत्रालय से ऐसे जवानों की सूची प्राप्त करने के लिए पत्र-व्यवहार किया और वह सम्पूर्ण सूची प्राप्त होजाने पर उसे आवश्यक कार्यवाही के लिए अपने विविध केन्द्रों में प्रसारित किया। उन्होंने अपने कार्यकर्त्ताओं को उन जवानों के परिवारों की स्थिति लेखा-जोखा तैयार करने का आदेश प्रसारित किया। इसमें विशेष रूप से उनकी आर्थिक स्थिति, परिवार के व्यक्तियों का स्वास्थ्य और जवानों के बच्चों की उचित शिक्षा के विषय में जानकारी प्राप्त की।

यह कार्य शीलकुमारी ने विद्युत-गति के साथ प्रारम्भ किया और जहाँ-जहाँ से उन्हें सूचना मिलती गई वहीं-वहीं के कार्यकर्त्ताओं को उन्होंने उन परिवारों की सहायता के लिए उनके मुहल्लों और गाँवों में 'रक्षा-समितियाँ' बनाने पर बल दिया।

इस कार्य में शीलकुमारी को आशा से अधिक सफलता मिली। एक ही महीने में ऐसी कई सौ रक्षा-समितियाँ बनाई गईं और उन्होंने उन परिवारों की आर्थिक तथा अन्य कठिनाइयों को दूर करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर संभाला।

रक्षा-मंत्रालय ने 'महिला-रक्षा-केन्द्र' के इस महत्वपूर्ण कार्य की बहुत सराहना की और भारतीय जनता भी इसमें सहयोग प्रदान करने में पीछे नहीं रही।

इन जवानों के बच्चों को पूरी तरह से निशुल्क शिक्षा देने का प्रबन्ध करने के लिए शीलकुमारी ने शिक्षा-मंत्रालय से पत्र-व्यवहार कर उन्हें आवश्यक सुविधाएँ प्रदान कराने का प्रबन्ध किया।

शीलकुमारी अपनी कोठी पर बैठी स्टेनोग्राफर को कुछ पत्र लिखा रही थीं तभी सुभद्रादेवी वहाँ आगईं। शीलकुमारी ने पत्र लिखाना बन्द कर स्टेनों से तब तक लिखाए गए पत्रों को टाइप करने का आदेश दिया और फिर मुस्कराकर बोलीं, "बहिन सुभद्रादेवी! चीन ने अब भारतीय युद्ध-बन्दियों को मुक्त करने का निश्चय करलिया है। भारतीय सेनिकों के एक दल को वह शीघ्र ही भारतीय सीमा पर छोड़ रहा है।"

सुभद्रादेवी बोलीं, "आज पढ़ा तो था मैंने पत्र में, परन्तु वह सब युद्ध-बन्दियों को एक साथ मुक्त नहीं कर रहा।"

शीलकुमारी विश्वासपूर्ण स्वर में बोलीं, "करेगा, वह सभी को मुक्त करेगा। हमारे सेनिकों को रखकर वह क्या करेगा? उसके पास तो अपने ही सेनिकों को खिलाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं है।" इतना कहकर वह तनिक गम्भीर होगईं। फिर धीरे-धीरे बोलीं, "चीनियों ने हमारे सेनिकों को पथ-भ्रष्ट करने के विचार से इतने दिन अपने यहाँ रोके रखा। उन्होने अवश्य हमारे जवानों के मस्तिष्क खराब करने का प्रयास किया होगा। हमें बड़ी सतर्कता से अपने जवानों के मस्तिष्क पर पड़े इन चीनियों के विषाक्त वातावरण को दूर करना होगा।"

शीलकुमारी ने यह बात इतनी गम्भीरतापूर्वक कही कि सुभद्रादेवी की कुछ समझ में ही न आसका। वह प्रश्नवाचक दृष्टि से शीलकुमारी के चेहरे पर देखती रहीं, मानो पूछना चाहती थीं कि उनकी इस बात

का क्या अर्थ था ।

शीलकुमारी मुस्कराकर बोलीं, "यह सीता की अग्नि-परीक्षा का समय आरहा है बहिन सुभद्रादेवी ! हमारे ये सेनिक चीनी विष की सरिता में डूबकर बाहर निकले हैं। हम लोग अभी समझ नहीं सकते कि इनके स्वस्थ बदन में कहाँ-कहाँ और किस-किस प्रकार चीनी विष ने प्रवेश किया है। हमें बड़ी सावधानी से इन्हें विष-मुक्त करना होगा। इनके इस विष की चिकित्सा का जितना अच्छा प्रबन्ध हम स्त्रियाँ कर सकती हैं, उतना अन्य कोई नहीं कर सकता ।

इनकी चिकित्सा करना सरकार के वश की बात नहीं हैं। हमारे डाक्टर और सर्जन भी इस चिकित्सा में सफल नहीं होसकते। कानून और औषधि, ये दोनों इस विष के प्रभाव को नष्ट करने में असफल सिद्ध होंगे।"

"तब फिर क्या होगा शीलकुमारी !" सरल गाम्भीर्य के साथ सुभद्रा देवी ने पूछा ।

"होगा, होगा क्यों नहीं। चिकित्सा की जायेगी इनकी। इन्हें माँ की ममता, स्त्री की श्रद्धा, त्याग और प्रेम, पिता का स्नेह, भाइयों और बहिनों के सद्भाव और मित्रों की सहानुभूति तथा प्रशंसा की औषधि दी जायेगी। भारतीय संस्कृति और राष्ट्र-प्रेम का प्याला पिलाया जायेगा। भारतीय दर्शन का अमृत-पान कराकर इनके जीवल में प्रविष्ट जड़ता को दूर करना होगा। इनके जीवन के चारों ओर छाजाने वाले चीनी अन्धकार से इन्हें बाहर निकाल कर भारत-भूमि के प्रकाश में प्रविष्ट कराया जायगा। हमारे कला और दर्शन, हमारी संस्कृति और सभ्यता इनके जीवन में भरे चीनी विष को सोख लेंगे और वे हीरे जो कभी दम-दमा कर हिमालय की वेदी पर अपना सर्वस्व अर्पण करने गये थे, फिर से दमदमा उठेंगे। उनके जीवन का विष और अन्धकार नष्ट हो जायेगा। हमें इस समस्या के प्रति बहुत सजग रहने की आवश्यकता है। हमें ध्यान रखना होगा कि कहीं उनके साथ लिपट कर आया हुआ विष हमारे

सम्पूर्ण राष्ट्रीय जीवन को विषाक्त न कर डालें । हमें उनका नव-संस्कार करना होगा । यही होगी सीता की अग्नि-परीक्षा ।

मैंने अभी-अभी एक पत्र अपने रक्षा-मन्त्री को इस विषय में लिखा है और उनसे छूट कर आने वाले जवानों का पूर्ण परिचय प्राप्त किया है ।"

सुभद्रा देवी बोलीं, "शीलकुमारी ! यह बात तुमने सचमुच राष्ट्र-हित में बहुत महत्वपूर्ण सोची । काजर की कोठरी में प्रविष्ट होने पर स्वच्छ-से-स्वच्छ व्यक्ति को भी कालिया छू सकती है । इसके प्रति निश्चय हीं सतर्कता बरतनी चाहिए ।"

"भारत सरकार ने इस दिशा में बहुत सतर्कता से काम लिया है । उन्होंने चीन से लौटकर आने वाले जवानों को सेनिक-कैम्पों में न भेज कर सीधा लम्बी छुट्टी पर उनके घर जाने का आदेश दिया है । इससे अन्य सेनिकों में उनका विष प्रविष्ट न हो सकेगा और वे लोग अपने परिवारों में जाकर जब मिलेंगे तो उनका पारिवारिक स्नेह उनका उपचार करेगा ।

अधिकांश जवानों के जीवन का साधारण विष तो इसी औषधि से शांत हो जायेगा । वहाँ उन्हें माता, पिता, भाई, बहिन और पत्नी का स्नेह और प्रेम प्राप्त होगा । परन्तु जो अधिक विषग्रस्त होचुके होंगे उनके लिए विशेष चिकित्सा का प्रबन्ध सिया जायगा और वह कठिन-कार्य 'महिला-रक्षा-केन्द्र' अपने हाथों में संभालेगा ।

आपकी शिष्या राजरानी का 'कला-केन्द्र' इस दिशा में बहुत महत्व-पूर्ण कार्य करेगा । जिन भारतीय जवानों के मस्तिष्कि पर चीनी कम्यु-निष्ट बिचारधारा की जड़ता का विष इतना घातक छा गया होगा कि उनकी साँस्कृतिक भावना और राष्ट्र-प्रेम उसके नीचे दब गए होंगे उन्हें 'कला-केन्द्र' के हास्पिटल में भर्ती किया जायगा ।" इतना कहकर शील-कुमारी मुस्करा दीं।

शीलकुमारी की मधुर मुस्कान के पीछे उनकी कितनी महत्वपूर्ण

योजना छिपी थी इसका अनुमान लगाकर सुभद्रादेवी ने श्रद्धा के साथ उनकी ओर देखा।

शीलकुमारी यों आयु में सुभद्रा देवी से छोटी थी और सत्य यह था कि वह अपने को सुभद्रादेवी से मानती भी छोटी ही थीं, परन्तु उनकी प्रखर बुद्धि और दूरदर्शिता पर सुभद्रादेवी मोहित होउठी थीं। शीलकुमारी की योग्यता और कर्मठता पर आकर्षित होकर उन्होंने अपनी उस छोटी-सी संस्था 'महिला-रक्षा-केन्द्र' की बागडोरें उनके हाथ में दी थीं। शीलकुमारी ने देखते-ही-देखते उस संस्था को देश व्यापी बना दिया और उसके द्वारा राष्ट्र-हित का वह महत्वपूर्ण कार्य किया कि जिसकी सराहना राष्ट्र के हर प्रमुख व्यक्ति ने मुक्त कण्ठ से की।

सुभद्रादेवी ने जिस समय इस संस्था की स्थापना की थी तो उनका लक्ष राष्ट्र के रक्षा-प्रयत्नों में नारी-सुलभ बुनाई-कताई का योगदान देना मात्र था। शीलकुमारी द्वारा इस संस्था का अध्यक्षा-पद संभाल लेने पर केन्द्र का क्षेत्र व्यापक होता गया। राजरानी के प्रयास से 'कला-केन्द्र' की स्थापना हुई, जिसने 'महिला-रक्षा-केन्द्र' के कार्यक्रमों में आकर्षण और माधुर्य का संचार कर उसे चार चाँद लगा दिए।

शीलकुमारी ने केन्द्र को व्यापक बनाने के लिए उसकी शाखाएँ खोलीं और उसे अन्तर-प्रादेशीय स्वरूप प्रदान किया। इस प्रकार इस केन्द्र की निर्माण-शक्ति बढ़ी और अधिकाधिक कार्यकर्त्ताओं तथा व्यवस्थापकों का सहयोग मिला।

गत सप्ताह शीलकुमारी ने केन्द्र के दिल्ली अधिवेशन में भारतीय जवानों के परिवारों को सहयोग प्रदान करने के कार्यक्रम पर विशेष बल दिया था। उसके फलस्वरूप वह कार्य पर्याप्त व्यापक रूप धारण कर सका।

आज चीन से लौटे भारतीय जवानों के विषय में शीलकुमारी ने जो विचार व्यक्त किये उन्हें सुनकर सुभद्रादेवी बहुत प्रभावित हुईं। वह

गद्‌गद् होकर बोलीं, "शीलकुमारी ! तुम्हारी जैसी सूझ-बूझ की दक्ष महिला को मैं 'महिला-रक्षा-केन्द्र' की अध्यक्षा-पद के लिए चुन सकी, अपनी इस दक्षता और योग्यता पर मुझे गर्व है।"

सुभद्रादेवी के मुख से अपनी प्रशंसा के शब्द सुनकर शीलकुमारी नतमस्तक होकर बोलीं, "सचमुच इससे अधिक गर्व की बात अन्य क्या हो सकती है कि आपने एक निरर्थक व्यक्ति के जीवन को सार्थक कर दिया आपने मेरा मार्ग प्रदर्शन कर मेरे जीवन को उपयोगी बना दिया वरना तो पता नहीं अपने शोक और हार्दिक पीड़ा में घुल-घुल कर आज तक जाने मेरी क्या दशा हुई होती।"

सुभद्रादेवी ने स्नेहपूर्ण दृष्टि से शीलकुमारी की ओर देखा। उनकी आत्मा शीलकुमारी के विनयपूर्ण वाक्य सुनकर आत्मविभोर होउठी। उन्हें आज जीवन में सच्चे आनन्द की प्राप्ति हुई।

तभी सुभद्रादेवी को राजरानी का ध्यान आया तो उन्होंने पूछा, "आज राज नहीं दिखाई दी शीलकुमारी !"

शीलकुमारी मुस्कराकर बोलीं, "राज अपने कमरे में बैठी पढ़ रही हैं। परीक्षा जो सिर पर आचढ़ी है उसके। इस वर्ष वह इधर-उधर के कामों में बहुत फँसी रही। इसलिए अब मैंने उसे सब कामों से मुक्त करके परीक्षा की तय्यारी पर लगा दिया है।"

"यह तुमने बहुत अच्छा किया शीलकुमारी ! बच्ची का वर्ष खराब नहीं होना चाहिए।"

शीलकुमारी ने सुभद्रा देवीको सादर उनकी फिटन तक पहुँचाया और उन्होंने विदा ली। आज उनका चित्त बहुत प्रसन्न था।

शीलकुमारी लौटकर फिर अपने कमरे में पहुँच गईं। तब तक स्टेनो भी पहले डिक्टेट कराए हुए पत्रों को लेकर आगई।

—१७—

ब्रिगेडियर धीरसिंह अब हॉस्पिटल के कैम्प से अन्य कैम्प में आगए थे। उन्हें मेजर वीरसिंह से पृथक् कैम्प में रखा गया था और इधर कई दिन से मेजर वीरसिंह की उनसे भेंट भी नहीं हुई थी। उन्होंने इस भेंट न होने को यही समझा कि सम्भवतः उसे उनके निकट आने की आज्ञा न होगी परन्तु इसका मुख्य कारण यह नहीं था। यह सच था कि ब्रिगेडियर अपने कैम्प को छोड़कर अन्यत्र नहीं जा सकते थे, परन्तु मेजर वीरसिंह पर उनसे मिलने में कोई प्रतिबन्ध नहीं था।

आज संध्या को उन्होंने देखा कि मेजर वीरसिंह उनसे मिलने आ रहे थे। उनका आज का रूप देखकर ब्रिगेडियर धीरसिंह सन्न से रह गए। उनकी कुछ समझ में ही न आया कि आखिर मेजर वीरसिंह को यह क्या होगया था।

मेजर वीरसिंह आज अकेले नहीं थे। वह चीनी नर्त्तकी उनके साथ थी। नर्त्तकी की बाँह में मेजर वीरसिंह की बाँह पड़ी थी और दोनों शराब के नशे में झूमते हुए उधर आरहे थे।

वे दोनों आकर ब्रिगेडियर धीरसिंह के निकट खड़े होगए। ब्रिगेडियर धीरसिंह कुछ बोले नहीं।

पहले मेजर वीरसिंह ही बोले, "सर! मैं कई दिन से आपके दर्शन नहीं कर सका। इन्होंने आने ही नहीं दिया मुझे। यह बहुत अच्छी आर्टिस्ट हैं। यह भारत भी होआई हैं।

इन्होंने मुझे यहाँ की खूब सैर कराई। बहुत से चीनी भाइयों से मेरी भेंट कराई। वे सभी लोग मुझसे बड़े प्रेम से मिले। ये सब लोग

भारतवासियों को बहुत प्यार करते हैं। इनका हमारे देशवासियों से कोई झगड़ा नहीं है। ये लोग तो पूँजीवाद के शत्रु हैं।" वह अपनी झोंक में कहते गए।

ब्रिगेडियर धीरसिंह ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह एकटक उन दोनों के चेहरों को देख रहे थे।

नर्त्तकी बोली, "मेजर साब ठीक कहता है ब्रिगेडियर साब! हम चीनी भारतवासियों को बहुत प्रेम करते हैं। भारतवासी हमारा पड़ौसी है। हम पूँजीवादियों को अपना शत्रु मानता है।" इतना कहकर वह मेजर वीरसिंह से बोली, "चलिए मेजर साब देर होरहा है। हमारा सार्जेन्ट हमारा इन्तजार में होगा। हमारा प्रोग्राम है आज। आज हमें सब भारत का कैदियों को एन्टरटेन करना है।"

मेजर वीरसिंह कुछ देर और ब्रिगेडियर धीरसिंह के पास रुकना चाहते थे परन्तु नर्त्तकी ने उसे ठहरने नहीं दिया। वह उनकी बगल में हाथ डालकर उन्हें अपने साथ लेगई।

ब्रिगेडियर धीरसिंह अवाक् रहगए। उनका सिर चकरा रहा था। वह सोच रहे थे कि मेजर वीरसिंह को यह क्या होगया था। वह काँप उठे। उन्होंने भयभीत होकर अपने मन में कहा, 'हे भगवान्! यह सब क्या होरहा है? क्या सचमुच मेजर वीरसिंह पथ-भ्रष्ट होगए। हमारे अन्य जवानों की न जाने क्या दशा होगी। जब मेजर वीरसिंह जैसे समझदार व्यक्ति पर इतना गहरा प्रभाव पड़ सकता है तो बेचारे साधारण सैनिकों को तो बहुत सुगमता से फुसलाया जा सकता है।

यह वही मेजर वीरसिंह है, जिसे चीनियों के नाम से भी घृणा थी। इसकी रायफल ने न जाने कितने चीनियों को मौत के घाट उतारा था।

वही यह मेजर वीरसिंह आज कह रहा था, 'इसने चीनी भाइयों मेरी भेट कराई।' यह चीनियों को भाई कह रहा है। इसने कहा,

'चीनी भारतवासियों को बहुत प्यार करते हैं।' इसे चीनियों का छल प्यार दिखाई देने लगा।'

ब्रिगेडियर धीरसिंह अपना सिर पकड़कर बैठ गए। वह किसी घोर विपत्ति की आशंका से भयभीत होउठे। उन्हें भारत के कैदी जवानों का बदन विषाक्त नजर आने लगा। उन्होंने घबराकर अपने चारों ओर देखा। उन्हें लगा कि उस विष का प्रभाव उनके चारों ओर फैला था और वह निरन्तर उनके अन्दर प्रविष्ट होने का प्रयास कर रहा था। उन्हें लगा कि जैसे भयंकर नागों के फन उन्हें काटने के लिए फुकार रहे थे।

ब्रिगेडियर धीरसिंह पहले तनिक भयभीत से हुए परन्तु तुरन्त ही उन्होंने अपना दिल मजबूत कर लिया और निश्चय किया कि वह अपने प्राण भले ही देदें परन्तु राष्ट्र के साथ विश्वासघात नहीं होने देंगे।

वह यह सोच ही रहे थे कि तभी उन्हें चीनी सार्जेन्ट सामने से आता दिखाई दिया। उसे देखते ही ब्रिगेडियर धीरसिंह सतर्क होगए। उन्होंने बलात् अपने चेहरे पर छाए हुए भय और चिंता के प्रभाव को दूर किया और मुस्कराकर बोले, "आइए सार्जेन्ट साहब!"

चीनी सार्जेन्ट ने बड़े तपाक् से आगे बढ़कर ब्रिगेडियर धीरसिंह से हाथ मिलाया और बोला, "वेल ब्रिगेडियर साब! आपको खुश देखकर हमें बहुत खुशी मिला। अब आपका तबियत एकदम ठीक है।"

ब्रिगेडियर धीरसिंह अन्दर से कुढ़ते हुए भी ऊपर से मुस्कराकर बोले, "यह सब आपकी कृपा है।"

"कृपा नहीं, ब्रिगेडियर साब! हमारा फर्ज है यह। आप हमारा भाई है।" फिर कुछ ठहरकर बोला, "आपका तबियत और जल्द ठीक हो सकता है। आपको हमारा क्लब में जाना चाहिए। आप जैसा जवान को नाच-रंग का शौकीन होना मांगता है।"

ब्रिगेडियर धीरसिंह मुस्कराकर बोले, "सार्जेन्ट साहब! मैंने

जीवन में नाच-रंग कभी नहीं देखा । मैं क्लब में कभी नहीं गया । मुझे कभी इन चीजों का शौक नहीं रहा ।"

यह सुनकर चीनी सार्जेन्ट खिल-खिलाकर हँस पड़ा । बोला, "ब्रिगेडियर साब आपका भारत में हमारा जैसा आर्ट का कद्र नहीं है । आप जैसा बहादुर आदमी को आर्ट का कद्र करना चाहिए । आप हमारा साथ क्लब में चलेगा तो आपका स्वास्थ ठीक होगा ।"

ब्रिगेडियर धीरसिंह मुस्कराकर बोले, "सार्जेन्ट साहब ! अब इस उम्र में मेरी क्या आदतें बदलेंगी ? मेरा स्वभाव इन सब चीजों से पृथक् रहने का ही है । मुझे आपने जो यह एकांत कैम्प दिया है, इनमें रहकर मैं बहुत आनन्द और शांति का अनुभव कर रहा हूँ । इसके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ ।"

चीनी सार्जेन्ट समझ गया कि ब्रिगेडियर धीरसिंह पर इस प्रकार उनका रंग नहीं चढ़ेगा । वह एकदम बात बदलकर बोला, "ब्रिगेडियर साब ! कल हमारे कमांडेन्ट साहब यहाँ पधार रहे हैं । उन्होंने मुझे विशेष रूप से आपसे भेंट करने के लिए लिखा है ।"

ब्रिगेडियर धीरसिंह चीनी सार्जेन्ट के इस प्रकार पैंतरा बदलने को भाँपकर बोले, "आपके कमांडेन्ट साहब से भेंट करके मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी ।"

चीनी सारजेन्ट चला गया । ब्रिगेडियर धीरसिंह एकांत में अपने कैम्प के अन्दर टहलते रहे । कटघरे में बन्द चिड़ियाघर के अन्दर जैसे शेर घूमता है, ठीक वैसी ही दशा थी उनकी । चीनी सार्जेन्ट उनके समक्ष उस दर्शक के समान था जो अपने मनोरंजन के लिए शेर को देखने के लिए चिड़ियाघर में जाता है ।

दूसरे दिन चीनी कमांडेन्ट ने ब्रिगेडियर धीरसिंह से भेंट की । उसने उन्हें कैम्प में बुलवाया, जहाँ उनके और ब्रिगेडियर धीरसिंह के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं था । वह छूटते ही बोला, "ब्रिगेडियर साब ! आपकी

वीरता के कारनामे हमने सुने हैं। आपके कारनामों की हमारा प्रधान मंत्री ने बहुत सराहना की है। आप जैसा बहादुर दुनियाँ में बहुत कम हैं।"

ब्रिगेडियर धीरसिंह चुपचाप कुर्सी पर बैठे चीनी कमांडेन्ट की बातें सुनते रहे।

"आपको कोई कष्ट तो नहीं हुआ हमारा कैम्प में आकर?" चीनी कमांडेन्ट बोला।

उसके इस वाक्य का उत्तर ब्रिगेडियर धीरसिंह को देना पड़ा। वह बोले, "तनिक भी नहीं हुई कमांडेन्ट साहब! परन्तु यदि होता भी तो मैं उसकी आपसे कोई शिकायत नहीं करता।"

"क्यों नहीं करता? क्या हम तुम्हारा भाई नहीं है? क्या भाई-भाई का आपस में झगड़ा नहीं होता? आप हमारा पड़ौसी है। हमारा आपस में झगड़ा भी हो, तब भी हम दुश्मन का मुकाबला करने के लिए एक हैं। हमारा दुश्मन वह है जो मानवता का दुश्मन है, जो गरीब का दुश्मन है। हमारा उनके साथ कोई समझौता नहीं होसकता।"

चीनी कमांडेन्ट की बातें सुनकर ब्रिगेडियर धीरसिंह का कलेजा जल रहा था परन्तु उन्होंने अपनी जलन पर मुस्कान का आवरण डाल दिया और बोले, "हम लोग संसार में किसी को अपना शत्रु नहीं मानते। चीनी जनता से हमारे शताब्दियों पुराने सांस्कृतिक सम्बन्ध हैं। हमने सर्वदा ही उनकी ओर प्यार का हाथ बढ़ाया है।"

"हम लोग भी ऐसा ही विचार रखता है।" हँसकर चीनी कमांडेन्ट बोला, "हम भारत का हर आदमी को प्यार करता है। हम चाहता है हमारा पड़ौसी भारत का हर आदमी उन्नति करे।" और फिर बात बदलकर बोला, "ब्रिगेडियर साब! आप हमारा एक बात का जवाब दें। हम पूछता है, क्या आपका देश में गरीबी नहीं है? क्या आपका देश में हमारा चीन जैसा खुशहाली है?

यह जानता है क्यों है? यह इसलिए है कि आपका देश में समानता

नहीं है और समानता साम्यवाद ही लासकता है। आपका सरकार पूंजीवादी तरीके पर चल रहा है। आपका नेता पूँजीवादी देशों का मुँह ताकता है। हम इसे गलत मानता है। इससे कभी आपका देश की गरीब जनता का भला नहीं होसकता।"

चीनी कमांडेन्ट के मुख से चीनी जनता की खुशहाली की बात सुनकर ब्रिगेडियर धीरसिंह को हँसी आई परन्तु उन्होंने उसे उभरने से पूर्व ही दबा दिया। अपने नेताओं की बुराई सुनकर दिल में जलन हुई, परन्तु वह उसे विष के समान पीगए। उनका दिल जलता और चेहरा मुस्कराता रहा। वह बोले, "कमांडेन्ट साहब ! मैं एक सैनिक हूँ, राजनीतिज्ञ नहीं। अर्थ-शास्त्र का भी मैंने कभी अध्ययन नहीं किया। मैंने केवल एक ही काम सीखा है जीवन में और वह है अपने अफ़सर की आज्ञा का पालन करना और बहादुरी के साथ लड़ना। मेरा सोचने का क्षेत्र बहुत सीमित रहा है।"

ब्रिगेडियर धीरसिंह का उत्तर सुनकर चीनी कमांडेन्ट ने गम्भीर दृष्टि से उनकी ओर देखा और फिर चेहरे पर मुस्कराहट लाकर बोला, "हम लोग आप सबको आपका देश वापस भेज रहा है। हम चाहता है कि आप अपना देश में आपके साथ हुआ हम लोगों के सद्व्यवहार की भावना लेकर जाएँ। आप अपने देश की जनता में हमारे व्यवहार की प्रशंसा करें। उन्हें बतलाएँ कि हमारा देश में भारतवासियों के लिए कितना सहानुभूति है।

आप यह करेगा ?"

ब्रिगेडियर धीरसिंह ने सँभलकर उत्तर दिया, "नेकी को बदी कभी कोई समझदार आदमी नहीं कहता कमांडेन्ट साहब ! भारतवासी कृतघ्नता की दुनियाँ से बहुत दूर रहते हैं।"

"हम आपका जवाब से बहुत खुश हुआ। हम चाहता है हमारा प्रेम-व्यवहार की कहानी को आप अपने देश की जनता तक पहुँचा दें। हम आपसे और कुछ नहीं चाहता।" कमांडेन्ट बोला।

ब्रिगेडियर धीरसिंह चीनी कमांडेन्ट के अंतिम वाक्य को मन-ही-मन दुहराते हुए अपने कैम्प में आगए। वह एकांत में बैठकर अपने मन में बोले, 'चीनी कमांडेन्ट और कुछ नहीं चाहता। वह केवल यही चाहता है कि मैं यहां के विष को बटोरकर अपने देश की जनता में फैला दूं। इन चीनियों के प्यार की कहानी वह प्राण-घातक विष है जिसे सुनकर हमारे देश का वातावरण विषाक्त हो उठेगा। चीनियों ने यही याचना हमारे हर भारत को वापस लौटने वाले जवान से की होगी।

इसीलिए आज यह इतना बड़ा समारोह किया जा रहा है।' उनके हृदय पर गहरा आघात हुआ। वह उसे सहन न कर सके। वह धीरे से पलंग पर लेट गए और सोचते रहे, 'चीन से भारत लौटकर जाने वाले भारतीय जवानों को मुख से, भारतीय जनता के बीच, चीनियों के सद्व्यवहार को प्रदर्शित करने वाला, निकला एक-एक शब्द चीनी विष की प्राण-घातक बूंद होगी। वह भारतीय जन-जीवन को प्रभावित करेगी। इसका निराकरण होना ही चाहिए।'

संध्या को समारोह में ब्रिगेडियर धीरसिंह को लेजाने के लिए चीनी कमांडेन्ट और सार्जेन्ट स्वयं आए। समारोह का प्रबन्ध बहुत शानदार ढंग से किया गया था। संगीत और नाटक के आयोजन के पश्चात् शानदार दावत दीगई। उसीमें भाषण करते हुए चीनी कमांडेन्ट बोला, "मेरे प्यारे हिन्दी भाइयों! आप लोग अब अपने देश को लौट रहा है। इतना दिन आप हमारा मेहमान रहा। हमने आपको अपना भाई का मानिन्द रखा। हमारा प्यार को आप लोग भुलाएगा नहीं अपना देश में जाकर। आप लोग हमारा प्यार को भारत की जनता में फैलाएगा, जिससे 'हिन्दी चीनी भाई-भाई' का नारा अमली जामा पहन सके।

आप सब लोग हमारा साथ मिलकर 'हिन्दी चीनी भाई-भाई' का नारा लगाएँ।

ब्रिगेडियर धीरसिंह ने देखा कि कुछ भारतीयों की जवानों ने चीनी

कमांडेन्ट का साथ दिया। इन साथ देने वालों में उन्होंने देखा कि मेजर वीरसिंह सबसे आगे थे।

समारोह समाप्त होने पर ब्रिगेडियर धीरसिंह फिर अपने कैम्प में आगए। उनका मन बहुत उद्विग्न था। आज के इस प्रदर्शन ने उन्हें तिलमिला दिया था। उनका सिर चकरा रहा था। वह आँखें बन्द करके पलंग पर लेट गए।

वह घंटों पड़े सोचते रहे कि उन्हें अपने वापस लौटने वाले जवानों के अन्दर से इस विष को किस प्रकार दूर करना होगा। वह इस विष को भारत की सीमा में प्रवेश नहीं करने दे सकते।

राजरानी अपनी परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई। उसके पास होने की मिठाई लेकर शीलकुमारी स्वयं सुभद्रादेवी के पास गईं। राजरानी भी उनके साथ थी।

शीलकुमारी को आते देख सुभद्रादेवी मकान से बाहर चली आई और गदगद होकर बोलीं, "बेटी राज के परीक्षा में उत्तीर्ण होने की मिठाई लेकर आई हो शीलकुमारी! बहुत बड़ी आयु है तुम दोनों की। मैं अभी-अभी तुम्हीं लोगों को याद कर रही थी।"

सुभद्रादेवी शीलकुमारी और राजरानी को अन्दर लिवाकर लेगईं और ड्राईंग-रूम में बिठलाया। शीलकुमारी और सुभद्रादेवी अपनी बातों में लग गईं और राजरानी बराबर के कमरे में रेडियो खोल कर पलँग पर लेट गई।

रेडियो पर प्रदीप का संगीत गाया जा रहा था। उसके बोल थे:

ऐ मेरे वतन के लोगों
ज़रा आँख में भरलो पानी,
जो शहीद हुए हैं उनकी
ज़रा याद करो कुर्बानी।

राजरानी संगीत का मधुर स्वर सुनते-सुनते उसमें खो गई। संगीत की पंक्तियाँ राजरानी के मुख से भी मुखरित होउठीं। वह उसे स्वयं भी गुनागुना उठी और गुनगुनाते-मुनगुनाते सचमुच उसकी आँखों में पानी भर आया।

सुभद्रादेवी बोली, "शीलकुमारी! राजरानी ने परीक्षा में प्रथम

श्रेणी से पास होकर चित्त को बहुत प्रसन्न किया। मैं तो सोच रही थी कि इस वर्ष अन्य कामों में फँसी रहने के कारण कहीं राज की डिविज़न ख़राब न हो जाए।"

शीलकुमारी मुस्कराकर बोली, "राज बड़ी बुद्धिमान लड़की है। इसकी बुद्धि बहुत प्रखर है और स्मरण-शक्ति इतनी अच्छी है कि जो कुछ एक बार पढ़ लेती है वह इसे कंठस्थ होजाता है।"

सुभद्रादेवी बोलीं, "यह मैंने देखा है। जिस पाठ को अन्य लड़कियाँ रटते-रटते भी याद नहीं कर पातीं उसका शब्द-शब्द राज से सुनलो। किसी पाठ को एक बार पढ़ना भर इसके लिए पर्याप्त होता है।"

ये दोनों राजरानी के विषय में इस प्रकार बातें कर रही थीं और राजरानी रेडियो-संगीत का आनन्द लेरही थी। पलँग पर लेटे-लेटे उसकी दृष्टि सुभद्रादेवी के कमरे में लगे मेजर वीरसिंह के चित्र पर चली गई। उसे देखकर राजरानी एक दम मुग्ध हो उठी। मेजर वीरसिंह का पौरुष और बाँकापन उसकी पुतलियों में उतर आया। वह सोचने लगी कि पता नही वह कौनसा उसके सौभाग्य का दिन होगा जब मेजर वीरसिंह चीनियों की कैद से मुक्त होकर भारत लौटेंगे और उसकी आशाओं का कुसुम खिलेगा।

राजरानी मेजर वीरसिंह की स्मृति में खोगई थी। रेडियो का संगीत का कार्यक्रम समाप्त हो गया। इस समय छै बजकर पाँच मिनट हुए थे और रेडियो पर समाचार प्रसारित किये जाने वाले थे।

राजरानी का ध्यान समाचारों की ओर लगगया। वह नित्य-नियम रेडियो-समाचार सुना करती थी।

आज का प्रथम समाचार यही था कि चीन सरकार ने भारत के सब जवानों को मुक्त करने की घोषणा कर दी है। एक बार तो उसे अपने कानों पर विश्वास न हुआ, परन्तु समाचार इतना स्पष्ट था कि

उसमें भ्रम की कोई बात नहीं थी। वह पलंग पर उछल कर बैठी हो गई और प्रसन्नता में दौड़कर सीधी शीलकुमारी और सुभद्रादेवी के पास जाकर बोली. "भाभी जी! कुछ सुना आपने। चीन ने हमारी सेना के सब जवानों को मुक्त करके घोषणा करदी। अभी-अभी रेडियो ने समाचार दिया है।"

यह सुनकर शीलकुमारी और सुभद्रादेवी के मुख से निकला "सच! तुमने ठीक से सुन भी लिया राज!"

"मैंने बिलकुल ठीक सुना है भाभी जी! यह समाचार रात्रि को भी आएगा। आप स्वयं सुन लेना।" राजरानी ने कहा।

इस समाचार को प्राप्त कर तीनों के विचार उसी पर केन्द्रित होगए।

शीलकुमारी बोलीं, "जिन चीनी अधिकारियों ने हमारे रेड-क्रास के तो क्या अन्तर्राष्ट्रीय रेड-क्रास के प्रेक्षकों तक को हमारे बन्दी सैनिकों से मिलने की आज्ञा नहीं दी वही अब उन्हें मुक्त कर रहा है।" वह हँस कर बोली। "चीनी नेताओं की सब चालें खाक में मिल गईं। अकड़ दिखाते हैं और झुक जाते हैं, थूकते हैं और फिर उसे चाट लेते हैं। विचित्र खोपड़ी के व्यक्ति पैदा हुए हैं। विश्व के शान्तिपूर्ण वातावरण को दूषित करके रख दिया।"

फिर कुछ सोचकर बोलीं, "चलो अच्छा ही हुआ। इनकी इस मूर्खता ने हमें सचेत कर दिया। इन्होंने हमें सबक दे-दिया कि यदि कुत्ता पागल होउठे तो उसका सर कुचलने के लिए हमें तैयार रहना चाहिए। हमारा देश अब जाग उठा है। हमारे नेता सतर्क होगए है। हमारा राष्ट्र शक्तिशाली होरहा है। हमारी सेना मजबूत हो रही है। चीन के इस आक्रमण ने हमारे देश में क्रान्ति की लहर दौड़ा दी है। जिस प्रगति को करने में हमारा राष्ट्र दस वर्ष लेता वह कार्य एक वर्ष में होगया। जो कार्य पच्चीस वर्ष में भी पूरा न होता वह पाँच वर्ष में

पूर्ण होगा।

अब देखेंगे कि हमारी सीमा पर आक्रमण करने का साहस कौन करता है। चीन के नेताओं ने जो मार्ग अपनाया है उसपर चलकर वे अपनी प्रगति की कब्र खोद रहे हैं। इनका अभिमान और इनकी मूर्खता इनके सम्पूर्ण राष्ट्र को ले डूबेगा। कम्युनिस्ट-विश्व, एशिया तथा अफ्रीका का अगुआ बनने की लग्न इन्हें अपने देश का भी अगुआ नहीं रहने देगी। इनकी निरंकुशता और युद्ध-नीति से रगड़ खाकर चीन में नवीन क्रांति का बीजारोपण होगा, जो मानव-स्वतंत्रता की पताका फहराएगी।" कहती-कहती शीलकुमारी मौन हो गई। उनकी आँखों के समक्ष ब्रिगेडियर धीरसिंह की रौबीली मूँछें और उन्नत लिलाट आकर खड़े होगए। उनके चेहरे पर मुस्कान नाच उठी। उनका सारा अंग पुलकायमान होउठा।

वह मुग्धनेत्रों से सुभद्रादेवी की ओर देखकर बोलीं, "मेजर वीरसिंह के स्वागत की तैयारी कीजिए बहिन सुभद्रादेवी!" और फिर मुस्कराकर बोलीं, "तैयारी मुझे भी करनी होगी। चीनियों की कैद में रहकर पता नहीं कौनसा विष उनके बदन में प्रविष्ट हुआ हो।"

सुभद्रादेवी बोलीं, "ब्रिगेडियर धीरसिंह फौलाद का बने व्यक्ति हैं शीलकुमारी! उनके बदन में चीनियों का विष प्रवेश नहीं पा सकता। तुम निश्चिंत रहो।"

आज सबने सुभद्रादेवी के मकान पर साथ-साथ भोजन किया और रात को बहुत शांतिपूर्वक रेडियो-समाचार सुना। आज का दिन सचमुच उनके जीवन में बहुत प्रसन्नता का आया था। उनके जीवन की सम्पूर्ण निधि, जो लुट चुकी थी, उन्हें वापस लौटती दिखाई देरही थी। उनके जीवन की निराशा आज आशा में बदल रही थी। उनके हृदयों में रह-रहकर हिलोरें उठरही थीं।

रात्रि को शीलकुमारी और राजरानी अपनी कोठी पर काफी देर से लौटीं। राजरानी अपने कमरे में चली गई और शीलकुमारी अपना

छोटा टाईप राइटर लेकर बैठ गई।

उन्होंने एक पत्र रक्षा-मन्त्रालय को लिखा, जिसमें रक्षा-सचिव से चीन द्वारा लौटाए गए भारतीय जवानों के घरों के पते भेजने के लिए प्रार्थना की गई थी। उन्होंने रक्षा-सचिव को 'महिला-रक्षा-केन्द्र' के कार्य-क्रम की इस नवीन प्रवृत्ति पर प्रकाश डालते हुए विस्तार के साथ पत्र टाइप किया और उसे एक्सप्रेस डिलीवरी से भेजा।

यह पत्र टाइप करने-करते उन्हें रात्रि का एक बज गया। इस कार्य को समाप्त करके उन्हें तनिक शांति मिली। वह इस समस्या को अपने विचार से गम्भीर समझ रही थीं।

शीलकुमारी यह कार्य समाप्त करके अपने कमरे से बाहर निकली। तो समझ रही थीं कि राजरानी सोगई होगी। परन्तु उन्हें राजरानी के कमरे में प्रकाश दिखाई दिया। वह धीरे-धीरे उसी ओर को घूम गई। उन्होंने देखा कि राजरानी अपने पलँग पर लेटी कुछ लिख रही थी।

शीलकुमारी ने राजरानी के द्वार पर धीरे से दस्तक दी। राज़-रानी ने खड़ी होकर द्वार खोले तो शीलकुमारी ने पूछा, "तुम सोई क्यों नहीं अभी तक ? क्या स्वास्थ्य खराब करोगी अपना ?

राजरानी मुस्करा कर बोली, "भाभी जी ! स्वास्थ्य खराब होने का समय तो निकल गया। अब तो मैं रात-दिन लगातार भी हफ्तों तक यदि जागती रहूँगी तो तब भी स्वास्थ्य में कुछ और सुधार ही होगा।"

"परन्तु तुम कर क्या रही थीं इतनी देर तक !" शीलकुमारी ने पूछा।

राजरानी सकुचा कर बोली, "भय्या आरहे हैं भाभी ! उनके आगमन पर क्या हमारा कला-केन्द्र मौन ही रहेगा ? उसके स्वागत क्या कोई समारोह नहीं होना चाहिए ?"

शीलकुमारी मुस्कराकर बोलीं, "होना तो अवश्य चाहिए। क्या करने का विचार कर रही हो तुम ?"

राजरानी बोली, "हम लोग एक नाटक अभिनीत करेंगे इस शुभ अवसर पर।"

"तुम्हारे नाटक का नाम क्या होगा राजरानी ?"

"हिमालय की वेदी पर।" गम्भीर वाणी में राजरानी ने उत्तर दिया।

शीलकुमारी को नाटक का शीर्षक बहुत पसंद आया। वह मुस्करा कर बोलीं, "शीर्षक तो तुमने बहुत सुन्दर चुना है तुमने अपने नाटक का। देखेंगे भूमिका कैसी अभिनीत करती हो।"

"भूमिका भी सुन्दर ही होगी भाभी जी ! परन्तु इस नाटक में भूमिका अभिनीत करने को आपको और बहिन जी को भी मंच पर आना होगा ?"

"मुझे और सुभद्रादेवी को !" आश्चर्यचकित होकर शीलकुमारी बोलीं।

"और नहीं तो क्या ! जब भय्या नाटक के नायक होंगे तो नायिका के लिए आपसे उपयुक्त अन्य कौन मिलेगा। और जब मेजर वीरसिंह उपनायक होंगे तो······।" इतना कहकर राजरानी तनिक लजा-सी गई।

शीलकुमारी मुस्करा कर लोली, "लजा क्यों गई राजरानी ! मेजर वीरसिंह के साथ उस नायिका की भूमिका तुम बहुत सुन्दर अभिनीति करेगी। तुमसे अच्छी उपनायिका तो वीरसिंह को दिन में प्रकाश लेकर खोजाने पर भी प्राप्त नहीं होगी।

आओ, अब मेरे साथ। बहुत रात बीत गई। अब कल देखना अपने नाटक को। रात्रि में कल्पना की उड़ानें भरना और दिन में उसे लेखनी-बद्ध कर लेना।"

शीलकुमारी राजरानी को अपने साथ अपने कमरे में लेगई। रात्रि में दोनों को कब नींद आई इसका कुछ पता नहीं, परन्तु बत्ती तभी बन्द होगई और वाणी मौन।

—१६—

भारतीय युद्ध-बन्दियों के दल ने जिस दिन चीनी कैम्प से प्रस्थान किया उस दिन प्रस्थान से पूर्व मेजर वीरसिंह की चीनी सार्जेन्ट से भेंट हुई। वह नर्त्तकी भी उस समय वहीं थी जिसने इतने दिन तक मेजर वीरसिंह पर डोरे डालकर उन्हें भ्रष्ट करने का प्रयास किया था।

चीनी सार्जेन्ट बोला, "मेजर साब अब आप अपने देश को लौट रहा है। आपको हमारा सद्भावना-संदेश अपने देश की जनता तक पहुँचाना है। हमारा सद्व्यवहार की कहानी आप अपनी जनता को, हमें विश्वास, जरूर सुनाएंगे।"

मेजर वीरसिंह बोले, "आप विश्वास रखें सार्जेन्ट साहब! मैं आपके सद्व्यवहार को कभी नहीं भुला सकता और विशेष रूप से आपने जो मुझे ब्रिगेडियर धीरसिंह को उठाकर लाने की सहमति प्रदान की और फिर उनका विशेष उपचार कर उन्हें स्वस्थ किया, इस बात की मेरे दिल पर गहरी छाप पड़ी है। आपने हमारे ब्रिगेडियर को प्राण-दान देकर हम पर बहुत बड़ा उपकार किया है। हम आपके सर्वदा आभारी रहेंगे।"

यह सुनकर नर्त्तकी आँखें तरेरकर बोली, "सार्जेन्ट साहब के आप आभारी रहेंगे और हमारा क्या बनेगा? हमारा दिल तोड़कर जो आप जा रहा है, उसका क्या होगा?"

मेजर वीरसिंह बोले, "आपकी कला और प्रेम-पूर्ण व्यवहार की भी मुझ पर गहरी छाप पड़ी है। आपकी मनोहर मूर्ति भी मेरे हृदय से सुगमता से निकल नहीं पाएगी। मेरा वश चलता तो मैं आपको अपने साथ भारत लेचलता।"

नर्त्तकी मुस्कराकर बोली, ' आप बहुत मीठा बात बनाना जानता है। हम देखेगा आप भारत पहुँचकर हमारा कितना याद रखता है। हमारा प्यार को भुलाना नहीं मेजर साब ! आप वहाँ जाकर हमें भारत बुलाएगा तो हम जरूर आएगा।"

नर्त्तकी का यह वाक्य सुनकर मेजर वीरसिंह के दिल में गुदगुदी-उठने लगी। उन्हें सचमुच उस नर्त्तकी के इतने दिन के सम्पर्क, सौन्दर्य और उसकी कला ने प्रभावित किया था। उसके मांसल बदन में उसे आकर्षण प्रतीत हुआ था। उसके गौरवर्ण की सुन्दर आभा उनके हृदय में बस गई थी।

वह बोले, "नर्त्तकी ! तुमने मेरे नीरस जीवन को सरसता प्रदान की है। मेरे यहाँ के जीवन की तुम वह मधुर स्मृति हो जिसका मेरे जीवन से स्थायी सम्बन्ध बन गया है। तुम्हारे अधरामृत का पानकर मैंने सचमुच अमृत का आनन्द लिया है। तुम्हें भुलाना मेरे लिए असम्भव होगा।"

नर्त्तकी मुस्कराकर बोली, "आपका बात का सचाई और झूठ को भविष्य बताएगा मेजर साहब ! हमारा पास जो कुछ था हमने आपको अर्पण कर दिया। अब देखता है आप हमारा प्यार का कैसा आदर करता है

हम चीनी लोग भारत का आदमी को बहुत प्यार करता है। हमारा सरकार भारत की जनता की सुख और समृद्धि चाहता है। आप मारी इस भावना की अपने देश में जितना भी प्रसार करेगा हमारा प्रेम आपसे उतना ही बढ़ेगा। हम ने अपना जीवन में आपको छोड़कर अन्य किसी को कभी प्यार नहीं किया।"

भारतीय सेनिकों के प्रस्थान का समय होगया था। चीनी सेनिकों ने उनके प्रस्थान पर 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' का नारा बुलन्द आवाज में लगाया। भारतीय जबानों का दल चीनी सेना के बीच भारत की दशा में आगे बढ़ने लगा।

हिमालय पर्वत पर बर्फ की चट्टानों पर भारतीय जवान अपने देश की दिशा में आगे बढ़ रहे थे। उनके हृदयों में असीम उत्साह था। वे अपनी जन्म-भूमि को लौट रहे थे। उनकी आँखों की पुतलियों में अपने सगे-सम्बन्धियों की प्रतिमा एँरह-रहकर नाच उठती थीं। अपने माता-पिता, भाई-बहन, पत्नी और इष्ट-मित्रों की स्मृति में वे खो से गए थे।

ब्रिगेडियर धीरसिंह और मेजर वीरसिंह प्रथम पंक्ति में थे। उनके पीछे-पीछे भारतीय जवान चले आरहे थे। उनके कदम उत्साह से उठ रहे थे। उन्होंने जब चीनी सीमा पारकर भारतीय सीमा में प्रवेश किया तो ब्रिगेडियर धीरसिंह खड़े होगए। उन्होंने नीचे झुककर भारत-भूमि की मिट्टी को उठाकर अपने जवानों की ओर मुंह करके कहा, "भारत के सपूतो! अब आप लोग अपने देश की सीमा में आगए। यह हमारी जननी जन्म-भूमि की मिट्टी है, जिस पर आप खड़े हैं। इसे उठाकर अपने-अपने माथे से लगाकर एक स्वर में कहो, 'जननी जन्म-भूमि भारत माता की जै।'

ब्रिगेडियर धीरसिंह के स्वर में सब भारतीय जवानों का स्वर मिल गया। सबने जमीन से मिट्टी उठाकर अपने मस्तक पर लगाई। मेजर वीरसिंह ने भी वैसा ही किया, परन्तु ब्रिगेडियर धीरसिंह देख रहे थे कि आज उसके अन्दर वह उत्साह नहीं था, जो उस दिन था जिस दिन उसे बन्दी बनाकर चीनियों की कैद में जाना पड़ा था।

भारतीय जवान और आगे बढ़े और अन्त में उस स्थान पर पहुँच गए जहाँ चीनी सैनिकों ने उन्हें भारतीय सैनिकों के सुपुर्द किया। चीनी सैनिक दस्ते वहाँ से वापस लौट गए। भारतीय जवान अपने सैनिकों की सुरक्षा में आगए।

ब्रिगेडियर धीरसिंह ने वहां पहुँचकर तनिक शांति की श्वांस ली। आज उन्हें लग रहा था कि जाने कितना बड़ा बोझ उनके सिर से उतर गया। उन्हें अपना बदन हलका-हलका प्रतीत होरहा था। उन्हें लग

रहा था कि जैसे वह आज किसी बहुत गहरी खंदक से बाहर निकलकर आए थे। वह जितने दिन भी चीन की सीमा में रहे, कभी एक बार भी अपनी जबान न खोल सके। उनके दिल में हजारों बार प्रबल वेग की आँधी उठी, परन्तु घुमड़-घुमड़कर अन्दर ही शान्त होगई। उनके दिल में अनेकों बार असह्य पीड़ा हुई परन्तु उन्होंने उसे हृदय में ही दबा लिया। इन दिनों में न जाने कितनी बार उनके मस्तिष्क का सन्तुलन बिगड़ा परन्तु उन्होंने उसे प्रकट नहीं होने दिया।

आज इतने दिन पश्चात् उनकी वाणी मुक्त प्रवाह के साथ बह उठने के लिए व्याकुल होरही थी। वह अपने विचारों और भावों को अपने जवानों के हृदय और मस्तिष्क में उतार देने के लिए उतावले हो उठे थे।

यहाँ से लगभग एक मील आगे बढ़कर जवानों ने पड़ाव डाला। भारतीय सेना के रक्षकों ने सब जवानों के भोजन का प्रबन्ध किया। वहाँ इधर-उधर के भारत के गाँवों के निवासी भी अपने जवानों के दर्शन करने के लिए आए।

भोजन के पश्चात् ब्रिगेडियर धीरसिंह घन-गर्जन के समान गम्भीर वाणी में बोले, "प्यारे भारतीय जवानो!

आज इतने दिन पश्चात् मुझे आप सबके बीच खड़ा होकर मुक्त स्वर में स्वतंत्रता के साथ अपनी बात कहने का अवसर मिला है।

यह हिमालय की वही पवित्र पावन वेदी है जिस पर अपने जीवन-पुष्प चढ़ने के लिए हम लोग आए थे। इस पर खड़े होकर हमने अंतिम श्वांस तक भारत-माता की रक्षा की प्रतिज्ञा की थी। आज हम फिर अपनी उसी प्रतिज्ञा को दोहराते हैं। सब एक स्वर में कहो, 'हम अपने जीवन के अंतिम श्वांस तक भारत माता की रक्षा करेंगे।"

भारतीय जवानों ने एक स्वर से प्रतिज्ञा दोहराई।

ब्रिगेडियर धीरसिंह बोले, "हम सब लोग आज इतने दिन पश्चात् चीनी विष की सरिता को पार करके आरहे हैं। इस बीच

हमारे देश पर आक्रमण करके हमारे सम्पूर्ण राष्ट्र को गुलाम बनाने का स्वप्न देखने वाले चीनियों ने हमसे झूठा प्रेम प्रदर्शित करके हमें धोखे में डालने का प्रयास किया। उन्होंने हमें जो आराम दिया, वह आराम ही नहीं था, मीठा विष था जिसे उन्होंने हमारे अन्दर प्रविष्ट करने का प्रयास किया था। उन्होंने हमें ठगने के लिए विष, कन्याएँ छोड़ीं जिन्होंने अपने माया-जाल में फँसाकर हमें अपने काबू में करना चाहा। अपनी नर्त्तकियों को हमारे जवानों का जीवन भ्रष्ट करने के लिए छोड़ा, परन्तु उन्हें ज्ञात नहीं है कि भारतीय जवानों के बदन फौलाद के बने हुए हैं। उनके अन्दर चीनियों का विष प्रवेश नहीं कर सकता।"

इतना कहकर उनकी दृष्टि मेजर वीरसिंह की ओर गई और वह मुस्कराकर बोले, "चीन के मूर्ख सार्जेन्ट ने भारत-राष्ट्र के तपे-मंजे देश-भक्त मेजर वीरसिंह जैसे तपस्वी सैनिक पर मदिरा और एक नर्त्तकी का प्रभाव डालने का असफल प्रयास किया। उन्हें मालूम नहीं है कि मेजर वीरसिंह भगवान् शिव का उपासक है, उन्ही शिव का जिन्होंने कालकूट को अपने कंठ में रख लिया था। मेजर वीरसिंह जैसे तपस्वी पर चीन की हजार नर्त्तकियाँ न्यौछावर होकर भी उसके तप को खंडित नहीं कर सकतीं।

धोखेबाज चीनियों ने हमारे जवानों को चीनी में पागकर अपने प्रति सहनुभूति का विष खिलाने का प्रयास किया। हमारे जवान उस विष को हज्म कर गए। उस विष का अब हमारे ऊपर कोई प्रभाव नहीं है। हम चीनियों को अपना भाई नहीं कह सकते। उन्होंने हमारे देश पर निर्लज्जतापूर्ण आक्रमण किया है। उन्होंने हमारे साथ विश्वासघात किया है। उन्होंने हमारे वीर सैनिक भाइयों का संहार किया है। उन्होंने हमारी माताओं की गोद खाली की है। उन्होंने हमारी देवियों का सुहाग लूटा है।

हमारे हृदय में उनके प्रति कोई सद्भावना नहीं है। वे हमारे शत्रु

हैं और उस समय तक शत्रु ही रहेंगे जब तक वे हमारी एक-एक इंच भूमि को खाली नहीं कर देते हैं।

आप सब एक स्वर में कहें, 'हमारे देश पर आक्रमण करने वाले चीनी हमारे शत्रु हैं, मित्र नहीं। वे हमारे भाई कहलाने के क़ाबिल नहीं हैं। हमें उनसे घृणा है।"

ब्रिगेडियर धीरसिंह के उत्साहपूर्ण शब्दों ने भारतीय जवानों की नसों में बहने वाला रक्त खौला दिया। उनकी आँखों के डोरे लाल हो गए। उनकी आँखों के समक्ष चीनी सद्भावना का जो आवरण था वह फट गया। उनके दिमाग़ साफ़ होगए। उन्हें चीनी सद्भावना में मिला विष स्पष्ट दिखाई देने लगा। उनका भ्रम दूर होगया। उन्होंने मुक्त-कंठ से ब्रिगेडियर धीरसिंह के शब्दों को दोहराया।

मेजर वीरसिंह लज्जा और क्षोभ से जमीन में गढ़गए। उनका सिर चकरा उठा। उनकी आँखों के समक्ष अन्धकार छागया। तभी ब्रिगेडियर धीरसिंह ने आगे बढ़कर बड़े स्नेह से उसकी कौली भरकर कहा, "मेजर वीरसिंह! तुम मृत्यु के मुख से बाहर निकलकर आरहे हो। तुम्हारी स्थिति को जानकर भी वहाँ मैं तुम्हें कोई चेतावनी देने का साहस नहीं कर सकता था।"

मेजर वीरसिंह का हृदय आत्मग्लानि से भर उठा। उनकी आँखों के समक्ष चीन में व्यतीत जीवन की एक-एक घटना क्रमबद्धता के साथ आरही थी। उन्हें अब चीनियों के हर सद्भावनापूर्ण व्यवहार में छल और धोखा स्पष्ट दिखाई देरहा था। चीनी सार्जेन्ट की वह हँसी, जिसे सुनकर वह पहले भी कई बार चकित-से रह गए थे और जिसमें उन्हें अपने उपहास की गंध आई थी अब स्पष्ट रूप से उपहासपूर्ण लग रहा था। चीनी नर्त्तकी के आत्म-समर्पण में उन्होंने वैश्या-प्रवृत्ति के स्पष्ट दर्शन किए। उनका वह चेहरा जो मदिरा के प्रभाव में आकर्षण प्रतीत होने लगता था इस समय महाभयंकर दिखाई दिया। उनकी आँखों के

समक्ष आते ही वह कांप उठे और ब्रिगेडियर धीरसिंह के पैरों पर गिर कर फूट-फूट कर रो पड़े।

ब्रिगेडियर धीरसिंह ने उन्हें छाती से लगाते हुए कहा, "ये चीनी लोग बड़े धूर्त हैं। युद्ध-बन्दी के पश्चात् हम लोगों को इतने दिन तक मुक्त न करने का आखिर क्या कारण था ? केवल यही कि यह हमारे जवानों को बहका-फुसलाकर अपने पक्ष का बना सकें। ये हमारे जवानों द्वारा अपनी सद्भावना का संदेश हमारी जनता तक पहुँचाने का प्रयास था इनका। ये लोग हमारे बहुत भयंकर शत्रु हैं। शत्रु होकर मित्रता का प्रदर्शन देखो इन लोगों ने कैसा किया। नीच कहीं के, हमें मूर्ख समझते हैं। इन्हें ज्ञान नहीं कि अब हम लोग उन्हें समझने में कभी भूल नहीं करेंगे और अपनी संतानों से भी कह जाएँगे कि धोखेबाज चीनियों का कभी विश्वास न करना।"

मेजर वीरसिंह नतमस्तक होकर बोले, "सर ! आपने मेरा मस्तिष्क साफ़ कर दिया। मैं सचमुच इन चीनियों के धोखे में फँस गया था। मैं उनके कुछ व्यवहारों से प्रभावित होउठा था। आपकी प्राण-रक्षा का मुझ पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ा था।"

ब्रिगेडियर धीरसिंह हँसकर बोले, "मेरे इलाज में संलग्नता बरत कर मेरे ठीक होने पर उन्हें जो प्रसन्नता हुई, तुमने देखा नहीं, वह बहुत शीघ्र ही निराशा में बदल गई थी। तभी तो उन्होंने मुझे एकान्त कैम्प में अकेला रख छोड़ा। मुझे किसी से भी मिलने की आज्ञा नहीं थी। केवल तुम मेरे पास तक आसकते थे क्योंकि तुम्हें वे पूर्णरूप से अपने प्रभाव में समझने लगे थे। इसीलिए तुम्हारे मिलने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी परन्तु तुम भी जब आते थे तो वह नर्तकी का लटकन तुम्हारे साथ लटका रहता था। इसीलिए मैं तुमसे कुछ नहीं कह सकता था।"

भारतीय वातावरण के मुक्त प्रकाश में आकर मेजर वीरसिंह के नेत्र खुले तो उन्हें अपने दिल और मस्तिष्क में छाए अन्धकार से बाहर झाँकने का अवसर मिला। उन्हें अपनी बुद्धि पर रह-रहकर पश्चाताप

होरहा था। उन्हें लग रहा था कि मानो किसी ने इस पर जादू करके उनकी बुद्धि और भावना को नष्ट कर दिया था। उसके बदन में सचमुच चीनी विष प्रवेश कर गया था।

मेजर वीरसिंह ने श्रद्धापूर्ण दृष्टि से ब्रिगेडियर धीरसिंह की ओर देखकर कहा, "सर ! मेरे बदन में सचमुच चीनी विष प्रवेश कर गया था। मुझे यदि आप जैसा कुशल डॉक्टर न मिलता तो मेरा बदन निश्चय ही गल-सड़ जाता।"

ब्रिगेडियर धीरसिंह मुस्कराकर बोले, "तुम्हारे उपचार की दिशा में अभी यह हमारा प्रथम चरण है वीरसिंह ! अभी तुम्हें और भी औषधि देने की यदि आवश्यकता हुई तो मैं दूँगा। अपने प्राण-रक्षक वीरसिंह इस प्रकार गलने-सड़ने के लिए नहीं छोड़ सकता।"

दूसरे दिन प्रातःकाल भारतीय जवानों का दल भारतीय सीमा में आगे बढ़ गया।

जयपुर रेलवे-स्टेशन पर आज अपूर्व भीड़ थी। प्रातःकाल से ही दर्शकों के ठट्ठ-के-ठट्ठ स्टेशन पर आकर जमा होगए थे। ब्रिगेडियर वीरसिंह और मेजर वीरसिंह के शौर्य की गाथा सभी लोगों की ज़बान पर थी। बूनगा और नाबांग चौकियों की रक्षा में इन वीरों ने जो पराक्रम दिखाया था उसे भारतीय जनता अभी भूली नहीं थी।

जनता के उन्माद को देखकर सुभद्रादेवी, शीलकुमारी और राजरानी के हृदय गद्-गद् होरहे थे। वे प्लेटफार्म के बीचोंबीच अपने हाथों में पुष्प मालाएँ लिए रेलगाड़ी के आने की प्रतीक्षा में थीं। उनके इर्द-गिर्द 'महिला-रक्षा-केन्द्र' की कई सौ कार्यकर्त्ता एकत्रित थीं। जिनके सभी के हाथों में पुष्पमालाएं थीं। सभी की दृष्टि उस ओर थी जिधर से ट्रेन आने वाली थी।

आज प्लेटफ़ार्म पर राजस्थान के और भी प्रमुख व्यक्ति एकत्रित थे। उस समय जनता में एक लहर-सी दौड़ गई जब सबने देखा कि राजस्थान के मुख्यमंत्री और सरकारी अमले के प्रमुख व्यक्ति भी इन भारतीय सीमा के वीर रक्षकों के स्वागतार्थ स्टेशन पर पधारे थे।

मुख्यमंत्री ने आगे बढ़कर सुभद्रादेवी और शीलकुमारी से भेंट की। ब्रिगेडियर वीरसिंह और मेजर वीरसिंह की वीरता की उन्होंने मुक्त कंठ से प्रशंसा की और कहा, "राजस्थान को अपने इन वीरों पर सर्वदा गर्व रहेगा। इन्होंने राजस्थान का ही नहीं वरना भारत-माता का मुख उज्ज्वल किया है। सुभद्रादेवी जैसी वीर-जननी तथा शीलकुमारी जैसी वीर पत्नियों का राजस्थान प्राचीन काल से कान रहा है। राजस्थान की वीर रमणियों की शृंखला को आप दोनों ने आगे बढ़ाकर राजस्थान

को गौरवान्वित किया है।"

मुख-मंत्री ये शब्द कह ही रहे थे कि तभी प्लेटफार्म पर घंटी बजी और सब लोग गाड़ी आने की प्रतिक्षा में उधर देखने लगे जिधर से गाड़ी आने वाली थी।

कुछ ही क्षणों में गाड़ी प्लेटफार्म पर आकर खड़ी होगई। ब्रिगेडियर धीरसिंह और वीरसिंह गाड़ी से उतर कर प्लेटफ़ार्म पर आए तो जनता की अपार भीड़ ने उन्हें घेर लिया। प्रबन्ध के लिए आई हुई पुलिस ने बड़ी कठिनाई से भीड़ को रोक पाया।

ब्रिगेडियर धीरसिंह और मेजर वीरसिंह ने जनता की ओर अपने दोनों हाथ जोड़कर गम्भीर स्वर में 'जयहिन्द' उच्चारण किया तो स्टेशन का सम्पूर्ण वायु मण्डल 'जय-हिन्द' के नाद से गूंज उठा।

तब तक सुभद्रादेवी, शीलकुमारी, राजरानी मुख्यमंत्री तथा अन्य प्रमुख व्यक्ति आगे आगए। 'महिला-रक्षा-केन्द्र' की महिलाओं ने पीछे से पुष्पों की वर्षा की और जो आगे थीं उन्होंने गले में मालाएँ पहिनाई।

शीलकुमारी ने आगे बढ़कर अपने पतिदेव के चरण छूए और मेजर वीरसिंह ने अपनी माता सुभद्रादेवी के चरण छूए।

मुख्यमंत्री ने भारतीय सीमा के रक्षकों का स्वागत करते हुए कहा, "ब्रिगेडियर धीरसिंह और मेजर वीरसिंह! तुमने राणाप्रताप की तरह राजस्थान की वीर-परम्परा को निभाकर राजस्थान के उन्नत भाल पर अपने रक्त से तिलक किया है। राजस्थान को अपने वीरों पर सर्वदा ही गर्व रहा है।

मैं राजस्थान की जनता और सरकार की ओर से तुम्हारा स्वागत करता हूँ।" इतना कहकर उन्होंने अपने हाथ से दोनों के गलेमें पुष्प-मालाएँ पहिनाई।

राजरानी तनिक पीछे खड़ी यह दृश्य देख रही थीं। उसके हर्ष का पारावार नहीं था। उसका हृदय आशा और उमंगों से भर उठा था।

ब्रिगेडियर धीरसिंह ने भीड़ में इधर-उधर कुछ खोजकर शील-कुमारी से पूछा, "शील ! राज कहाँ है ?"

"मैं यहां हूं भय्या !" मुस्कराती हुई राजरानी ने दो कदम आगे बढ़कर कहा, "सोच रही थी पहले यह सब झमेला निपट जाने दूँ, तब बाद में भय्या से भेंट करूं।" यह कहकर उसने अपने हाथ की माला अपने भय्या के गले में डाल दी।

मेजर वीरसिंह की दृष्टि तभी राजरानी पर पड़ी तो वह सहम कर रहगए। उन्हें पता नहीं था कि वह राजरानी जिसे उन्होंने एक दिन अपने मन-मन्दिर की देवी बनाकर ग्रहण किया था, ब्रिगेडियर धीरसिंह की छोटी बहिन थी। यह रहस्य उनपर उसी समय खुला।

यह जानकर मेजर वीरसिंह का साहस फिर उधर देखने का नहीं हुआ। उन्होंने अपना मुख दूसरी ओर कर लिया। चीन के बन्दी-ग्रह में रहकर उनके जीवन में जो दुर्बलता आई, वह उनकी दृष्टि के सम्मुख साकार होउठी। अपनी उस दुर्बलता को वह अन्य सबसे छिपा सकते थे, परन्तु ब्रिगेडियर धीरसिंह से नहीं।

उसे लगा कि जैसे उनके दिल पर गहरा आघात हुआ और वह खड़े-ही-खड़े चकराकर भूमि पर गिर जाते यदि ब्रिगेडियर धीरसिंह ने उन्हें तुरन्त आगे बढ़ाकर सँभाल न लिया होता। ब्रिगेडियर धीरसिंह ने बड़ी फुर्ती से यह काम लिया।

मेजर वीरसिंह के इस प्रकार अचानक अचेत हो जाने से स्टेशन पर हलचल-सी मच गई। किसीकी कुछ कारण समझ में न आया। उन्हें उसी समय हॉस्पिटल लेजाया गया।

डॉक्टर ने अच्छी तरह देखभाल कर कहा, "इन्हें अचानक ही कोई गहरा सदमा पहुँचा है। उसी के कारण यह दशा हुई है। इनके शरीर में कोई रोग नहीं है। इन पर कोई औषधि कार्य नहीं करेगी। इनके उपचार के लिए किसी साइकोलॉजिकल मेडीकल एक्सपर्ट को बुलाना चाहिए। यूं साधारण सुरक्षा के लिए मैं इंजेक्श लगा रहा हूँ।"

ब्रिगेडियर धीरसिंह ने एक क्षण तो इस विषय में सोचा औरफिर तुरन्त ही अपने एक साइकोलॉजिस्ट मित्र को दिल्ली टेलीग्राम दिया। प्रथम सुविधा से जैपुर पहुँचे।"

संध्या तक मेजर वीरसिंद को होश नहीं आया। वह उसी प्रकार अचेत पड़े थे। सुभद्रादेवी, शीलकुमारी, राजरानी और ब्रिगेडियर धीरसिंह उनके पास थे। सभी चिन्तित थे।

ब्रिगेडियर धीरसिंह की समझ में वीरसिंह के अचेत होने का कोई कारण नहीं आरहा था। अच्छे खासे दिल्ली से दोनों गाड़ी पर सवार हुए थे और बिलकुल ठीक दशा में जयपुर स्टेशन पर उतरे थे। उस समय तक कोई बात नहीं थी, प्लेटफ़ार्म पर उतर करभी कोई विशेष बात नहीं हुई फिर यह अचानक बेहोशी कैसे आई।

सोचते-सोचते ज्यों ही आठ बजे त्यों ही उनके मित्र डॉ० रशीद ने वार्ड में प्रवेश किया। डा० रशीद साइकोलाजी के माने हुए मेडीकल विशेषज्ञ थे। उन्होंने आगे बढ़कर ब्रिगेडियर धीरसिंह से हाथ मिलाया और बोले "आपका तार मिलते ही मैं कार से तुरन्त चल पड़ा। अब आकर लगा हूँ और कोई सवारी की उस समय सुविधा नहीं थी।"

"आपने बहुत कृपा की डॉ० रशीद!"

इतना कहकर वह उन्हें मेजर वीरसिंह की बेड के पास लेगए। बोले, "इन्हें आप पहिचान गए होंगे। कल ही संध्या को यह मेरे साथ आपकी कोठी पर गए थे।"

"हाँ-हाँ! पहिचान क्यों नहीं गया। मेजर वीरसिंह को एक बार देखकर भला कौन भूलेगा? परन्तु इन्हें यह हो क्या गया?" डॉ० रशीद ने पूछा।

"यह जानने के लिए ही तो आपको कष्ट दिया है। हॉस्पिटल के डॉक्टर कहते हैं कि इन्हें कोई शारीरिक रोग नहीं है। इन्हें अचानक कोई गहरा सदमा हुआ है जिससे इनकी यह दशा होगई।" ब्रिगेडियर धीरसिंह बोले।

डॉ० रशीद ने हास्पिटल के डॉ० से बातचीत की और फिर दोनों ने आकर मेजर वीरसिंह को देखा। कुछ देर देखकर डॉ० रशीद बोले, "ब्रिगेडियर साहब! इन्हें आप कोठी पर लिवा कर ले चलें। ठीक होने में थोड़ा समय लग सकता है। परन्तु चिन्ता की कोई बात नहीं है। बेहोशी का कारण समझना होगा।"

डॉ० रशीद की बात सुनकर सुभद्रादेवी, शीलकुमारी और राजरानी की जान-में-जान आई। मेजर वीरसिंह को ब्रिगेडियर धीरसिंह की कोठी पर एम्बुलेंस गाड़ी में लिटाकर लेजाया गया। वहाँ उन्हें सावधानी के साथ पलंग पर लिटाकर ब्रिगेडियर धीरसिंह डॉ० रशीद के पास आगए।

डॉ० रशीद ने ब्रिगेडियर धीरसिंह से मेजर वीरसिंह के चीनी कैम्प में व्यतीत किए जीवन के विषय में पूछा तो उन्होंने सम्पूर्ण घटना उन्हें सुनादी।

डॉ० रशीद फिर कुछ देर तक उसके विषय में सोचते रहे। तब तक सुभद्रादेवी और शीलकुमारी भी वहीं पर आगई। राजरानी अकेली मेजर वीरसिंह के पलंग के पास कुर्सी पर बैठी रही।

डॉ० रशीद ने पूछा, "मेजर वीरसिंह की मूर्छा वाली यह घटना रेलवे-प्लेटफार्म पर उतरने के कितनी देर पश्चात् घटी ?"

"लगभग दस मिनट पश्चात्।" ब्रिगेडियर धीरसिंह बोले। "मैं उस समय अपनी छोटी बहिन राजरानी से भेंट कर रहा था।"

डॉ० रशीद बोले, "और मेजर वीरसिंह आपकी ओर देख रहे थे।"

ब्रिगेडियर धीरसिंह ने कुछ सोचकर कहा, "हाँ देख तो रहे थे परन्तु देखते-देखते इन्होंने अपनी गर्दन दूसरी ओर को घुमा ली थी। सम्भवतः इन पर उस समय इस बेहोशी का प्रभाव होने लगा था।"

डॉ० रशीद ने पूछा, "क्या मेजर वीरसिंह विवाहित हैं ?"

"जी नहीं।" सुभद्रादेवी ने उत्तर दिया।

डॉ० रशीद ने कुछ ठहरकर पूछा, "क्या इनका किसी लड़की से कभी कोई प्रेम-सम्बन्ध रहा है ?"

डॉ० रशीद के इस प्रश्न पर सब मौन रहे। डॉ० रशीद ने सबके चेहरों पर भेद-पूर्ण दृष्टि से देखा परन्तु कुछ समझ में न आया।

शीलकुमारी सुभद्रादेवी को कमरे से बाहर लेजाकर बोलीं, "बहिन सुभद्रादेवी ! क्या यह सच है कि मेजर वीरसिंह राजरानी को प्रेम करने लगे थे ?"

सुभद्रादेवी के नेत्र भर आए। वह बोलीं, "शीलकुमारी ! इस विषय में कभी कोई स्पष्ट बात मेरे सामने नहीं आई, परंतु राजरनी की वर्तमान गतविधियों को देखकर इतना तो अनुमान लगाया ही जा सकता है।" फिर कुछ ठहरकर बोलीं, "परंतु शीलकुमारी ! यदि हमने इस प्रकार का कोई संकेत दिया तो क्या यह बात ब्रिगेडियर धीरसिंह को भली लगेगी ?"

शीलकुमारी मुस्करा कर बोलीं, "उन्हें मैं देख लूँगी। इस समय वीरसिंह के प्राण संकट में हैं। डॉ० रशीद को यदि उनके प्रश्न का सही उत्तर न मिला तो उनकी गुत्थी नहीं सुलझ सकेगी और वह किसी सही नतीजे पर नही पहुँच सकेंगे। उन्हें उनके प्रश्न का सही उत्तर मिलना ही चाहिए।" इतना कहकर वह अंदर चली गई और ब्रिगेडियर धीरनिह से बोलीं, "आप ज़रा मेजर वीरसिंह के पास जाकर बैठें। डॉ० साहब के प्रश्नों का उत्तर मैं दूंगी।"

ब्रिगेडियर धीरसिंह वहाँ से उठकर अंदर चले गए तो शीलकुमारी बोलीं, "डॉ० साहब ! मेजर वीरसिंह और ब्रिगेडिय साहब की छोटी बहन राजरानी का आपस में प्रेभ-सम्वन्ध बन चुका था। मुझे इसका ज्ञान ब्रिगेडियर साहब और भेजर वीरसिंह के मोर्चे पर चले जाने के पश्चात् हुआ और ब्रिगेडिय साहब को अभी तक इसका कोई ज्ञान नहीं है।"

शीलकुमारी की बात सुनकर डॉ० रशीद मुस्कराकर बोले, "बात

स्पष्ट होगई मिसेज़ धीरसिंह ! अब यह बतलाइए कि ब्रिगेडियर धीरसिंह को इस सम्बन्ध में कोई आपत्ति तो नहीं होगी।"

"होनी तो नहीं चाहिए।" गम्भीरतापूर्वक शीलकुमारी ने कहा।

डा० रशीद बोले, "मेरी राय यह है कि आप पहिले ब्रिगेडिर साहब से इस विषय में परामर्श करलें। इसका कारण यह है कि आपका ज्ञान मोर्चे पर जाने से पूर्व का है।"

यह सुनकर शीलकुमारी भी तनिक सशंकित-सी हो उठीं। वह सीधी ब्रिगेडियर धीरसिंह के पास पहुँचीं और उन्हें अपने साथ लेकर बाहर कोठी के लॉन में चली गईं। वहाँ जाकर उन्होंने स्पष्ट करके सब बातें अपने पति के सम्मुख रखकर कहा, "इससे आगे मैं कुछ नहीं जानती। आप स्वयं विचार करलें।"

ब्रिगेडियर धीरसिंह एक क्षण को तो ठगे से रहगए। उनकी समझ में ही न आया कि क्या उत्तर दें, परंतु तुरंत उन्हें मेजर वीरसिंह का ध्यान आया तो वह सचेत से होकर बोले, "मेजर वीरसिंह की हर दशा में रक्षा करना मेरा धर्म है शीलकुमारी ! मैं जो यहाँ तुम्हें इस समय दिखाई देरहा हूँ यह इन्हीं की बदौलत हूँ। वरना चीनी सार्जेन्ट मुझे वहीं कहीं गोली मारकर किसी खंदक में फेंक गया होता। मैं वीरसिंह के उपकार से जीवन में कभी उऋण नहीं हो सकता।"

ब्रिगेडियर धीरसिंह डॉ० रशीद के पास आकर बोले, "मुझे इस सम्बन्ध के बनने में कोई आपत्ति नहीं है डॉक्टर साहब !"

डॉ० रशीद बोले "तो मरीज़ आपका अभी ठीक होता है।" कहकर वह हँस पड़े।

ब्रिगेडियर धीरसिंह बोले, "परंतु आपने मेजर वीरसिंह की बीमारी का कारण तो बताया ही नहीं।"

डॉ० रशीद बोले, "कारण स्पष्ट है। मेजर वीरसिंह ने अपनी भूल आपके सामने स्वीकार करली। सोचा बात समाप्त हुई। उस बात के

जीवन में आगे बढ़ने का कोई कारण ही नहीं था। न यह बात उनकी माता जी के सम्मुख आने की थी और न अन्य किसी के सम्मुख।

वह राजरानी से प्रेम करते थे। परन्तु उन्हें यह पता नहीं था कि राजरानी आपकी छोटी बहिन है। स्टेशन पर जब राजरानी ने आपसे भेंट की और उन्होंने देखा तो उनका सारा स्वप्न छिन्न-भिन्न होगया वह भयभीत हो उठे कि आप उनके साथ अपनी बहिन का सम्बन्ध होना कभी स्वीकार नहीं करेंगे क्योंकि आपके मस्तिष्क पर उनके चीनी कैम्प के आचरण की छाप है।

यह धक्का मेजर वीरसिंह को इतना जबरदस्त लगा कि वह अपने को न सँभाल सके और अचेत होगए।

इन्हें अब राजरानी के अतिरिक्त अन्य कोई स्वस्थ्य नहीं कर सकता। राजरानी के मधुर सम्पर्क के अतिरिक्त इनपर कोई औषधि कार्य नहीं करेगी।"

—२१—

सभी लोग आज सुबह से थक गए थे। ब्रिगेडियर धीरसिंह रात भर का सफ़र करके जैपुर पहुँचे थे और फिर सारा दिन इस परेशानी में निकल गया। सुभद्रादेवी, शीलकुमारी और राजरानी का पूरा दिन खड़े-खड़े बीत गया था। फिर चिन्ता और दुराशा ने चित्त को और भी परेशान कर दिया था। डॉ० रशीद दिल्ली से कार में जैपुर आते-आते थक चुके थे। वह बोले, "अच्छा ब्रिगेडियर साहब ! अब आप सब लोग भोजन इत्यादि से निवृत्त हों और मुझे तथा राजरानी को मेजर साहब का इलाज करने दें। हमारे कमरे में अब कोई प्रवेश न करे। इससे पूर्व आप मेरे लिए पहले चाय का प्रबन्ध करें। मैं बहुत थका हुआ हूँ।"

थोड़ी देर में डॉ० रशीद के पास चाय आगई तो उन्होंने राजरानी को भी अपने पास चाय पर बुला लिया। चाय पीते-पीते उन्होंने पूछा, "अब कैसी दशा है मेजर वीरसिंह की ?"

राजरानी बोली, "अभी कोई अन्तर नहीं है। जैसे यहाँ आए थे, वैसे ही हैं। अभी तक आँखें नहीं खोलीं उन्होंने।"

डॉ० रशीद बात बदलकर बोले, "राजरानी ! सुना है तुम नृत्य और संगीत में बहुत पटु हो। क्या तुम्हारा नृत्य कभी मेजर वीरसिंह ने भी देखा है और संगीत सुना है ?"

राजरानी तनिक लजा-सी गई यह बात सुनकर। उसके मुख से एक भी शब्द नहीं निकला। वह लज्जा-वश नीचे को देखने लगी।

डॉ० रशीद बोले, "यह लजाने का समय नहीं है राजरानी ! मेजर

वीरसिंह के प्राणों की रक्षा का प्रश्न है। इन्हें इस आपत्ति से तुम्हारे अतिरिक्त अन्य कोई नहीं बचा सकता।"

डॉ० रशीद की बात सुनकर राजरानी ने सकरुण दृष्टि से उनकी ओर देखा तो वह मधुर शब्दों में बोले, "राजरानी! तुम्हारे कंठ का मधुर स्वर मेजर वीरसिंह को जाग्रति प्रदान करेगा। तुम्हारे नूपुरों की झंकार इनकी जड़ता को नष्ट करदेगी।

तुम्हें ज्ञात होगा कि तुम्हारे किस स्वर में इन्हें मुग्ध करने का आकर्षण है। तुम्हारे किस नृत्य पर मेजर वीरसिंह कभी आकर्षित हुए थे।

अब इनका इलाज मैं भी तुम्हें ही सौंपकर ब्रिगेडियर साहब के पास जाता हूँ। यहाँ तुम दोनों के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम्हारा संगीत इन्हें होश में लासकेगा।"

डॉ० रशीद इतना कहकर वहाँ से उठकर चलेगए। राजरानी एकांत में अकेली बैठी रहगई। पहले कुछ देर तो उसकी कुछ समझ में न आया, परन्तु फिर वह धीरे-धीरे अन्दर गई और अपनी वीणा उठा लाई।

राजरानी ने धीरे-धीरे वीणा पर स्वर छेड़ा। वीणा के तार मधुर-स्वर में बज उठे। कमरे के वायु-मंडल में वीणा का स्वर भर गया। वहाँ का सम्पूर्ण वातावरण वीणामय होगया।

वीणा के साथ-साथ राजरानी के कंठ से भी मधुर स्वर निकला और उसने वही संगीत छेड़ा जिसे सुनकर कभी मेजर वीरसिंह का हृदय नृत्य कर उठा था। वही वह संगीत था जिसकी कई बार उसने मुक्त कंठ से प्रशंसा की थी।

राजरानी का स्वर धीरे-धीरे उभर कर वहाँ के वायु-मंडल में गूँज उठा। राजरानी के नेत्र मेजर वीरसिंह के चेहरे पर टिके थे। उसने देखा कि उसके कंठ के स्वर ने मेजर वीरसिंह के शान्त पड़े बदन में

हरकत पैदा करनी प्रारम्भ कर दी। उसका बदन हिला और उसने करवट ली।

वह देखकर राजरानी के हृदय में हर्ष की तरंगें-सी उठने लगीं। उसका स्वर और भी मधुर होउठा। उसने स्वर बाँधकर गाना प्रारम्भ किया। राजरानी का स्वर ज्यों-ज्यों तीव्र होरहा था त्यों-त्यों मेजर वीरसिंह के बदन में कुछ छटपटाहट-सी बढ़ती जाती थी। उसका एकदम शांत पड़ा जड़ बदन अब हरकत करने लगा था।

राजरानी ने मधुर आलाप के साथ गाना प्रारम्भ किया तो मेजर वीरसिंह के बदन में थरथरी-सी आने लगी। राजरानी ने देखा कि वह अपने होंठ फड़फड़ा रहे थे और कुछ बोलने का प्रयास कर रहे थे, परन्तु अभी जो स्वर उनके कंठ से निकला वह स्पष्ट नहीं था। वह बहुत ही धीमा था।

राजरानी ने अब वीणा उठाकर एक ओर रख दी और पैरों में घुँघरू बाँधकर नृत्य करना प्रारम्भ किया। उसके नूपुरों की झंकार का मधुर स्वर कमरे में गूँजा तो मेजर वीरसिंह ने नेत्र खोल दिए। राजरानी का हृदय हर्ष से भरउठा। उसके पैरों की गति बढ़ गई। उसके आनन्द का पारावार न रहा। वह अपनी सफलता पर और भी तीव्र गति से नाच उठी।

मेजर वीरसिंह ने आँखें पटपटाकर राजरानी की ओर देखा तो उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ। उन्होंने फिर आँखें बन्द करलीं और उसी प्रकार कुछ देर अचेतन-से पलँग पर पड़े रहे। परन्तु अब उनकी मूर्छा समाप्त होचुकी थी। उन्होंने फिर नेत्र खोले और राजरानी की ओर देखकर दीन वाणी में बोले, "देवी! मैंने पाप किया है। मैं तुम्हारे योग्य नहीं रहा। मुझे क्षमाकरदो तुम।"

राजरानी मेजर वीरसिंह के निकट जाकर बोली, "आपने कोई पाप नहीं किया। मेरे निकट आप वही हैं, जो मैं एक बार आपको मान चुकी हूँ।

अब कैसी तबियत है आपकी ।" इतना कहकर वह उनके निकट ही पलँग की पट्टी पर बैठ गई और स्नेह-भरी दृष्टि से उनकी ओर देखा ।

"राजरानी ! इस पातकी को छुओ नहीं तुम ! मैं कहता हूं, मैं पापी हूँ । मैं तुम्हारे योग्य नहीं हूँ । मुझे क्षमा करदो ।"

उसी समय ब्रिगेडियर धीरसिंह ने कमरे में प्रवेश किया । वह मेजर वीरसिंह के बराबर पलंग पर बैठकर स्नेहपूर्ण स्वर में उनके बालों को सहलाते हुए बोले, "तुमने कोई पाप नहीं किया वीरसिंह ! कौन कहता है तुम पापी हो । तुम जैसे वीर पर मुझे गर्व है । मुझे नहीं, सम्पूर्ण भारत को गर्व है ।

मैं सहर्ष अपनी छोटी बहिन राजरानी का तुम्हारे साथ सम्बन्ध करके अपने को धन्य मानूंगा । तुम राजरानी के हर प्रकार योग्य हो ।"

ब्रिगेडियर धीरसिंह के शब्द सुनकर मेजर वीरसिंह के नेत्रों में अश्रु उभर आए । ब्रिगेडियर साहब ने अपने रूमाल से उनके नेत्र पोंछ कर उनका सिर अपनी गोद में रख लिया । उन्होंने स्नेह से अपना हाथ उनके मस्तक पर फेरा ।

तब तक सुभद्रादेवी, शीलकुमारी और डॉ० रशीद भी वहां आ गए । सुभद्रादेवी ने अपने पुत्र के सिर को इस प्रकार गोद में रखे ब्रिगेडियर धीरसिंह को देखा तो वह आत्मविभोर हो उठीं । उन्होंने एक ओर कोने में खड़ी राजरानी को अपनी अंक में भरकर छाती से लगा लिया । उनके नेत्रों से प्रेमाश्रु बरस पड़े । उन्हें जीवन में आज से अधिक सुख तथा शान्ति का अनुभव पहले कभी नहीं हुआ था ।

डॉ० रशीद ने आगे बढ़कर मेजर वीरसिंह से पूछा, "मेजर वीर-सिंह ! अब कैसी तबियत है तुम्हारी ।"

मेजर वीरसिंह ने डॉ० रशीद की ओर आश्चर्यचकित दृष्टि से देखकर कहा, "ठीक हूँ डॉक्टर साहब !"

डॉ० रशीद हँसकर बोले, "अरे भाई मेजर साहब ! यदि आपको यह नाटक खेलना था तो आपने कल संध्या को ही हमें सूचित क्यों नहीं कर दिया । हम भी आप लोगों के साथ ही कल रात्रि की गाड़ी से जयपुर चले आते । हमें पीछे से कार में तो न घिसटना पड़ता ।"

डॉ० रशीद की मधुर उपहासपूर्ण बात सुनकर सभी के चेहरे खिल उठे ।

मेजर वीरसिंह का दिल भी हर्ष से भर उठा । वह समझ गए कि डॉक्टर साहब को दिल्ली से उन्हीं के इलाज के लिए आना पड़ा । वरना यहां जैपुर में उनके होने का क्या कारण था । अभी कल ही तो दिल्ली में इनसे मिले थे ।

आज का दिन बहुत परेशानी का गुजरा था, परन्तु इस समय आकर वह परेशानी सब काफूर होगई । मेजर वीरसिंह उठकर बैठे होगए और तनिक लजाकर बोले, "मेरे कारण सचमुच आपको बहुत कष्ट हुआ । आपको अपना सब काम-काज छोड़कर जयपुर दौड़ना पड़ा ।"

डॉ० रशीद हँसकर बोले, "आपकी दृष्टि में मैंने यहाँ आकर कोई काम ही नहीं किया । डॉक्टर तो बेचारा पैदा ही काम करने के लिए होता है । डॉक्टर को कहीं कोई चैन से नहीं बैठने देता । आपको तो मोर्चे पर ही दुश्मन से जूझना पड़ता है, परन्तु डॉक्टर बेचारे की दुश्मन बीमारियाँ तो कहीं भी उसका पीछा नहीं छोड़तीं ।" इतना कहकर डॉक्टर रशीद बोले, "अरे ! भाई आप सब लोग देख क्या रहे हैं ? मेजर साहब के लिए कुछ खाने का प्रबन्ध करो । बेचारे सुबह के भूखे हैं । इनकी जो इच्छा हो, इन्हें वह खिलाओ । इन्हें अब कोई तकलीफ़ नहीं है । राजरानी ने इनकी बीमारी को अपने संगीत के स्वर पर बिठाकर हवा में उड़ा दिया ।"

शीलकुमारी मुस्कराकर बोलीं, "डॉ० साहब ! अभी किसी ने भी

भोजन नहीं किया है। खाना सब रसोई में ज्यों-का-त्यों पड़ा है। मैं अभी रसोइए को जाकर कहती हूँ कि वह स्टोव जलाकर सब्जियाँ गर्म करडाले और खाना मेज पर लगा दे। आपने भी तो अभी कुछ नहीं खाया है। एक प्याली चाय से भला आपका इतना स्थूल शरीर कैसे चलेगा।"

डॉ० रशीद बदन के जरा भारी थे। शीलकुमारी के इस वाक्य को सुनकर खूब हँसे और हँसते-हँसते ही बोले, "मिसेज वीरसिंह! यह बात आपने खूब कही परंतु डॉ० बेचारे का क्या भोजन! डॉ० को भोजन करने ही कौन देता है? खाने पर बैठे और मरीज आ टपके। आप सच जानें कि मैं सुबह खाना खाने बैठा ही था कि ब्रिगेडियर साहब का तार पहुँच गया। बेगम लाख सिर पटकती रह गई लेकिन निवाला हलक में चला ही नहीं। फौरन ड्राइवर से गाड़ी मँगाई और जैपुर के लिए रवाना होगया। इस समय भूख ही नहीं लगी। मेजर साहब का बहाना करके, सच बात यह है, कि मैं अपने ही भोजन की बात आपसे कर रहा था।"

डॉ० रशीद की खुशमिजाज बातें सुनकर मेजर वीरसिंह को भी हँसी आगई। अन्य सब लोग तो खिलखिला कर हँस पड़े।

रसोइए ने साग-सब्जी गर्म करके भोजन मेज पर लगा दिया। सबने एक साथ बैठकर भोजन किया। अभी कुछ घंटे पूर्व जो इस घर का वातावरण विषादपूर्ण और एकदम शान्त था, वह इस समय कहकहों से गूंज रहा था।

आज बहुत दिन बाद इस कोठी को यह वातावरण नसीब हुआ था। मालूम देता था उस कोठी की जवानी फिर से लौटकर उसमें आभरी थी और वह इतनी अधिक थी कि चारों ओर को फूटी पड़ रही थी।

अब किसी के बदन में भी थकान का लेश नहीं था। मेजर वीरसिंह, जो अभी कुछ देर पूर्व मृतक के समान पलँग पर पड़े थे, इस समय मुस्करा रहे थे, हँस रहे थे और बातें छोंक रहे थे।

भोजन के पश्चात् बातों-ही-बातों में चीनी नर्त्तकी चीनी सार्जेन्ट और चीनी कमांडेन्ट का भी जिक्र आया। 'हिन्दी चीनी भाई-भाई' का भी मज़ाक उड़ाया गया। परन्तु साथ ही ब्रिगेडियर धीरसिंह ने चीनियों के प्रचार की दाद देते हुए कहा, "भाई कुछ भी सही। सच को झूठ और झूठ को सच कहकर उसका प्रचार करने भी चीनी प्रचारक बहुत दक्ष हैं। कोई व्यक्ति जरा भी चूक कर जाए उन्हें समझने में तो ज़बर-दस्त ग़लती खासकता है।"

उस रात्रि को सब लोग वहीं रहे।

इसरे दिन शीलकुमारी ने अपने पति को उनके मोर्चे पर चले जाने के पश्चात् किये कार्य का परिचय देते हुए कहा, "आपके चले जाने पर मैं एकदम निराश्रित-सी रह गई। मेरा मन बहुत खिन्न रहने लगा और हर काम से मेरी रुचि हट गई। सारा दिन एकान्त में पड़े-पड़े दुराशाओं और चिन्ताओं से मेरा जीवन घिरा रहने लगा।

एक दिन राजरानी ने मेरा सुभद्रादेवी से परिचय कराया। सुभद्रा-देवी आदर्श महिला हैं, जिनका सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र-हित में व्यतीत हुआ है! यह राजरानी के कन्या-विद्यालय की मुख्य अध्यापिका हैं। इस 'महिला-रक्षा-केन्द्र' की स्थापना इन्हीं ने की थी। इन्हीं ने मुझे इसका अध्यक्षा-पद सौंपकर मेरे जीवन को सार्थक किया।

'महिला-रक्षा-केन्द्र' में मुझे कार्य करने का अवसर मिला और मैंने अपना पूरा समय इसके कार्य में लगाया। आज यह संस्था देश-व्यापी है। भारत के प्रत्येक नगर में इसकी शाखाएँ हैं और विभिन्न दिशाओं में कार्य होरहा है।

राजरानी के सफल प्रयास से इसके अंतर्गत 'कला-केन्द्र' ने बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया है। हमारे निर्माण-केन्द्रों में भारतीय जवानों की आवश्यकता का महत्वपूर्ण उत्पादन-कार्य हो रहा है। हमारे साहित्य-स्वास्थ्य, बाल और प्रसार-केन्द्र बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त सैनिक-सहयोग-केन्द्रों ने इधर जो कार्य किया है वह और भी सराहनीय है। चीन-भारत सीमा के मृतक, लापता और चीन में बन्दी जवानों के परिवारों को इन केन्द्रों ने व्यापक सहायता पहुँचाई है।" इतना कहकर शीलकुमारी बोलीं, "इधर हमारे 'महिला-रक्षा-केन्द्र' ने

एक नवीन प्रवृति प्रारम्भ की है ।"

"वह क्या ?" ब्रिगेडियर धीरसिंह ने पूछा ।

शीलकुमारी मुस्करा कर बोलीं, "वह चीन से लौटकर आने वाले अपने जवानों का विष उतारने की प्रवृत्ति है । हमारे ये जवान चीनी विष की सरिता में गोते लगाकर आरहे हैं । हमें पता नहीं कि उस विष ने इन्हें किस-किस प्रकार प्रभावित किया होगा । ये लोग उस विष के प्रभाव से गल-सड़ कर अपना जीवन नष्ट न करदें, इस अभिप्राय से हमने इस प्रवृत्ति को प्रारम्भ किया है ।"

शीलकुमारी की यह बात सुनकर ब्रिगेडियर धीरसिंह हर्ष से उछल पड़े । बोले, "शीलकुमारी ! तुम सचमुच मेरे मन की रानी हो । तुमने मेरे मन और मस्तिष्क की भावना को मूर्त्तरूप प्रदान किया है । आज से तीन दिन पूर्व जब हम लोगों ने भारत-भूमि पर कदम रखा था तो ठीक यही बात मैंने अपने जवानों से कही थीं ।"

ब्रिगेडियर धीरसिंह के नेत्रों में नेत्र डालकर शीलकुमारी बोलीं, "आपके उन शब्दों को आकाशवाणी दिल्ली केन्द्र ने रिले किया था । उन्हें सुनकर मेरे हर्ष का पारावार नहीं रहा था । मैंने जब अपना यह विचार भारत सरकार के रक्षा-मन्त्री को लिखकर सुभद्रादेवी को सुनाया था तो उन्होंने आपके विषय में कहा था, "ब्रिगेडियर साहब फौलाद के बने हुए हैं । उनके बदन में चीनी विष प्रवेश नहीं कर सकता ।' यह सुनकर मेरा हृदय आनन्दविभोर होउठा था ।"

ये बातें चल ही रही थीं कि तभी पोस्टमेन ने एक पैकेट तथा कुछ पत्र लाकर दिए । ब्रिगेडियर धीरसिंह ने पत्रों पर दृष्टि डालकर देखा तो उनमें एक पत्र भारत सरकार के रक्षा-विभाग का था ।

पत्र में शीलकुमारी के इस सुझाव को महत्वपूर्ण बतलाकर इसकी प्रशंसा की गई थी और लिखा था कि चीन से वापस आने वाले जवानों की विस्तृत सूची प्रथक से भेजी जा रही है ।

ब्रिगेडियर धीरसिंह ने कुछ सोचकर पूछा, "तो शीलकुमारी ! तुमने हम लोगों का यह चीनी-विष उतारने का क्या कार्यक्रम निश्चित किया है ? क्या कोई नया इन्जेक्शन तय्यार कराया है जो हम लोगों को लगाया जाएगा ।"

शीलकुमारी मुस्करा कर बोलीं, "हमने सचमुच ऐसा इंजेक्शन तय्यार कराया है जो आप सब के अन्दर प्रविष्ठ चीनी-विष को नष्ट कर देगा। मैं यह स्वीकार करती हूँ कि बाहरी आकर्षण मनुष्य को कुपथ पर घसीट कर लेजा सकता है, परन्तु आत्मिकता और ममता में वह शक्ति विद्यमान है जो कुपथगामी को भी सुमार्ग पर लाने की अपने में क्षमता रखती हैं ।

राजरानी के इंजेक्शन ने, कल देखा नहीं आपने चीनी विष के प्रभाव को कैसे नष्ट कर दिया । माता की ममता, स्त्री का प्रेम, बहिन का प्यार, भाइयों का स्नेह इष्ट-मित्रों की सहानुभूति और सहयोग ही हमारे इंजेक्शन होंगे जो चीनी विष के प्रभाव को आमूलन करेंगे हमारी औषधि के सम्मुख यह विष ठहर नहीं सकना ।"

शीलकुमारी के उत्तर को सुनकर ब्रिगेडियर धीरसिंह आत्म विभोर हो उठे । वह स्नेहातिरेक में शीलकुमारी के दोनों कर-पुष्पों को अपने हाथों में लेकर उनके नेत्रों पर दृष्टि गड़ाते हुए बोले, "शीलकुमारी ! तुमने इस बीच जो अपनी विशेष योग्यता का परिचय दिया है उसकी तो मैंने कभी स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी । तुमने तो हमसे भी महत्वपूर्ण मोर्चा सँभाला हुआ है । तुम्हारे रक्षा-प्रयत्नों में योग-दान देखकर मैं कृत-कृत्य होगया । यह कहकर ब्रिगेडियर धीरसिंह का सीना गर्व से फूल उठा । उन्होंने ऊंचा मस्तक करके कहा, "आदर्श रमणी ! यह भारतीय सेनिक श्रद्धा से अपनी देवी पर अपना हृदय-पुष्प अर्पित कर रहा है। तुम्हारी ही यह धरोहर तुम्हें एक बार समर्पित कर रहा है क्योंकि इससे अधिक मूल्यवान अन्य कोई चीज़ मेरे पास तुम्हें देने के लिए नहीं है ।"

शीलकुमारी अपने पति के प्रेम-पूर्ण शब्द सुनकर मंत्र-मुग्ध होगई और वह मुग्धावस्था तब टूटी जब बाहर बरांडे में उन्हें कुछ पैरों के आने का शब्द सुनाई दिया।

शीलकुमारी ने खड़ी होकर देखा तो सुभद्रादेवी, राजरानी, मेजर वीरसिंह तथा डॉ० रशीद आरहे थे। वह उन्हें आदर-भाव से अन्दर लिवा लाई।

डॉ० रशीद अन्दर आकर बोले, "अच्छा भाई ब्रिगेडियर साहब! अब मैं आपसे आज्ञा चाहुंगा। मुझे चार बजे से पूर्व हर दशा में दिल्ली पहुँच जाना है। कल कह रहा था कि न कि हम डाक्टरों का तो हर समय ही मोर्चा लगा रहता है। चार बजे आज एक बहुत ही महत्वपूर्ण रोगी को देखना। वह रोगी कलकत्ता से आरहा है और बहुत गम्भीर दशा में है।"

कार्य की गम्भीरता को देखकर ब्रिगेडियर धीरसिंह नाँ नहीं कर सकते थे। बोले "मोर्चे पर जाने वाले सिपाही को रोका तो जा ही नहीं नहीं सकता ड० रशीद! परन्तु यह बतला दें कि अब मेजर वीरसिह पूर्ण स्वस्थ हैं ना।"

डॉ० रशीद हँसकर बोले, "सो तो आपके सम्मुख खड़े हैं। आप स्वयं देखलें। यदि इन्हें दुबारा फिट आये तो इनका डाक्टर आपके घर में मौजूद है।" इतना कहकर उन्होंने स्नेहपूर्ण दृष्टि से राजरानी की ओर देखा।

राजरानी ने लजाकर गर्दन नीची करली परन्तु उसके हृदय से आनंद की सरिता बह चली।

सब लोगों ने कोठी के बाहर खड़ी डा० रशीद की कार तक जाकर उन्हें सादर बिदा किया। सुभद्रादेवी आँखों में आँसू भरकर बोलीं, "डा० साहब आपने इस अभागिन पर जो कृपा की उसे मैं जीवन भर न भूलूंगी।"

डॉ० रशीद हँसकर बोले, "भाई हमने कुछ नहीं किया सुभद्रादेवी जी ! जो कुछ किया है वह राजरानी ने किया है। इसलिए आप अपनी कृपा का पिटारा राजरानी को ही सौंपें।" और फिर और भी जोर से हँसकर बोले, "बहिन सुभद्रादेवी ! इतने बड़े सौभाग्य की अधिकारिणी होकर भी यदि आप अपने को अभागिन कहेंगी तो फिर पता नहीं सौभाग्यवती कौन रहेगी हमारे देश में। आपका सौभाग्य आज भारतीय नारियों के लिए स्पर्धा की वस्तु है।"

ड्राइवर ने गाढ़ी स्टार्ट कर दी। गाड़ी चल पड़ी। सभी ने डॉ० नस्कार किया और उन्होंने भी अपने दोनों हाथ जोड़ दिए।

सब लोग अन्दर कोठी चले गए।

बहुत देर पहले इधर-उधर की बातें होती रहीं। फिर बातों की दिशा मेजर वीरसिंह और राजरानी के सम्बन्ध के विषय में मुड़ गई।

दोनों पक्ष पूर्ण रूप से सहमत थे। विवाह-संस्कार की तिथि निश्चित होगई।

राजरानी का आशा-कुसुम खिल गया।

शीलकुमारी ने मुस्कराकर कहा, "राजरानी ! अब तो तुम्हारे नाटक की उपनायिका की भूमिका भी सम्पन्न होगई। अब अपना नाटक खेल डालो। उसी मंच पर तुम्हारा और वीरसिंह का विवाह-संस्कार भी सम्पन्न भी होजाएगा।"

शीलकुमारी की वात सुनकर ब्रिगेडियर धीरसिंह मुस्कराकर आश्चर्य प्रकट करते हुए बोले, "यह कैसा नाटक है शीलकुमारी ?"

शीलकुमारी बोलीं, "हमारी राजरानी ने एक बहुत सुन्दर नाटक लिखा है। उस नाटक में आप सबको अपनी-अपनी भूमिका अभिनीत करनी होगी।"

"उस नाटक का शीर्षक क्या है ?" उत्सुकता वश ब्रिगेडिर धीरसिंह ने पूछा।

शीलकुमारी सहर्ष बोलीं, "उसका नाम है 'हिमालय की वेदी पर' यह नाटक हिमालय की वेदी पर अपने शीर्ष चढ़ने को जाने वाले वीरों के स्वागत में खेला जाएगा।

राजरानी ने जिस दिन आपके आने का समाचार रेडियो पर सुना था उसी रात्रि को यह नाटक लिखना प्रारम्भ किया था। उसके अंतिम चरण की रूपरेखा भी अब सामने आगई। नाटक के नायक और नायिका के चरित्र तो पूरे होचुके थे। केवल उपनायक की उपनायिका का भविष्य अनिश्चित था। सो आज वह भी पूरा होगया। अब नाटक के मंच पर उनका मिलन भी सम्पन्न हो जाएगा।"

ब्रिगेडियर धीरसिंह मुस्कराकर बोले, "नाटक का शीर्षक बहुत सुन्दर चुना है तुमने राजरानी! मैं तुम्हें इस रचना के लिए बधाई देता हूँ।"

भैय्या के मुख से अपने नाटक के शीर्षक की प्रशंसा सुनकर राजरानी के नेत्रों में प्रकाश उतर आया।

सुभद्रादेवी ने राजरानी को अपनी बाहुओं में भरकर कहा, "राज! इस नाटक की नायिका तुम्हारी भाभी नहीं तुम हो। तुम न होतीं तो यह नाटक पूर्ण कैसे होता? यह तुम्हारा ही तो चरित्र है जिसने इन दो परिवारों का मिलन सम्पन्न किया।"

शीलकुमारी मुस्कराकर बोलीं, "बहिन सुभद्रादेवी! आप अपनी पुत्र-वधू को नायिका बना लें। मुझे नायिका बनने का कोई प्रलोभन नहीं। मुझे नायिका बने तो कई वर्ष बीत चुके। अब तो राजरानी को ही नायिका बनना है।"

शीलकुमारी की इस मधुर को बात सुनकर सबके चहरे खिलउठे।

ब्रिगेडियर धीरसिंह मुस्कराकर बोले, "यह बात तुमने ठीक कही शीलकुमरी। नायक की भूमिका अभिनीत करने के लिए मेजर वीर सिंह उपयुक्त पात्र हैं। परन्तु खेद यही है कि इस शुभ अवसर पर समारोह में नृत्य करने के लिए वह बेचारी चीनी नर्त्तकी मंच पर नहीं आ

सकेगी। वह न आई तो आनन्द किरकिरा होजाएगा । चीनी सार्जेन्ट की भूमिका के लिए कोई उपयुक्त पात्र खोजना होगा ।"

भय्या की उपहासपूर्ण मधुर बात सुनकर मेजर वीरसिंह तो तनिक सकुचागए परन्तु राजरानी हँस कर बोली, "उसकी भय्या चिन्ता न करें। हमारे कला-केन्द्र ने मंच पर यदि हू-बहू वही चीनी नर्त्तकी प्रस्तुत न करदीं, तो क्या बात रही। चीनी सार्जेन्ट की भूमिका के लिए हमारे पास एक बहुत ही उपयुक्त पात्र है ।" और फिर शीलकुमारी की ओर मुख करके बोली, "भाभी जी ! किशोर कैसा रहेगा चीनी सार्जेन्ट की भूमिका के लिए। हमारे पहले नाटक 'विश्वासघात' में उसने कितनीसुन्दर भूमिका अभिनीत की थी ।"

शीलकुमारी बोलीं, "बहुत सुन्दर । वह तो कम्बख्त चेहरे-मोहरे से भी बना वनाया चीनी जान पड़ता हैं ।"

× × ×

'कला-केन्द्र' ने 'हिमालय की वेदी पर नाटक अभिनीत किया ।

उस अवसर पर पधारे भारत-रक्षा-मंत्री ने उसका शानदार उद्घाटन किया ।

मंच पर मेजर वीरसिंह और राजरानी का मिलन एक कलात्मक घटना रही जिसकी प्रशंसा से दर्शकों के मन खिल उठे। नाटक-भवन वायु-मण्डल प्रशंसा से भरउठा ।

रक्षा-मंत्री ने मुक्त कंठ से कहा, "आज हमारे राष्ट्र को ऐसे ही साहित्य और नाटकों की आवश्यकता है । जो देश को आगे बढ़ाने और अपनी सुरक्षा के लिए तैयार कर सकें। गले-सड़ प्रेम को घुन लगे नाटकों का प्रदर्शन मंच पर नहीं होना चाहिए ।

मैं नाटक के लेखक और दिग्दर्शक को उसकी इस कला-कृति के लिए बधाई देता हूँ ।"